साई के चरण कमलों में

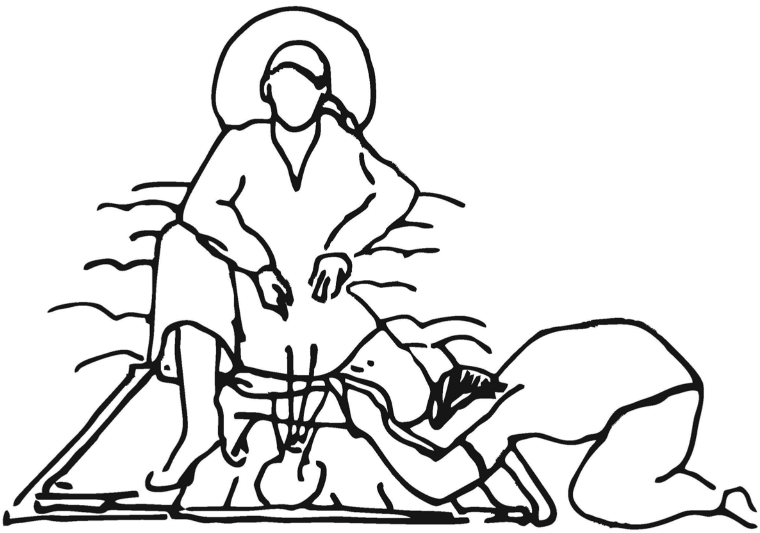

उनके विनम्र सेवक

डॉ.मोतीलाल गुप्ता

साई के चरण कमलों में

डॉ. मोतीलाल गुप्ता की जीवनी

लेखिका

(At the lotus feet of Sai)

नीति शेखर

हिंदी अनुवादिका

डॉ. नीरजा प्रसाद

PAPER TOWNS

PUBLISHERS

PAPER TOWNS
PUBLISHERS

First published by
Papertowns Publishers
72, Vishwanath Dham Colony,
Niwaru Road, Jhotwara,
Jaipur, 302012

साई के चरण कमलों में
Copyright © नीति शेखर, 2020

ISBN Print Book - 978-93-87131-88-0

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or transmitted in any form or by any means, electronic or mechanical, including photocopying, recording, or by an information storage and retrieval system—except by a reviewer who may quote brief passages in a review to be printed in a magazine, newspaper, or on the Web—without permission in writing from the copyright owner.

Although the author and publisher have made every effort to ensure the accuracy and completeness of information contained in this book, we assume no responsibility for errors, inaccuracies, omissions, or any inconsistencies herein. Any slights on people, places, or organizations are unintentional.

Printed in India

श्री सच्चिदानंद सद्‌गुरु साईनाथ महाराज को समर्पित

प्रस्तावना

“साई बाबा ने तुम्हें आई.आई.एम. (भारतीय प्रबंधन संस्थान) में दाखिले के लिये आशीर्वादित किया है”- ये बात डॉ.मोतीलाल गुप्ता ने एक शांत-चित्त मुस्कुराहट के साथ कही।

“परन्तु परिणाम तो घोषित हो गये गुरू जी, मेरा चयन नहीं हुआ”- मैंने उत्तर दिया।

“नहीं-नहीं, तुम्हारा दाखिला होगा, चिन्ता त्याग दो, बाबा कृपा करेंगे”।

वर्ष 2012 में मुझे संयुक्त प्रवेश परीक्षा (कैट) में बैठना था जो भारतीय प्रबंधन संस्थानों में प्रवेश के लिये दी जाती है। प्रवेश परीक्षा के लिये फार्म भरने के पहले ही गुरू जी से मुझे आई.आई.एम.में दाखिले का आशीर्वाद प्राप्त हो चुका था। यद्यपि आई.आई.एम.की प्रथम सूची में मेरा नाम शामिल नहीं था, मैंने एक द्वितीय श्रेणी के प्रबंधन संस्थान में दाख़िला लेने का निश्चय किया तथा गुरू जी से आशीर्वाद लेने पहुँची। उन्होंने प्रायः यह आश्वासन दिया कि मेरे प्रयास का परिणाम अवश्य मिलेगा। एक सप्ताह के बाद मुझे ई-मेल से सूचना मिली कि मेरा चयन आई.आई.एम. कोजिकोड की अंतिम निणार्यक सूची में हो गया है। जिस दिन मैं कोजिकोड पहुँची, उसी रात मैंने साई बाबा को स्वप्न में देखा और जैसे ही मैंने बाबा को दंडवत प्रणाम किया वैसे ही मैंने देखा कि बाबा की जगह गुरू जी मुझ पर मुस्कान बिखेर रहे हैं।

डॉ. मोतीलाल गुप्ता एक संत और लोकोपकारी समाजसेवी हैं। साई धाम, फरीदाबाद, एक गैर सरकारी, गैर मुनाफा वाला संस्थान है जो शिरडी साई बाबा टेम्पल सोसायटी के नाम से पंजीकृत है जिसके संस्थापक एवं अध्यक्ष हैं, डॉ. मोतीलाल गुप्ता। डॉ. गुप्ता का सपना है कि भारत के सभी बच्चों को उच्च कोटि की शिक्षा मिले। इसी सपने को पूरा

करने के लिये उन्होंने सन् 2004 में 'शिरडी साई बाबा स्कूल' की स्थापना की जहाँ गरीब, निराश्रित बच्चों को अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जाती है।

सन् 2013 में शिरडी साई बाबा स्कूल की द्वितीय शाखा- ग्राम निसवारा, जिला महोबा, उत्तर प्रदेश में स्थापित की गई ताकि सुदूर ग्रामीण क्षेत्र के अभावग्रस्त एवं वंचित बच्चों को भी निःशुल्क आधुनिक शिक्षा प्राप्त हो सके। सन् 2019 में इस संस्थान के अंतर्गत दो विद्यालय चल रहे हैं जहाँ 2000 गरीब एवं वंचित बच्चों को निःशुल्क उच्च कोटि की शिक्षा के साथ किताबें, कपड़े, पाठ्य सामग्री, भोजन, स्वास्थ्य सेवाएँ एवं भ्रमण की सुविधा भी निःशुल्क उपलब्ध कराई जाती है। शिरडी साई बाबा स्कूल, फरीदाबाद, सी.बी.एस.ई. बोर्ड द्वारा मान्यता प्राप्त है। 2019 एवं 2020 की दसवीं की सी.बी.एस.ई. बोर्ड परीक्षा में छात्रों ने 90 प्रतिशत से ज्यादा अंक प्राप्त किये तथा परिणाम 100 प्रतिशत रहा है। वर्ष 2020 में स्कूल को सी.बी.एस.ई.के द्वारा कक्षा 12 की भी मान्यता प्राप्त हो गई है। शिक्षा के अतिरिक्त इस एन.जी.ओ. की अन्य गतिविधियों में शामिल हैं -18 डिस्पेंसरियाँ, तकनीकि प्रशिक्षण जिसके द्वारा युवकों एवं युवतियों को रोज़गार मिले, गरीब कन्याओं का वस्त्र, बर्तन इत्यादि के उपहार सहित सामूहिक विवाह जो वर्ष में चार चरणों में आयोजित किया जाता है व सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में ज़रूरतमंदों में वस्त्र अथवा अन्य वस्तुओं का वितरण। ये सारी परियोजनाएं, 86 वर्षीय डॉ. मोतीलाल गुप्ता के सक्षम मार्गदर्शन के तहत की जाती है जिन्हें प्रेम से 'बाऊजी' कह कर भी संबोधित किया जाता है। इनकी कुशल प्रबंधन शैली, उत्साह तथा अथक परिश्रम अद्वितीय है।

साई धाम से मेरा प्रथम परिचय सन् 2011 में हुआ। इस विशाल स्कूल में भ्रमण करते हुए, मैंने बच्चों को लाल चेक की कमीज तथा खाखी पतलून में सलीके से तैयार पाया। मेरा अनुमान विश्वास में बदल गया कि मानवता की सेवा, वो भी इतने विशाल पैमाने पर किसी साधारण शख्सियत द्वारा संभव नहीं। यह कार्यभार तो स्वयं परमात्मा ने डॉ.

मोतीलाल गुप्ता को सौंपा है। यह जीवनी इसी महान विभूति को समर्पित है जिनके लिये मानव-सेवा ही पूजा है।

डॉ. मोतीलाल गुप्ता का जन्म 1934 में ब्रिटिश-शासित भारत के फ़रीदाबाद में एक व्यावसायिक परिवार में हुआ जो 'मेंहदीवाला' के नाम से जाने जाते थे। 1955 में इन्होंने बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय से विज्ञान में स्नातक की डिग्री हासिल की, साथ ही इन्हें स्वर्ण पदक से नवाजा गया। स्नातक की शिक्षा के उपरांत इन्होंने अपने पारिवारिक व्यवसाय में योगदान दिया। तदुपरांत 1963 में स्वयं का उपक्रम शुरू किया। 1960 में हमारी प्रिय मम्मी जी, स्व. श्रीमति कांता गुप्ता, डॉ. गुप्ता के सफल एवं आशीर्वादित जीवन की संगिनी बनीं, ठीक उसी तरह जिस तरह यमुना गंगा में जा मिलती है और जिनकी धारा हमें अन्न-जल प्रदान कर तृप्त करती हुई कलकल बहती है।

सन् 1986 की बात है जब मम्मी जी दर्शन के लिये लोदी रोड, नई दिल्ली स्थित साई बाबा के मंदिर जा रही थीं। उस दिन डॉ. गुप्ता को एक आंतरिक अनुभूति हुई कि उन्हें भी दर्शन के लिये मंदिर जाना चाहिये। जिस क्षण वे साई के समक्ष उपस्थित हुए, वे बाबा से एकाकार हो गये। तद्पश्चात डॉ. गुप्ता ने अपना व्यावसायिक जीवन त्याग दिया और यहाँ से शुरू हुई साई धाम की यात्रा। यह बाबा का चमत्कार ही था कि वे बेची हुई 15 एकड़ पारिवारिक ज़मीन वापस लेने में सफल हुए जिसमें से उन्होंने 3 एकड़ ज़मीन पर साई धाम की स्थापना की। उन्होंने बाबा की एक तस्वीर साई धाम के प्रांगण में पीपल के पेड़ के नीचे रख दी और उन्हें बाबा का परम आशीर्वाद मिला कि वे भूखों को अन्न, ग़रीबों को शिक्षा, रोज़गार, तथा तन-मन से पीड़ित बन्धुओं को लाभ प्रदान कर सकें। जिस प्रकार साई बाबा सदा 'अल्लाह मालिक' का जाप किया करते थे, वैसे ही डॉ. मोतीलाल गुप्ता अपने परोपकारी कार्यों को बाबा के चरणों में समर्पित कर देते हैं।

गुरू जी शिरडी साई बाबा के सबसे प्रिय भक्तों में से हैं। वो उस दयालु फ़क़ीर के प्रतिबिंब स्वरूप हैं जिनका परम उद्देश्य गरीबों की

सेवा तथा दीन-दुखियों का कष्ट-निवारण था। साई बाबा तथा गुरू जी का पारस्परिक संबंध श्रीराम-हनुमान तथा श्रीकृष्ण-अर्जुन सरीखा है। यहाँ भगवान और भक्त एकाकार हैं।

एक दिन लोधी रोड के साई मंदिर में बाबा के दर्शन के पश्चात् मुझे गुरू जी की जीवनी लिखने का विचार आया। जब मैंने गुरू जी से अपनी इच्छा प्रकट की तब उन्होंने आशीर्वाद सहित अपनी सहमति दे दी। इस विशाल कार्य को सम्पन्न करने के लिये मैंने अपना अहम साई चरणों में समर्पित कर दिया है। वस्तुतः बाबा ने ही अपने मार्गदर्शन से अपने प्रिय भक्त की जीवनी लिखवाई है।

साई बाबा की जीवनी, 'श्री साई सच्चरित्र' के रचियता, श्री गोविन्द रघुनाथ ढाभोलकर ने कहा है कि बाबा अपने भक्तों से कहा करते थे कि काम, लोभ, मोह, क्रोध, ईर्ष्या तथा अहंकार, ये छह विकार धर्म के पथ के बाधक हैं । डॉ. मोतीलाल गुप्ता की जीवनी छह अध्यायों में विभाजित है। हम जैसे-जैसे पुस्तक में आग बढ़ते हैं, हममें विवेक की वृद्धि होती है। इन छह अवगुणों को परास्त करने से बल एवं बुद्धि में वृद्धि होती है और व्यक्ति परोपकार तथा लोक-हित के कार्यों में सहज भाव से संलग्न हो जाता है। हमारे मन की अशुद्धियाँ छन जाती हैं तथा आत्मिक आनंद एवं शांति की अनुभूति होती है।

जिस प्रकार एक नादान बालक गिर-गिर कर चलना सीखता है उसी प्रकार से मेरा ये अभ्यास आपके समक्ष है । मैं पाठकों से हर प्रकार की त्रुटि के लिये क्षमाप्रार्थी हूँ। मैं साई बाबा को इस जीवनी के पाठकों को उनके स्नेह और कृपा के लिए आशीर्वादित करने की प्रार्थना करती हूँ।

साई की चरण धूलि,
गुरू जी की सेवा में,
नीति शेखर

विषय-सूची

1. डॉ. मोतीलाल गुप्ता : एक परिचय.......1
2. प्रारंभिक दौर का जीवन....... 18
3. 1986 : अलौकिक ज्योति का वर्ष....... 32
4. साई धाम की यात्रा....... 48
5. डॉ. मोतीलाल गुप्ता का व्यक्तित्व....... 78
6. श्री साई सच्चरित्र : एक अमूल्य निधि....... 94

आभास्वीकृति.......107
धन्यवाद ज्ञापन.......110
साईधाम की सफलता की कुछ कहानियाँ.......111
Photo Gallery.......119

अध्याय 1

डॉ. मोतीलाल गुप्ता : एक परिचय

"प्राणी भिन्न प्रकार के हो सकते हैं , कुछ बोल पाते हैं , कुछ मूक होते हैं, परन्तु सभी की भूख एक जैसी होती है। इस बात को जानिये कि जो भूखों को भोजन कराता है, वो असल में मेरी सेवा करता है, वह भोजन मुझे प्राप्त होता है। इसे सत्य समझें"

~ साई बाबा

"प्रत्येक मानव अपने सामर्थ्य के अनुसार सेवा करता है", गुरूजी ने कहा। "जिसके पास कोई साधन नहीं है, वह एक गड्ढा खोद कर, उसमें एक टूटे मटके में पक्षियों के पीने के लिये पानी रख सकता है। यह भी एक प्रकार की सेवा है। अपने हृदय में सेवा को धारण करो, भगवान साई तुम्हारी सेवा पारितोषिक करेंगे"।

हम डॉ.मोतीलाल गुप्ता के निवास, ग्रेटर कैलाश-2 से साई धाम, फरीदाबाद के लिये निकल पड़े। मेहरौली-बदरपुर पथ के मोड़ से कुछ फरलांग की दूरी पर गाय तथा बंदर सड़क के पास हमेशा दिख जाते हैं। ड्राइवर ने गाड़ी को किनारे खड़ा किया। गाड़ी में साई सच्चरित्र की सी.डी. बज रही थी। हमें उत्सुकता हुई कि गाड़ी क्यों रोक दी गयी है। ऐसा लग रहा था कि यह नित्य का कार्यक्रम है। भोला भैया ने गाड़ी के पीछे से एक डोलची निकाली, जो भीगे हुए चने से भरी हुई थी, और चनों को ज़मीन पर बिखेर दिया। गाड़ी देखते ही सारे पशु-पक्षी वहां इकठ्ठा होने लगे। ऐसा लगा जैसे उन्हें ज्ञात था कि यह उनके लिये प्रोटीन-युक्त भोजन के सेवन का समय है।

डॉ.मोतीलाल गुप्ता का अभिप्राय है यह कि कोई भी पशु, पक्षी या मानव भूखा न रहे तथा उनकी भूख मिटाने का सदा प्रयास किया जाए।

पैसे या वस्तुओं का दान जाँच-परख कर करना चाहिए परन्तु अन्न दान बिना भेद भाव के करना उचित है। प्रकृति की प्रेम की परिभाषा माता तथा उसके संतान के समतुल्य है। माता को उसके शिशु से उसका पालन-पोषण करने की दक्षता ही जोड़े रखती है। एक माता अपने शिशु को स्तनपान कराती है, एक शेरनी अपने बच्चे के लिये शिकार करती है, एक माता पक्षी अपने चूजों के लिये दूर-दूर से दाना इकट्ठा करके घोंसले में ले जाती है, इन सभी माताओं का उद्देश्य अपने बच्चों की भूख मिटाना है जिससे उन्हें पोषण मिलता है, जीवन-शक्ति मिलती है और वे सुरक्षित महसूस करते हैं। यह उपक्रम माता और उसके बच्चे के बीच एक मजबूत कड़ी का आधार बनता है। अपितु एक परोपकारी व्यक्ति का प्रेम माता के प्रेम से भी अधिक विशाल है। एक माता का प्रेम तो उसकी अपनी संतान तक सीमित है, परन्तु डॉ. गुप्ता जी का प्रेम और लगन सबके लिये समान रूप से है।

साई बाबा की शिक्षा को चरितार्थ करते हुए, साई धाम प्रति दिन कुष्ठ रोगियों को चावल-दाल का भोजन कराता है। शिरडी साई बाबा स्कूल के करीब 2000 बच्चों को, जो गरीब परिवार से हैं, उन्हें भी स्वास्थ्यवर्द्धक भोजन कराया जाता है। शिरडी साई बाबा टैम्पल सोसायाटी के सभी कर्मचारियों का भोजन निःशुल्क है। कोई भी आगंतुक साई धाम से दोपहर की खिचड़ी का भोग या खीर खाए बगैर नहीं जाता। गुरू जी के जितने अतिथि आते हैं, उन्हें उनके साथ भोजन करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। गुरू जी सभी अतिथियों का विशेष ध्यान रखते हैं। छोटी बातों का ध्यान जैसे अतिथि ने खीर खाई या नहीं, चपाती में घी लगा है या नहीं, इन सब बातों का ध्यान गुरू जी रखते है और अतिथि भी संतुष्ट होकर भोजन (प्रसाद) ग्रहण करते हैं। गुरू जी के सानिध्य में किया हुआ भोजन सबको अपार आनंद देता है।

डॉ.मोतीलाल गुप्ता का जीवन हम सबको प्रेरणा देता है। वह किसी भी तरह का प्रवचन या नैतिक शिक्षा नहीं देते हैं, अपितु अपने सत्कर्म से प्रेरणा देते हैं । मेरे विचार से डॉ. मोतीलाल गुप्ता का जीवन परिचय पढ़ने

से हमें ऐसी प्रेरणा मिलेगी जो हमारे जीवन के लिये बहुमूल्य और आनंददायक होगी। इसलिये मैंने निश्चय किया कि मुझे गुरु जी की जीवन गाथा लिपिबद्ध करना है ताकि वह जन-मानस के लिए एक आदर्श बन सकें। मुझे आशा है कि साई धाम में गुरू जी के सानिध्य का जो आनंद मुझे प्राप्त हुआ वह मेरे पाठक भी अनुभव कर सकेंगे। मैं पाठकगण से उन परिस्थितियों का भी उल्लेख करना चाहूँगी जिसके कारण मुझे इस महान परोपकारी व्यक्तित्व के दिव्य जीवन के बारे में लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।

साई धाम का प्रथम दौरा मैंने सन 2011 में किया। गुरू जी ने हमारे परिवार के सभी सदस्यों को साई सच्चरित्र की प्रतियाँ भेंट कीं। साई सच्चरित्र में साई बाबा की जीवन-लीला है, जिसे श्री गोविंद रघुनाथ ढाभोलकर, जो हेमाडपंत के नाम से भी जाने जाते हैं, ने लिखा है। मैं इस पुस्तक का नित्य ही पठन करती रही हूँ। बाबा के उपदेश और जीवन दर्शन को आदर्श मानकर गुरू जी अपना कर्त्तव्य निर्वहन करते हैं। साई सच्चरित्र पठन व परायण से सर्वोच्च ज्ञान की प्राप्त सरल हो जाती है। सच्चरित्र भेंट कर गुरू जी ने मेरे जीवन को एक नई दिशा दे दी।

अगले वर्ष 2012 में मुझे कैट की परीक्षा, जिसके द्वारा प्रबंधन संस्थानों में दाखिला मिलता है, में उपस्थित होना था। “साई बाबा ने तुम्हें आई. आई. एम. में दाखिले का आशीर्वाद दिया है”, गुरू जी ने यह निर्णय मेरे फार्म भरने से पहले ही दे दिया था। बाबा की दया से कैट परीक्षा में मैंने 99.28 अंक (परसेंटाइल) हासिल किये। मौखिक परीक्षा के परिणाम अप्रैल-मई 2013 में घोषित हुये परन्तु किसी भी आई.आई.एम. की सूची में मेरा नाम नहीं था।

आई.आई.एम. कलकत्ता की मौखिक परीक्षा में मुझसे ‘ऑपरेशन रिसर्च’ के विषय में पूछा गया। बिट्स (BITS) पिलानी में स्नातक का एक विषय ‘ऑपरेशन रिसर्च’ भी था जिसमें मुझे ‘डी’ ग्रेड मिला था। इसलिये मैने अनुमान लगा लिया था कि मौखिक परीक्षा का परिणाम क्या होगा।

आई.आई.एम. लखनऊ की मौखिक परीक्षा में मुझसे एन.जी.ओ. के बारे में पूछा गया जिसमें मेरी रूचि का मैंने उल्लेख किया था। कुछ प्रबुद्ध लोगों ने मुझे समझाया कि एन.जी.ओ. की जगह मुझे 'सोशल इन्टरप्राईज' का सम्बोधन देना था। मैं 'एन.जी.ओ.' शब्द के प्रति दुराग्रह का कारण नहीं समझ पाई क्योंकि मेरे गुरु जी, मेरे आदर्श, एक 'एन.जी.ओ.' के ही तो संस्थापक हैं। अब आई.आई.एम. कोजिकोड की बारी थी। संयोग से मैं मौखिक परीक्षा में बैठने वाली सबसे अंतिम परीक्षार्थी थी क्योंकि इसके बाद भोजन का अंतराल था। मेरी बारी आने तक प्रोफेसर करीब दसों परीक्षार्थियों से व्यवसाय तथा 'करंट एफेयर' के बारे में पूछ चुके थे। इसलिये अब वे कुछ अन्य विषय पर चर्चा करने का विचार कर रहे थे। उन्होंने मेरे ग्रेजुएशन की विषय सूची को देख कर कहा, "भगवत् गीता तुम्हारा इलेक्टीव विषय रहा है, हमें उसके बारे में बताओ कि तुमने क्या सीखा?" मैंने उत्तर दे दिया। आगे मैंने आई.आई.एम. कलकत्ता या आई.आई.एम. कोजिकोड के परीक्षा फल की जानकरी नहीं ली। मेरे माता-पिता ने चौथे लिस्ट तक मेरे नाम को ढूंढा पर निराशा ही हाथ लगी। आई.आई.एम. लखनऊ ने तो पहले ही एन.जी.ओ. की मेरी राय को नकार दिया था।

मैंने एक द्वितीय श्रेणी के प्रबंधन संस्थान में दाख़िला लेने का निश्चय किया और गुरू जी से आशीर्वाद लेने पहुँची। "नहीं-नहीं तुम्हें दाख़िला मिल जायेगा। तुम्हारी सच्ची मेहनत का फल अवश्य मिलेगा"। गुरू जी ने दृढ़ता से कहा। मैंने उनके कथन पर विश्वास तो किया परन्तु साथ में यह भी लगा कि कोई चमत्कार ही मुझे आई.आई.एम. में दाखिला दिला सकता है। अन्ततः वह चमत्कार हुआ।

एक सप्ताह बाद मेरे पिता जी को एक फ़ोन आया कि मेरा चयन आई.आई.एम. कोजीकोड की अंतिम सूची में हो गया है। छात्रों को फोन से इसलिये सूचित किया जा रहा था क्योंकि वे जुलाई तक परीक्षा फल देखना छोड़ देते हैं तथा अन्य किसी संस्थान में दाखिला ले लेते हैं।

मैंने अपना सामान बाँधा और कोजिकोड पहुँच गयी। उस रात मैंने एक स्वप्न देखा कि साई बाबा मेरे सामने खड़े हैं और आशीर्वाद दे रहे हैं। "तुम्हारी मेहनत का फल तुम्हें मिला है"। बाबा अपने सफेद कफनी में नंगे पाँव खड़े थे। मैंने बाबा के चरणों में दंडवत किया परन्तु मुझे अनुभव हुआ कि ये चरण तो गुरू जी के हैं, बाबा के नहीं। गुरू जी के पैरों में उनके काले रंग के जूते थे तथा उन्होंने अपनी सफारी सूट पहन रखी थी। वे मुझे देख कर मुस्कुरा रहे थे। मैं नींद से जग गई। सुबह के छह बज रहे थे। स्वप्न इतना यर्थाथ था कि विश्वास ही नहीं हो रहा था कि मैंने स्वप्न देखा है। मैंने शीघ्र ही गुरू जी से फोन पर संपर्क किया। गुरूजी ने मुझसे पूछा कि मैं कहाँ हूँ? मैंने गुरूजी को अश्रपूरित नेत्रों से प्रार्थना अर्पित की।

इस घटना के पश्चात् मुझे दृढ़ विश्वास हो गया कि साई बाबा और गुरू जी में एक तारतम्यता है। बाबा अपने प्रिय शिष्य को बहुत प्रेम करते हैं क्योंकि वे मानवता की सेवा बिना किसी भेद-भाव के करते हैं। वे धर्म, जाति या लिंग में भेदभाव नहीं करते हैं। यह अलौकिक संबंध हमारी समझ से परे है क्योंकि हम किसी भी घटना को तर्क के दायरे से समझना चाहते हैं। परन्तु यह सत्य है कि जहाँ विज्ञान की सीमा का अंत होता है, वहीं से अध्यात्म प्रारंभ होता है।

मैंने अपना अहंकार साई चरणों में समर्पित कर दिया और उनसे निवेदन किया कि मेरे शरीर, मन तथा आत्मा को मार्गदर्शन देने की कृपा करें। साई सच्चरित्र पढ़ने से मेरे कमजोर मन को बल मिलता है। मुझे ज्ञान की प्राप्ति होती है जिससे मैं अपने कर्मों का निर्वहण कर पाती हूँ। स्वयं साई बाबा ने अपने प्रिय शिष्य और मेरे गुरू डॉ.मोतीलाल गुप्ता का जीवन परिचय लिखने का यह पुनीत कार्य मुझे सौंपा है।

इस जीवन परिचय के प्रारंभ होने के नौ महीने पहले मैंने 'ज्ञानेश्वरी' का पठन किया था। इस पुस्तक का उल्लेख साई सच्चरित्र में किया गया है। 12वीं शताब्दी के महाराष्ट्र के महान संत ज्ञानेश्वर द्वारा भगवत् गीता

का टीका सहित अनुवाद किया गया था। मैंने इस पुस्तक का अंग्रेजी अनुवाद मंगवाया परन्तु यह पुस्तक छह महीने तक मेरे दराज़ में पड़ी रही। कुछ ऐसा संयोग बना कि चाह कर भी मैं इस पुस्तक को नहीं पढ सकी। मेरे साथ कुछ शारीरिक दुर्घटना घटी तथा मेरे पेशेवर जीवन से जुड़ी कुछ विपरीत परिस्थितियों ने मुझे अवसाद-ग्रस्त कर दिया। साई बाबा के प्रति मेरी प्रार्थना रंग लायी और मैंने ज्ञानेश्वरी का पठन शुरू कर दिया। जब से मैंने ज्ञानेश्वरी का प्रथम पाठ पढ़ा, तब से मेरे मन को असीम शांति मिली और यह शांति स्थाई हो गई। मेरी समस्याएँ धीरे-धीरे जाती रहीं।

जब मेरे पाठ की प्रथम आवृत्ति पूरी हुई तो मुझे लगा कि मेरे विचार में कुछ विशेष परिवर्तन हो रहा है। ज्ञानेश्वरी का पठन समाप्त होने के दूसरे ही दिन मुझे गुरू जी से मुलाकात करने जाना था। साई धाम जाने के कुछ दिनों पूर्व से मुझे मसूड़ों के सूजन की वजह से दर्द का आभास हो रहा था। मुझे और मेरे पति को अगले दिन आई.आई.टी. कानपुर लौट जाना था। जब मैं गुरू जी के समक्ष उपस्थित हुई तो उन्होंने ढांढस बंधाया, "चिन्ता क्यों करती हो, यह दवा मैंने दाँत-दर्द के लिये जामुन के पत्तों से बनाई है, इसे लगाओ और स्वस्थ हो जाओ"। इस दवा से मुझे बहुत आराम पहुँचा परन्तु सूजन की वजह से कुछ संक्रमण हो गया था इसलिये मुझे दंत-चिकित्सक को दिखलाना अनिवार्य हो गया। गुरू जी मुझे दंत-चिकित्सक दम्पति, डॉ. अश्वनि प्रुथी एवं डॉ. सुजाता चड्डॉ प्रुथी के पास ले गए। ये चिकित्सक दंपति साई धाम को निःशुल्क सेवा प्रदान करते हैं। क्लीनिक जाते समय गुरू जी ने सुझाव दिया कि अगर दांत को उखड़वाना पड़े तो उसे निकलवा लेना चाहिए। मैंने सोचा कि अगर मसूड़ों में सूजन है तो दाँत को निकलवाने की क्या ज़रुरत? अन्ततः डॉ. प्रुथी ने बतलाया कि अक्लदाँत के टेढे-मेढे होने की वजह से संक्रमण हो रहा है इसलिये दाँत निकलवाना ही उचित है। दाँत का उखड़वाना तथा उसका प्राथमिक उपचार अनिवार्य हो गया। डॉक्टर ने मुझ से पूछा- "तुम्हारा क्या प्रोग्राम है? तुम कब तक यहाँ हो?" गुरू जी ने मेरी तरफ से

जवाब दिया, "ये मेरे पास रह रही है, जब तक ये बिल्कुल स्वस्थ नहीं हो जाती, कृपया इसका उपचार करें"।

इसके बाद के पाँच दिन बिल्कुल चमत्कारी थे जिसे हम जीवन-पर्यन्त याद रखेंगे। वो हमारे लिये बहुत बहुमूल्य दिन थे। हमें अनुमान नहीं था कि हम गुरू जी के यहाँ अतिथि बन कर रहेंगे। उनका अतिथि-सत्कार हमारी सोच से परे था। उनके जैसा महान व्यक्ति, जो लाखों लोगों की देख-भाल करता है, उन्होंने मेरी उसी तरह परवाह की जिस तरह एक चिड़िया अपने चूजों की कुशलता की परवाह करती है। आने वाले दिनों में गुरू जी मुझे स्वयं क्लिनिक ले कर जाते तथा ले आते और हमें स्वादिष्ट भोजन कराते। उनका प्रेम विशुद्ध तथा निःस्वार्थ है।

दूसरे दिन जब मैं बाबा के दर्शन करने लोधी रोड स्थित साई मन्दिर जा रही थी तो मेरे मन में एक विचार आया कि मैं अपने आराध्य, डॉ. मोतीलाल गुप्ता जी का जीवन-परिचय लिखूँ। इस जगत को भी जानकारी होनी चाहिए कि यह महामानव कैसे मानवता की सेवा, बिना किसी फल की आकांक्षा के करते आ रहे हैं। इनकी जीवनी लोक-समाज के लिये प्रेरणा का स्रोत हो सकती है। यह महान संत जो साई बाबा से एकाकार है, उनके लिये एक सम्मान सूचक अभिव्यक्ति होगी। यह मेरा सौभाग्य है कि विधाता ने मुझे इस आध्यात्मिक प्रयोजन के लिये चुना है। ये जीवनी उन सभी लोगों के लिये है जो सच्चे पथ पर चलकर मानवता की सेवा में ही खुशी ढूँढ़ते हैं। वर्तमान समय की व्यस्त दिनचर्या में ऐसा आदर्श जीवन दुर्लभ है।

मैंने विनम्रता से गुरू जी से उनके जीवन परिचय लिखने की सहमति मांगी। उन्होंने मुस्कुरा कर सहमति आशीर्वाद सहित दे दी। मेरी सेवा स्वीकार हुई । "बाबा तुम्हारी मदद करेंगे"- उन्होंने इस कथन से मेरी सेवा को पवित्र बना दिया।

गुरू जी परोपकारी कार्यों में इस तरह मग्न हैं जैसे संत ज्ञानेश्वर भगवत् गीता के विवेचन में लीन थे। गुरू जी अपने श्रेष्ठ कर्म का तनिक

भी मान नहीं देते वैसे ही जैसे एक नवजात शिशु को उसके हाथ-पैर चलाने का अहसास नहीं होता। गुरू जी का तो यह सहज सरल स्वभाव है कि वे जरूरतमंदों की सदा सहायता करते हैं। उन्हें अपने मान-सम्मान अथवा अपनी आलोचना से कोई फर्क नहीं पड़ता है। साई धाम की समस्त गतिविधियों को वे बहुत धैर्य से निभाते हैं। यह सब करते हुए उनमें सदा निष्काम भाव परिलक्षित होता है। गुरू जी का व्यवहार एक आम आदमी सा प्रतीत होता है। एक ओर वे 100 किलो तरबूजों का मोल-भाव करते हैं तो दूसरे ही क्षण वे तीन अनाथ बच्चों के संरक्षक बन जाते हैं और उन्हें एक शिक्षक की देखभाल में सौंप देते हैं।

आम आदमी कोई भी परोपकार अपनी संतुष्टि के लिये करता है। 150 किलो की गाय को हम एक छोटी रोटी का टुकड़ा खिला देते हैं, किसी भिक्षुक को एक रुपया दे देते हैं, दान में हम फटे-पुराने कपड़े देते हैं, बासी या जो खाने लायक पदार्थ नहीं है उसे हम अपने कामगारों को देकर हम गर्व महसूस करते हैं। हमें लगता है कि हमने कितना बड़ा परोपकार किया है। इस तरह का दान देने वाले को संतुष्टि दे सकता है परन्तु लेने वाले की दशा हम समझने की कोशिश नहीं करते। किंचित एक गाय को मात्र 40 कैलोरी की एक रोटी देकर हम उस बड़े पशु को उपयुक्त पोषण नहीं दे पाते हैं। उस गाय को एक रोटी खिला कर उसकी भूख हम और अधिक जगा देते हैं। जो एक रुपया हमने भिक्षुक को दिया, उससे वह गुटका के सिवा कुछ नहीं खरीद पाता है। अगर कपड़े हमारे लिये फटे-पुराने हैं तो लेने वाले के लिये भी किसी काम के नहीं हैं। अगर हमने अपने कामगारों को बासी भोजन बाँटा तो हमने उन्हें और अधिक मुसीबत में डाल दिया। अगर उस भोजन को खाने से उसका पेट खराब हुआ तो उसे दवा का अतिरिक्त खर्च ही बढ़ेगा।

दूसरी तरफ, डॉ.मोतीलाल गुप्ता का परोपकारी कार्य देने और लेने वाले, दोनों को संतोष प्रदान करता है। गुरू जी बड़ी दृढ़ता से शिरडी साई बाबा स्कूल के छात्रों को आवश्यक सुविधाएँ मुहैया कराते हैं ताकि वे सभी सफल पेशेवर बन पाएं। "इस प्रकार हम एक-एक करके गरीब

परिवारों को निर्धनता से मुक्ति दिला सकेंगे"- ये गुरू जी का कथन है। यहाँ का समग्र वैज्ञानिक शिक्षा तंत्र जिसमें नैतिक शिक्षा भी निहित है, इन गरीब बच्चों को प्रोत्साहन देता है। ये बच्चे, जो गरीब-वंचित वर्ग से आते हैं, यहाँ आकर बहुत तन्मयता से पढाई करते हैं तथा परोपकार भी करना सीखते हैं। यह सत्य है कि हमें परोपकार की शिक्षा सर्वप्रथम अपने घर से मिलती है। गुरु जी कहते हैं- "मैं चाहता हूँ कि कोई छात्र आई.ए.एस. अफ़सर बने, कोई इंजीनियर तो कोई डॉक्टर बने। यह हमारे समाज के विकास के लिये एक महत्त्वपूर्ण कदम होगा"। इन्शा-अल्ल्हा ऐसा अवश्य होगा।

डॉ. गुप्ता सामूहिक विवाह कार्यक्रम वर्ष में चार बार आयोजित करते हैं। सन् 2007 से अब तक 1050 जोड़े, जो गरीब परिवारों से हैं, साई धाम मंदिर में परिणय-सूत्र में बँधे हैं। दहेज की कुप्रथा के कारण गरीब परिवार क़र्ज़ लेते हैं और उसे चुकाने के लिये दिन-रात कड़ी मेहनत करते हैं। अपना सब कुछ बेच कर भी वो क़र्ज़ नहीं चुका पाते। यह सामूहिक विवाह कार्यक्रम इस उद्देश्य से आयोजित किया जाता है कि गरीब कन्याओं के विवाह करने के बोझ को समाप्त किया जा सके। इस प्रकार वे अपनी कमाई को बेटियों के दहेज की बजाय उनकी शिक्षा पर व्यय कर सकते हैं। सामूहिक विवाह कार्यक्रम की जानकारी तथा प्रोत्साहन के लिये साई धाम के स्वयं-सेवकों को गाँवों तथा झुग्गियों में भेजा जाता है। नवल दंपतियों को नई गृहस्थी बसाने के लिये सभी जरूरी घरेलू सामान उपलब्ध कराये जाते हैं। प्रेशर कुकर, बर्तन, चूल्हा, कम्बल, साईकिल, कपड़े, स्वच्छता उपयोग हेतु सामग्री तथा खिलौने भी दिये जाते हैं। "प्रत्येक आयोजन में कोशिश करता हूँ कि एक और नई वस्तु को सूची में शामिल किया जाए"- ये कथन है साई धाम के अध्यक्ष महोदय का। केवल यही नहीं बल्कि डॉ. गुप्ता ने समृद्ध लोगों से अपील की है कि वे अपने घरों के विवाह समारोह में होने वाले व्यर्थ खर्च घटाएँ। "शुरू के दौर में विवाह का संदेश मौखिक था, उसके बाद हाथ से लिखित चिट्ठी द्वारा हुआ फिर विवाह के कार्ड दिये जाने लगे और अब तो निमंत्रण महंगे

तोहफों के डिब्बों के बिना नहीं दिये जाते", गुरू जी ने जोर देकर कहा। गुरू जी के इस सुझाव को मानते हुए एक सभ्य व्यवसायी ने अपने बेटे का वैवाहिक निमंत्रण पत्र बहुत साधारण छपवाया तथा इससे बची हुई राशि से सामूहिक विवाह कार्यक्रम में 25 गरीब कन्याओं के विवाह का पूर्ण खर्च उठाया।

नवजात कन्याओं की असामयिक मृत्यु व बालिकाओं को भेद भाव से बचाने के लिये उन्हें शिक्षित करना तथा उन्हें जिम्मेदार नागरिक बनाना, पेशेवर बनाना डॉ. गुप्ता जी का ध्येय है। एक शिक्षित माता ही अपनी आने वाली पीढ़ी को सार्थक ज्ञान दे सकती है। शिरडी साई बाबा स्कूल में पढ़ने वाले शिक्षार्थियों में 50 प्रतिशत छात्राएँ हैं। युवतियों को कई प्रकार के कौशल प्रशिक्षण भी दिये जाते हैं, जैसे- सिलाई, परिधान डिजाईन करना तथा ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण जिससे आगे चलकर उनका रोजगार सुनिश्चित हो जाए। गुरू जी की दूरदर्शिता तथा कुशल प्रबंधन के परिणाम स्वरूप साई धाम के कौशल प्रशिक्षण केन्द्रों और परिधान बनाने वाली कंपनियों से प्रशिक्षुओं की नौकरी के लिये करार किया गया है। युवतियों को आर्थिक तौर से स्वतंत्र बनाने के लिए यह एक अनूठा कदम है, खासकर जब उनके घर के युवक नशा करने में कमाई व्यर्थ करते रहते हैं।

श्री हेमाडपंत साई सच्चरित्र में लिखते हैं कि साई बाबा जब शिरडी में रहने लगे तब वे लोगों की चिकित्सा भी किया करते थे। नेत्रहीन को आँखों की रौशनी मिली तथा विकलांग चलने लग पड़े। इस गरीब फकीर का यह शौर्य विख्यात था।

गुरू जी भी साई बाबा के प्रतिबिम्ब मात्र होने के नाते उनसे अलग नहीं हैं। उनका होमियोपैथिक दवाओं के प्रति रुझान उनके विश्वविद्यालय के दिनों से है जब वे बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के छात्र थे। "मैंने केमिस्ट्री की पढ़ाई इंटर तक की। स्नातक में मैंने भौतिकी, गणित तथा स्टेटिस्टिक की पढ़ाई की। अपितु अपने खाली समय में मैं होमियोपैथी

पढ़ता था। मेरे साथी मुझे 'मिस्टर डॉक्टर' कहकर बुलाते थे। जब वे बीमार पड़ते तो मैं उनकी दवा करता और वे ठीक हो जाते", गुरू जी ने हंसते हुए ये बात कही। ये बात तब की है, जब गुरु जी को यह आत्मबोध नहीं हुआ था कि वे बाबा के परम भक्त हैं। जब 1986 में साई धाम की स्थापना हुई तब पहले कार्यक्रम के अंतर्गत डॉ. गुप्ता ने डिस्पेंसरी की स्थापना की। वह रोगियों का उपचार करते तथा दवाईयाँ उनके घर भिजवाते, वह भी मुफ्त। यह कार्य वे आज तक निर्वहन कर रहे हैं। लाखों लोगों की तरह मुझे भी उन दवाइयों से लाभ पहुँचा है। उनकी 18 डिस्पेंसरियाँ बहुत सफलता पूर्वक कार्य कर रही हैं। इस होमियोपैथिक क्लीनिक के अलावा कई और चिकित्सा विशेषज्ञ जैसे- स्त्री-रोग विशेषज्ञ, दंत-रोग विशेषज्ञ, नेत्र-रोग विशेषज्ञ सप्ताह में एक से दो बार साई धाम में गरीबों और वंचितों का उपचार करने आते हैं।

2011 से मैं गुरू जी की ई-मेल सूची में शामिल हूँ। एक बार मैं सभी ई-मेलों की जाँच कर रही थी जिसमें विगत नौ वर्षों का साई धाम के वार्षिक लेखा-जोखा का आंकलन था। ई-मेल द्वारा मुझे शिरडी साई बाबा स्कूल का वार्षिक आर्थिक लेन-देन, सामूहिक विवाह कार्यक्रम की जानकारी के अलावा साई धाम द्वारा विभिन्न कार्यक्रम की भी जानकारी मिली जो लोगों के जीवन में आनंद, शांति तथा खुशी प्रदान करती है। योग शिविर, कवि सम्मेलन, भजन भंडारा, स्वत्रंता दिवस समारोह, विकलांगों को कृत्रिम अंग प्रदान करना, स्थानीय सरकार के साथ मिलकर जनता दरबार आयोजित करना, काउंसेलिंग, मधुमेह रोगियों के लिये शिविर, साई धाम ज्ञान पुरस्कार तथा ऐसे कई कार्यक्रम साई धाम में आयोजित होते रहते हैं।

अप्रैल 2017 में वाई.एस. विश्वविद्यालय, फ्लोरिडॉ, अमेरिका ने साई धाम के संस्थापक तथा अध्यक्ष मोतीलाल गुप्ता जी के परोपकारी कार्यों को देखते हुए उन्हें डॉक्टरेट की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

3 मार्च 2018 को प्रातः काल 3:20 बजे हमें ई मेल से दुःखद सूचना मिली कि आदरणीय मम्मी जी का प्रातः 12:15 बजे देहांत हो गया है।

उस रात्रि मम्मी जी ने गुरु जी का खाना परोसा, अगले दिन होने वाले भजन कार्यक्रम में निमंत्रण के लिये कई अतिथियों को फोन कॉल किये और 11:30 बजे सोने गईं। किसी भी प्रकार की बीमारी नहीं होते हुए भी मम्मी जी को थोड़ी अस्वस्थता लगी और अस्पताल जाने के क्रम में वह परलोक सिधार गईं ।

श्रीमती कान्ता गुप्ता तथा श्री मोतीलाल गुप्ता जी का एक अलौकिक प्रेम संबंध था। जीवन के हर मोड़ पर उन्होंने अपने पति का साथ दिया, चाहे वह घर हो या व्यवसाय या फिर साई धाम। उनको परिणय सूत्र में बांधने वाले साई बाबा स्वयं थे। कुछ ही हफ्तों बाद 22 अप्रैल 2018 को द्वितीय सामूहिक वैवाहिक समारोह अपने निर्धारित समय पर आयोजित किया गया। मम्मी जी की भी यही इच्छा रही होगी की साई धाम के निर्धारित कार्यक्रम बिना विलम्ब संपन्न हों। गुर जी का भी ऐसा ही संकल्प है। और इसी प्रकार वे दोनों एक साथ मिलकर साई की सेवा में समर्पित हैं।

सिया भैया, गुरु जी के विश्वासी रसोईये, जो अपने बाउजी तथा मम्मी जी की सेवा में पिछले 33 वर्षों से संलग्न हैं, उन्होंने कहा कि उन्हें महसूस होता है कि मम्मी जी आस-पास ही हैं। "मुझे मम्मी बहुत याद आती हैं। वह मेरे सपनों में आकर पूछती हैं कि मैं सबकी देखभाल करता हूँ या नहीं", सिया भैया ने अश्रुपूर्ण नेत्र से मम्मी जी की फोटो को देखते हुए यह बात कही।

नाश्ते का समय है। गुरू जी ने मुझसे पूछा, "तुम्हारे मसूड़े का क्या हाल है? क्या कुछ आराम है"? इसी बीच सिया भैया पराठे परोस रहे हैं और हमें भूख भी अधिक लगी है। शायद मैंने पाँच आलू के पराठे खा लिये क्योंकि पिछले कुछ दिनों से मसूड़ों में दर्द की वजह से मैं ठीक से खा नहीं पा रही थी। गुरु जी का अल्पाहार देखते हुए मेरे पति ने संकोच वश तीन ही पराठे खाए। गुरू जी अपनी उबली हुई सब्जियों के कटोरे के बगल में अपना लैपटॉप लेकर कार्य करते जाते हैं। इसी बीच गुरू जी का फोन बजता है, और वे फोन को स्पीकर पर कर देते हैं। यह एक अज्ञात नम्बर है और कनेक्शन सही से नहीं पकड़ रहा है। गुरू जी ने

जवाब में कहा कि मैं नाश्ते के बाद आपसे दस मिनट के बाद बात करूँगा। गुरू जी उस अज्ञात नम्बर पर कॉल करते हैं, उधर से ऊँचे स्वर में प्रश्न आता है, "साई बाबा हिन्दू थे या मुसलमान"? गुरूजी जवाब देते हैं, "बाबा के धर्म के बारे में किसी को कोई जानकारी नहीं है"। कॉलर पूछता है, "लोग कई तरह की बातें करते हैं तो मुझे लगा कि मैं आप से पूछ लूं"। "अच्छा कोई बात नहीं", गुरू जी फोन काट देते हैं। कुछ ही देर बाद एक और कॉल आता है, 'सर मैं एक पंजीकृत होमियोपैथिक डॉक्टर हूँ, क्या आपकी डिस्पेंसरी में मेरे लिये कोई रिक्त स्थान है?", यह एक युवती ने पूछा। गुरू जी उससे एक होमियोपैथिक औषधि का वैकल्पिक नाम पूछते हैं परन्तु वह जवाब देती है कि वह गूगल से पता करके बताएगी। गुरू जी इधर से जवाब देते है कि तुम्हें कुछ जानकारी नहीं है, गुरू जी फोन रख देते हैं। मेरे पति हँसकर कहते है,"आप तो आई.आई. टी. के प्रोफेसरों से भी ज्यादा सख्त हैं, यह तो एक त्वरित परीक्षा थी" ।

"क्या भोला आ गया है? उसने आज फिर से देर कर दी। मैंने तिवारी से कहा था कि उसे आने वाले दिनों में समय से आने के लिये याद दिला देने को", गुरू जी थोड़े अप्रसन्न हुए। "बाऊजी मैं ट्रैफिक में फंस गया था", भोला भैया, जो गुरूजी के निष्ठावान चालक सात वर्षों से सेवा दे रहे हैं, ने सफाई दी। "अच्छा अब ट्रैफिक ध्यान में रखते हुए थोड़ा जल्दी निकला करो"। गुरू जी की अप्रसन्नता में भी एक मिठास घुली हुई है। साई धाम के रास्ते में हम पुनः बन्दरों और गायों को भिगोया हुआ चना खिलाने के लिये रुके। भोला भैया चनों को चारों ओर फैला रहे हैं ताकि बंदर, गाय, पक्षी निर्धारित स्थान पर आकर खा सकें। "उन्हें चने बड़े स्वादिष्ट लग रहे होंगे", गुरू जी ने विचार किया। गुरू जी अपनी जीवन की कुछ घटनाओं का उल्लेख कर रहे हैं । साथ में श्री साई सच्चरित्र का पाठ गाड़ी के संगीत डेक पर मधुरता से चल रहा है। गुरू जी वृतान्त सुनाते चलते हैं परन्तु बीच बीच में कई फोन कॉल भी आते रहते हैं। "बाऊजी, नये सत्र के लिये स्कूल यूनिफार्म कब तक निर्गत किये जायेंगे? बाऊजी, किस ठेकेदार को स्कूल डेस्क रंगने का आर्डर दिया जाए?

बाऊजी, सामूहिक विवाह कार्यक्रम के लिये कितने निमंत्रण पत्र छपवाने हैं? बाऊजी, आचार की सामग्री के लिये भंडारे में जगह नहीं है"। उन्होंने कुछ के जवाब दे दिये, कुछ को फटकार मिली कि वे स्वयं कोई निश्चय करें और कुछ को कहा गया कि वे प्रतीक्षा करें, जब तक वे साई धाम तक नहीं पहुंचते।

साई धाम पहुँचने पर गुरू जी सर्वप्रथम मंदिर में दर्शन करते हैं तथा दक्षिणा दे कर ही अपने कक्ष में प्रवेश करते हैं। उनका चतुर प्रशासकीय एवं प्रबंधन कला ही इस संस्था को कुशलता से चलाने में सहायक है। जिस तरह एम.एन.सी. के युवा प्रबंधक आधुनिक टेक्नोलॉजी में निपुण होते हैं उसी प्रकार 86 वर्षीय डॉ. गुप्ता भी अपने कार्य में टेक्नोलॉजी का प्रयोग बड़ी दक्षता से करते हैं। वह बड़ी कुशलता से एम.एस. वर्ड, पावर पोइन्ट, एक्सल को कार्य में लाते हैं तथा स्वयं ही अपने सोशल मिडिया एकांउट को संभालते हैं, जैसे कि ट्विटर, फेसबुक, इंस्टाग्राम। गुरू जी कहते हैं कि सोशल मिडिया मेरी बहुत मदद करता है, मैं साई धाम के संदेश एक बटन दबाते ही चारों ओर भेज सकता हूँ। आखिरकार गुरू जी ने भी विज्ञान की पढाई की है और समझा है कि पिछले 60 वर्षों में विज्ञान किस प्रकार उन्नत हुआ है। वह विज्ञान को जन-मानस के लाभ के लिये उपयोग करने के पक्षधर हैं।

एक तरफ आगंतुकों की आगवानी हो रही है और साथ में गुरू जी अपने लैपटॉप पर कार्य भी कर रहे हैं। कुछ लोग जो दाता कंपनियों की सी.एस.आर. विभागों से आए हैं, काफी प्रसन्नचित्त हैं कि सी.बी.एस.ई. की दसवीं वर्ग के छात्रों ने शत-प्रतिशत सफलता पाई है जिसमें कुछ छात्र हिन्दी, गणित तथा सामाजिक विज्ञान में क्रमशः 99, 94 तथा 93 प्रतिशत अंकों से उतीर्ण हुए हैं। गुरू जी चेक पर हस्ताक्षर किये जा रहे हैं ताकि भुगतान हो सके या अनुबंधों का नवीकरण हो सके। किसी भी दस्तावेज़ को अपनी पैनी निगाह से देखे बगैर वे हस्ताक्षर नहीं करते हैं, इस सूक्ष्म दृष्टि से किसी तरह की चूक नहीं हो पाती है।

अब दोपहर के भोजन का समय हो गया है तथा सभी आगंतुक भोजन के लिये आमंत्रित हैं। मैं अपने पति के साथ गुरू जी की प्रतिक्षा कर रही हूँ क्योंकि वे कुछ आगंतुकों से मिलने में व्यस्त हैं। कुछ अतिथि हरियाणा की प्रसिद्ध मिठाई घेवर लाए हैं। "मुझे दो, मैं भी इसका स्वाद चखूँगा", गुरू जी एक पाँच वर्ष के बच्चे की भाँति मिष्ठान का स्वाद लेना चाह रहे हैं। भोजन के बाद आज संयोग से कोई विशेष कार्य निर्धारित नहीं है। इसलिये गुरू जी को अपने आराम कक्ष में थोड़ा विश्राम करने का वक्त मिल गया। यह क्रिकेट के विश्व कप का समय चल रहा है। मेरे पति भारत-इंगलैंड का मैच देख रहे हैं। गुरू जी वापस अपनी केबिन में पहुँचते हैं। "मैं मैच की वजह से सो नहीं पा रहा हूँ, स्कोर क्या है"? वे मेरे पति से पूछते हैं। वे स्कोर पर चर्चा करते हैं तथा खेल की रणनीति पर भी चर्चा होती है, किस खिलाड़ी को हटाना चाहिए तथा किसे डटे रहना चाहिए। इंगलैंड ने चौका मारा जो भारत के लिये खतरा है पर खेल की दृष्टि से अच्छा शॉट है। दोनों मैच बहुत तन्मयता से, मठरी खाते हुए और शिकंजी पीते हुए देख रहे हैं। इसी बीच डॉ. गुप्ता से मिलने कुछ आगंतुक पहुँचे हैं। कार्य करना पहली प्राथमिकता है। अतः गुरु जी उन्हें अंदर आने की अनुमति देते हैं। मेरे पति और मैं बगल के कमरे में चले जाते हैं।

रात के साढे आठ बज रहे हैं तथा मैं बहुत थकान महसूस कर रही हूँ। गुरू जी के कैबिन का एयर कंडिशनर सही से काम नहीं कर रहा है। हमने इस बात को गुरू जी को बतलाया और कई बार रिमोट कंट्रोल से उसे सही करना चाहा। गुरू जी सामूहिक वैवाहिक कार्यक्रम के निमंत्रण पत्र पर स्वयं ही नाम-पता लिखने बैठे हैं। जिस अधिकारी को यह कार्य करना था उसकी खुद की शादी है। इसलिये गुरूजी उसका कार्य कर रहे हैं। वह मेहमानों के घर का पता अपने 'एक्सेल शीट' से निकालने की कोशिश में जुटे हैं। "मैं इस सूची से मेहमानों के घर का पता शीघ्रता से कैसे पा सकता हूँ?", गुरू जी ने मुझसे पूछा। "कृपया कंट्रोल तथा एफ बटन दबाएं तब सारे पते नाम के साथ मिल जायेंगे", मैंने उत्तर दिया। उन्होंने मुझसे श्री भाटिया, श्री अग्रवाल, श्रीमती शर्मा का पता निकालने

के लिये कहा। ज्यादातर पता गुरू जी मेरे बताने से पहले ही बता देते हैं। "गुरू जी आपको तो पूरी सूची कंठस्थ है"। वह मुस्कुरा देते हैं।

रात्रि के दस बज चुके हैं, गुरूजी हमारी ओर देखकर कहते हैं, "चलो अब चलते हैं। बाकी का काम मैं कल कर लूंगा। भोला, चलो अब समेटते हैं। ये लिफाफे कोरियर द्वारा भेजे जायेंगे और ये हाथों-हाथ दिये जाएँगे"। अब हम घर की तरफ चल पड़ते हैं। घर लौटते हुए हम फल की दुकान पर रूकते हैं। "भोला कुछ चैरी खरीद लो नन्ही नायरा के लिए"।

गुरू जी और मेरे पति क्रिकेट की चर्चा कर रहे हैं। दूसरा मैच शुरू हो गया है। कार का रेडियो क्रिकेट के मैच का प्रसारण कर रहा है। उन दोनों के चर्चा से मुझे आभास होता है कि मैच बहुत रोचक है। हम लोग घर बहुत देर से पहुंचते हैं। सिया भैया हमें रात्रि का भोजन परोस रहे हैं। "पता नहीं क्यों आज मुझे थकान महसूस हो रही है", गुरू जी कहते हैं। हमने कहा कि ऑफिस का एयर कंडिशनर सही से काम नहीं कर रहा है। या फिर कह लें कि बिल्कुल ही काम नहीं कर रहा है। दिल्ली में जून में बढ़ी हुई आद्रता की वजह से बिना ए.सी. के रहना मुश्किल है।

मुझे बाद में पता चलता है कि ऑफिस का यह आठ साल पुराना ए.सी. कुछ दिनों से बिल्कुल काम नहीं कर रहा है, पर बाऊजी इस ओर कोई ध्यान नहीं देते हैं। वह अपने केबिन पर ज्यादा खर्च नहीं करना चाहते हैं क्योंकि वह उन्हें ही सिर्फ सुख देगा। "सिया, अतिथि चाँदनी चौक से लाया हुआ 'माइसोर पाक' खाना पसंद करेंगे। उनके लिये ले आओ"। सिया भैया ने चुपचाप माइसोर पाक लाकर रख दिया, अपने बाऊजी का उद्देश्य समझते हुए। वह इस बात का भी अनुमान लगा लेते हैं कि अगर मम्मी जी होतीं तो क्या परिणाम होता। माइसोर पाक हमारे सामने पड़ा है। मैं और मेरे पति वहाँ से उठने की अनुमति लेते हैं। हम लोग गुरू जी को याद दिलाते हैं कि आज उन्होंने मीठे में घेवर भी खाया है। माइसोर पाक बिना किसी के कंठ लगे वापस भेज दिया जाता है। मैं गुरूजी से आज्ञा लेकर सोने चली जाती हूँ। मेरे पति भी 'शुभ रात्रि'

कहकर विदा लेते हैं कि गुरु जी कहते हैं "अरे कहाँ जा रहे हो? वेस्टइंडीज ने रफ्तार ले लिया है। कुछ और ओवर शेष हैं, हम लोग मैच देखते हैं"। दोनों देर रात तक मैच देखते हैं। जब तक हम सुबह उठते हैं, गुरू जी प्रातःकालीन सैर से वापस आकर नाश्ते की मेज़ पर रोज़ की तरह अपने ई-मेल की जानकारी ले रहे हैं।

अध्याय 2
प्रारंभिक दौर का जीवन

"किसी भी भक्त के घर अन्न तथा वस्त्र का अभाव नहीं रहेगा। जो भक्त मुझे दिल से चाहते हैं और जिनका मन मुझ में ही स्थित है तो यह मेरा वैशिष्टिय है कि मैं उन भक्तों का कल्याण सदा करता रहूंगा। श्री कृष्ण भगवान ने भगवत् गीता में यही कहा है। इसलिये अन्न तथा वस्त्र के लिये प्रयत्न मत करो। सांसारिक मान सम्मान त्याग कर ईश्वर की कृपा दया पाने की चेष्टा करो और उनके साम्राज्य में सम्मानित हो जाओ"

~ साई बाबा

"गुरु जी आपके बचपन की आकांक्षाएँ क्या थीं?", मैंने यह प्रश्न डॉ. गुप्ता के साई धाम की स्थापना के पहले के जीवन के पहलुओं की जानकारी हासिल करने की चेष्टा से की। "मेरी कोई अभिलाषा नहीं थी", उन्होंने सहजता से जवाब दिया। "मैं किसी भी कार्य को दक्षता से करना चाहता था। उसके सिवा और कुछ भी नहीं सोचा"। गुरू जी हमसे अपने बचपन के कुछ किस्से बतलाना शुरू करते हैं।

हम उनके बचपन की कुछ पुरानी तस्वीरें देख रहे हैं। गुरू जी के बचपन के विशद वर्णनों को सुन कर ऐसा लग रहा है कि हम पिछली सदी में जा पहुँचे हैं।

डॉ.मोतीलाल गुप्ता का जन्म 11 दिसम्बर 1934 को फरीदाबाद में हुआ। उनके पिता श्री राम गोपाल जी मेहंदीवाले एक व्यवसायी थे तथा माता श्रीमती चंदा देवी जी, एक गृहणी थीं। "मेरे दादा जी, श्री वंशीधर जी मेहंदीवाले ने अपने अथक परिश्रम से सम्पूर्ण व्यवसाय को खड़ा किया", गुरू जी हमें बताते हैं। उनके दादा जी एक सफल व्यवसायी थे। उनका व्यवसाय दिल्ली

और फरीदाबाद में फैला हुआ था। आज भी खारी बाउली में कई दुकानें श्री वंशीधर जी के पूर्व कर्मचारियों की हैं, जिनको उन्होंने ज़मीन तथा दुकान खरीदने में सहायता पहुँचायी थी। उन्होंने ही यह ज़मीन खरीदी जहाँ आज साई धाम स्थापित है। डॉ. गुप्ता बड़े प्रेम से उन मधुर यादों को ताज़ा करते हैं जब वह अपने दादा जी से मिलने दिल्ली जाया करते थे। रात के समय जिस ऊँट गाड़ी से मेंहदी फरीदाबाद से दिल्ली जाती थी उसी में वो बैठ कर दिल्ली चले जाते तथा दूसरे दिन इसी गाड़ी से लौट आते थे। उन दिनों आने जाने के लिये अन्य काई साधन उपलब्ध नहीं था। डॉ. गुप्ता अपने पिता, दो बड़े भाईयों तथा तीन छोटी बहनों के साथ फरीदाबाद में रहते थे। उनके परिवार में आधुनिक उच्च शिक्षा की महत्ता थी। सभी भाईयों ने स्नातक तक की पढ़ाई की तथा सभी बहनों ने स्नात्तकोत्तर तक की पढ़ाई की।

बचपन से ही डॉ. गुप्ता विलक्षण बुद्धि के थे। चौथी कक्षा की परीक्षा में उत्कृष्टता के लिये उन्हें विशेष छात्रवृत्ति मिली। उन्हें अगले चार साल तक 4 रूपये की छात्रवृति मिलने लगी। उन्होंने राजकीय विद्यालय, फरीदाबाद से पढ़ाई की। फरीदाबाद एक छोटा क़स्बा था जिसकी आबादी करीब 10000 थी। छात्रों को बल्लभगढ़ तहसील जाकर चौथी और आठवीं कक्षा की बोर्ड की परीक्षा देनी पड़ती थी। "हम लोग बल्लभगढ़ परीक्षा देने एक मेटाडोर से जाया करते थे जो रास्ते में खराब हो जाती थी। तब हम बच्चों को उसे धक्का देना पड़ता था", गुरू जी मुस्कुराते हुए बतलाते हैं। वह याद करते हैं कि मेंहदी के खेतों में आए ऊंटों की सवारी करते वक्त वे कैसे नीचे गिर पड़े थे। दूसरी घटना जिसके मधुर संस्मरण है, वह यह है कि जब वह फरीदाबाद स्टेशन पर फ्रंटियर मेल की प्रतिक्षा करते थे। फ्रंटियर मेल उस ज़माने की विशेष रेलगाड़ी थी पर फिर भी फरीदाबाद जैसे छोटे स्टेशन पर भी रूकती थी जहाँ पक्का प्लेटफार्म तक नहीं था। गुरू जी हमें उत्सुकता से एक मासूम मुस्कुराहट के साथ बताते हैं कि संध्या समय बच्चे स्टेशन जाया करते थे। उस विशेष ट्रेन से ठंडी लेमन जूस की बोतलें आया करती थीं जो बच्चे बड़े चाव से पीते थे तथा ट्रेन चलने से पहले बोतलें लौटा दिया करते थे।

फिर 1947 का साल आया जब भारत आज़ाद हुआ। ब्रिटिश हुकूमत से निकल कर भारत और पाकिस्तान की रचना हुई। विभाजन के दौरान उथल-पुथल मच गया। लोगों का पलायन बड़े पैमाने पर हुआ, खासकर पंजाब प्रांत में। युवा डॉ. गुप्ता उस विभाजन के गवाह बने जब पाकिस्तान से आने वाले हिन्दुओं को अस्थाई डेरों में रखा जा रहा था तथा फरीदाबाद के रहने वाले मुसलमान नयी सीमा रेखा के उस पार पलायन कर रहे थे। इस तरह की स्थिति में अगले वर्ष की परीक्षाएँ समय से नहीं हो पाईं। फरीदाबाद में पढ़ाई करना मुश्किल हो रहा था क्योंकि वहाँ बिजली नहीं थी तथा अगर लालटेन या मोमबत्ती जलाते तो कीड़े और मच्छर आ जाते।

14 वर्ष के युवा डॉ. गुप्ता का दाख़िला रोहतक के वैश्य हाई स्कूल में हुआ जहाँ से उन्होंने मैट्रिक तक की पढ़ाई पूरी की। घर से दूर रोहतक में वे छात्रावास में रहकर पढ़ाई करते थे। "मैं अपने कपड़े साफ-सुथरे रखता था, नाखून काट कर रखता था तथा पढ़ाई में भी उत्कृष्ट प्रदर्शन करता था। इसलिये मुझे विशिष्ट अतिथियों जैसे स्कूल इंस्पेक्टर, अधिकारी या दानदाताओं के स्वागत का कार्य सौंपा जाता था। मेरे शिक्षक मुझे सदा सबसे आगे की बेंच पर बिठाते थे", गुरूजी हमें बिना किसी गर्व के, बड़ी विनम्रता से बताते हैं। ग़ौरतलब है कि गुरूजी, जिन्होंने हजारों की संख्या में गरीब व वंचित बच्चों का दाखिला शिरडी साई बाबा स्कूल में कराया है तथा उनके मार्गदर्शक बने हैं, अपने बचपन में सीखे हुए अनुशासन का पालन करना अपने स्कूल के बच्चों को भी सिखाते हैं। बच्चों को साफ़-सफाई का विशेष ध्यान रखना सिखाया जाता है। उन्हें स्कूल की तरफ से जूता पॉलिश, नाखून काटने का कटर, कंघी आदि दिया जाता है। जब आगंतुक शिरडी साई बाबा स्कूल का भ्रमण करते हैं तो छात्रों को बहुत सलीके से तैयार पाते हैं। उनके यूनिफार्म साफ-सुथरे रहते हैं, बाल कंघी से संवरे रहते हैं और जूते पॉलिश से चमकते दिखते हैं। गुरू जी अपने समय के एक मेधावी और अनुशासित छात्र थे और इसलिये वर्तमान में वे ये सभी गुण अपने छात्रों में संचारित करना चाहते हैं, खासकर उन छात्रों में जिन्हें कही से कोई दिशा-निर्देश नहीं मिल पाती।

"हाँ, कृपया अंदर आइये"। विवरण को थोड़ी देर के लिये विराम दिया जाता है क्योंकि एक अतिथि आए हैं। आगंतुक किसी वस्त्र निर्माता कंपनी के अधिकारी हैं। वह अपने परिवार के साथ साई धाम मंदिर के दर्शन करने पहुँचे हैं तथा गुरू जी से आशीर्वाद लेने उनके ऑफिस में आए हैं।

इसी बीच सिलाई का प्रशिक्षण ले रहे प्रशिक्षुओं की हाजिरी रजिस्टर वहाँ की इंचार्ज, गुरू जी के हस्ताक्षर हेतु, ले कर आईं हैं जिससे पता चलता है कि दो प्रशिक्षु अनुपस्थित हैं। उनके बच्चों को बुखार होने के कारण वे महिलाएँ आज ट्रेनिंग के लिये नहीं आ सकीं। देखा जाए तो यह बरसात का मौसम है और ये महिला प्रशिक्षु उन बस्तियों से आती हैं जहाँ गन्दगी के कारण बीमारी फैलने का ज्यादा खतरा रहता है। गुरू जी समझ जाते हैं। अधिकारी के साथ विचार-विमर्श समाप्त हो जाता है। गुरू जी ने उनसे उनके कपड़ों के कारखाने में साई धाम की महिला प्रशिक्षुओं की नौकरी का बन्दोबस्त करने का आग्रह किया है। गुरू जी का यह एक और कदम है उन महिलाओं का जीवन बेहतर करने की दिशा में।

हम लोग पुरानी तस्वीरें देख रहे हैं जिसमें गुरूजी के छात्र-जीवन की झलकियाँ हैं। एक तस्वीर में उन्होंने हैट पहन रखा है। "यह फोटो बनारस की है", गुरू जी ने पुनः अपनी जीवनी का वर्णन प्रारम्भ किया। मैट्रिक की परीक्षा में उत्तम परिणाम के साथ उत्तीर्ण होने के उपरांत उन्होंने इन्टर साईन्स की पढ़ाई बनारस से की। हमें ये ज्ञात होता है कि इन्टर की रसायन शास्त्र की परीक्षा में उन्हें शत-प्रतिशत अंक प्राप्त हुए थे। "मैं अपने अध्यायों की पढ़ाई हॉस्टल में ही कर लेता था तथा प्रयोगशाला में बिना किसी पुस्तक के एक्सपेरिमेंट कर लेता था"। गुरूजी बताते हैं कि वह अपने रसायन शास्त्र के अध्यापक के बहुत प्रिय छात्र थे क्योंकि वे प्रायोगिक विषय में हमेशा सही परिणाम लाते थे। परन्तु एक दिन उन्हें एक एक्सपेरिमेंट में गलत परिणाम आया। प्राध्यापक महोदय इस परिणाम से अचंभित थे कि कक्षा के सर्वश्रेष्ठ छात्र का गलत परिणाम कैसे आया? ऐसा तो कभी नहीं हुआ था। "इस मिश्रण में नाइट्रोजन है इसलिये तुम्हें एक्सपेरिमेंट में हरा रंग मिलना चाहिए

था", प्राध्यापक ने कहा। अन्ततः डॉ. गुप्ता को अपने प्रयोग में हरा रंग का परिणाम आ गया जैसा कि उम्मीद की गई थी। परन्तु एक विचित्र बात हो गई। अगली कक्षा छात्राओं के लिये निर्धारित थी। उन्हें भी एक्सपेरिमेंट में हरा रंग नहीं आया। प्राध्यापक फिर से अचंभित हुए। खोज बीन करने पर पता चला कि छात्र-छात्राओं को गलती से कोई दूसरा मिश्रण दे दिया गया था जिसमें नाईट्रोजन था ही नहीं। तब उन्होंने अपने प्रिय छात्र को बुलाया और हरे रंग के रहस्य के बारे में पूछा। "सर, आपने कहा कि इसमें नाइट्रोजन है तो मैंने टेस्ट ट्यूब में हरी स्याही डाल दी"। इस बात पर प्राध्यापक महोदय ठहाका लगा कर हँस पड़े।

डॉ. गुप्ता अपनी पढ़ाई में होशियार तो थे ही, साथ-ही-साथ अपने मधुर एवं मिलनसार स्वभाव की वजह से अपने अध्यापकों तथा सहपाठियों के चहेते भी थे। एक अन्य मजेदार घटना ऐसी हुई कि छात्रों को परीक्षा में कुछ पंक्तियों पर अपनी टिप्पणी लिखनी थी। डॉ. गुप्ता ने इसके बजाय लॉर्ड बैरन का जीवन-चरित्र लिख दिया। प्राध्यापक ने अगले दिन अपने प्रिय छात्र को उनके अंक दिखाये। वह अंक था 01। फिर उन्होंने परिणाम पत्र को उल्टा करके दिखाया और अंक पढ़ने को कहा। वही अंक अब 10 हो गए। प्राध्यापक ने कहा, "अगर प्रश्न में लॉर्ड बैरन का चरित्र लिखने को कहा जाता तो तुम्हें निश्चित तौर पर 10 में से 10 अंक प्राप्त होते क्योंकि तुमने बहुत अच्छा लिखा है। चूँकि प्रश्न भिन्न था इसलिये तुम्हें 1 अंक प्राप्त हुआ क्योंकि तुम्हें कम-से-काम यह ज्ञात तो था कि ये पंक्तियाँ लॉर्ड बैरन की हैं।

गुरू जी को इन्टर (विज्ञान) की परीक्षा में सर्वश्रेष्ठ अंक प्राप्त हुए। वह भारत के किसी भी श्रेष्ठ महाविद्यालय से स्नातक की पढाई कर सकते थे। उन्होंने बम्बई के 'कॉलेज ऑफ साईन्स' को चुना। उसी समय उनको टाईफाइड हो गया। जैसे हीं बुखार उतरा, उन्हें शीघ्र ही बम्बई के लिये रवाना होना पड़ा। गुरु जी बताते हैं कि उनका छात्रावास बैंड स्टैंड बान्द्रा में था तथा महाविद्यालय चर्च गेट पर था। उन्हें अपने खाने का प्रबंध बाजार से खरीद कर करना पड़ता था जो उनके स्वास्थ्य के लिये अनुकूल नहीं था। एक

दिन अपने मित्र के साथ बम्बई भ्रमण के दौरान उनका बस्ता गुम हो गया जिसमें उनके पैसे और जरूरी कागजात थे। उन्होंने तय कर लिया कि बम्बई उनके लिये सही जगह नहीं है तथा उन्होंने बनारस लौटने का मन बना लिया। उनके इन्टर विज्ञान में उच्च कोटि के अंक की वजह से उन्हें देर से भी बनारस हिन्दु विश्वविद्यालय में स्नातक की शिक्षा के लिए दाखिला मिल गया।

कठिनाइयाँ डॉ. गुप्ता को विचलित नहीं करतीं हैं। वो अक्सर कहा करते हैं, "समस्या से परेशान होना समाधान नहीं है बल्कि चुनौती का डट कर सामना करने में ही भलाई है"। एक खिलाड़ी की भावना के साथ वह समस्याओं का सामना करते हैं, गिरते हैं, चोट खाते हैं परन्तु रुकते कभी नहीं। इस जीवन की दौड़ में बाधाएँ अनेक हैं परन्तु वे कभी भी शिकायत नहीं करते, क्योंकि उनके जैसे धावक के लिये दौड़ में भाग लेना ही जीत से अधिक महत्त्वपूर्ण है।

डॉ. गुप्ता अपनी उपलब्धियों के बारे में अल्प शब्दों में जानकारी देते हैं। वह छोटे वाक्यों में थोड़ा-बहुत अपने बारे में बताते हैं तथा अपनी उपलब्धियों की जानकारी देने में संकोच करते हैं। सच्चाई परन्तु यह है कि वे मैट्रिक तथा इन्टर विज्ञान की परीक्षाओं के श्रेष्ठ विद्यार्थी रहे हैं तथा अपने पाठ्यक्रम में सर्वदा तेजस्वी रहे हैं।

"मैंने भौतिकी, गणित तथा स्टेटिस्टिक्स को चुना। उस ज़माने में स्टेटिस्टिक्स एक नया विषय था तथा इसकी विज्ञान के विद्यार्थियों में अधिक मांग थी", गुरू जी हमें बताते हैं।

बनारस वापस आ कर उन्हें घर जैसा लगने लगा। वे अपने दोस्तों के साथ कभी कैंटीन जाते, कभी साईकल से मिर्जापुर के पानी के झरनों को देखने चले जाते तथा गंगा पर नौका-विहार करने प्रायः नित्य ही चले जाते। "एक बंगाली खोमचावाला समोसे, रसगुल्ले बेचता था जो हमारे छात्रावास से हो कर गुजरता था। मुझे उसके समोसे, रसगुल्ले बड़े पसंद थे"। आज हम

उन दिनों के शुद्ध बंगाली रसगुल्ले तथा बनारसी समोसे का जायका सिर्फ अपने सपनों में हीं चख सकते हैं। डॉ. गुप्ता कैंटीन से कभी उधार नहीं लेते थे जैसा कि अन्य छात्रों की प्रवृत्ति थी। जब छात्रों के घरों से मनीआर्डर आता था, तब कैंटीन वाला भी डाकिये के साथ उनसे बकाया वसूलने पहुँच जाता था। “मैं बहुत सोच-समझकर खर्च करता था और कभी किसी का बकाया नहीं रखता था”। यह अभ्यास साई धाम के काम-काज में भी अपनाया जाता है। डॉ. गुप्ता संस्थान के खर्च का सभी लेखा-जोखा बहुत ध्यान से रखते हैं। उनकी आर्थिक व्यवस्था के कड़े संचालन से सभी संसाधनों का उचित तथा सर्वाधिक उपयोग किया जाता है। जितने दान-कर्ता हैं उन्हें उनकी निधि के उपयोग का हिसाब-किताब दे दिया जाता है।

“मैं सफाई का विशेष ध्यान देता था। सुबह-शाम अपने कपड़े बदला करता था”, गुरूजी बताते हैं। उनकी सफाई में रूचि हमें साई धाम प्रवेश करते ही ज्ञात हो जाती है। यहाँ के स्कूल, रसोईघर तथा शौचालय सभी साफ-सुथरे रखे जाते हैं। गुरूजी अपने केबिन का टेबल स्वयं स्वच्छ रखते हैं, तथा गिरे हुए कागज के टुकड़ों को चुनकर कूड़ेदान में डालते हैं। हालांकि अभी कमर में ‘हेयर लाईन’ फ्रैक्चर की वजह से झुकने में थोड़ी तकलीफ होती है परन्तु कष्ट से झुक कर भी वे कार्य कर लेते हैं।

गुरू जी को स्नात्तक में स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं है। स्नातक के बाद वे दिल्ली तथा फरीदाबाद के अपने पारिवारिक व्यवसाय को सम्भालने लगे। उनका व्यापारिक प्रतिष्ठान मेंहदी और हल्दी निर्यात करना था। डॉ. गुप्ता एक घटना याद करते हैं जब उन्हें एक बड़ा अनुबंध, रूस को इलायची निर्यात करने का, मिला था। परन्तु सर्वेक्षण के बाद पूरे खेप को अस्वीकार कर दिया गया। यह एक गंभीर विषय था जिस पर सरकार की भी नज़र गई। सरकार के जांच-परख के आधार पर इलायची को किसी अन्य देश में निर्यात करने का आदेश दिया गया ताकि घाटे की भरपाई हो सके, साथ ही कंपनी को सिंगापुर से सुपारी आयात का लाइसेंस मिल गया। उनकी कंपनी मसालों तथा सूखे मेवों का भी

आयात-निर्यात करती थी। 1959 में 24 वर्षीय डॉ. गुप्ता ने पारिवारिक व्यवसाय के इस कार्यभार को संभालना शुरू किया। उन्होंने संपूर्ण भारत वर्ष की यात्रा की। आगरा से लेकर कलकत्ता तक तथा दक्षिण में कन्याकुमारी से लेकर महाराष्ट्र के सांगली तक की यात्राएँ की। उन्होंने 46 केंद्रों का दौरा किया जहाँ से माल बिकने आता था ताकि उत्पादन करने वाले तथा प्रदायक के बीच में दीर्घकालिक संबंध स्थापित हो सके।

डॉ. गुप्ता का त्रुटिहीन प्रबंधकीय कौशल का प्रमाण उनके पूर्व के प्रतिष्ठानों के कुशल संचालन को देखने से मिलता है। उन्होंने हमें उन सभी पहलुओं से अवगत कराया कि कैसे व्यवसाय को उन दिनों बिना, 'नेट बैंकिग' या 'ए.टी.एम' के चलाया जाता था। उन दिनों विभिन्न बैंकों द्वारा बैंक ड्राफ्ट निर्गत करना आसान कार्य नहीं था। परन्तु कंपनी के कर्मचारियों को निर्देश दिया गया था कि माल के विक्रय होने के तीन दिनों के अंदर पार्टियों को उनकी बकाया रकम के साथ हिसाब भेज दिया जाए। माल भेजने वाले समय पर त्वरित भुगतान से अति-प्रसन्न थे। ज्यादा से ज्यादा माल विक्रय के लिये आने लगा तथा व्यवसाय फलने-फूलने लगा। आधुनिक तथा व्यवस्थित लेखांकन की प्रणाली दुकानों में शुरू की गयी। जो व्यवसाय के प्रतिद्वंदी थे, वे विस्मित थे तथा कुछ प्रतिस्पर्धा के कारण काफी संशय में पड़ गये कि एक नवयुवक अपने व्यवसाय को इतनी ऊँचाइयों तक कैसे ले आया?

फिर आया वर्ष 1960 का। यह वर्ष था मोतीलाल और कान्ता के अलौकिक परिणय बंधन का। एक उच्च शिक्षित, सर्वगुण संपन्न युवती जो हर प्रकार से अपने वर के अनुकूल थी, श्री मोतीलाल की अर्द्धांगिनी बनीं।

हम उनके विवाह के 'ऐल्बम' को देख रहे हैं। सुर्ख़ जोड़े में सजी युवा दुल्हन अलौकिक प्रभा से ओत-प्रोत थी। मैं थोड़ा संकोच कर पूछती हूँ कि क्या गुरू जी को मम्मी जी से विवाह से पहले मिलने का मौका मिला था। "उनके मौसेरे भाई मेरे बी.एच.यू. के सहपाठी थे। एक बार उन्हीं के घर पर मैंने कान्ता को देखा था"। "और फिर गुरु जी"? मैंने जिज्ञासा वश पूछा।

"और फिर हमारा विवाह हो गया"। मेरे पति इस संक्षिप्त अथवा त्वरित उत्तर पर हँस पड़े।

ऐल्बम का एक विशेष फोटो मुझे आकर्षित करता है। नव-दंपति का एक युगल फोटो है जिसमें गुरू जी गाड़ी में ड्राइविंग सीट पर बैठे हैं तथा मम्मी जी उनके बगल में बैठीं हैं। 'सदा खुश रहो' का आशीर्वाद मानो इस फोटो में जीवंत हो उठा है। उनके कश्मीर के 'हनीमून' के फोटो को देखकर मैं और मेरे पति अपनी मुस्कान नहीं रोक पाते हैं।

चिर-परिचित कहावत है कि किसी सफल व्यक्ति के पीछे किसी महिला का हाथ होता है। श्रीमती कान्ता गुप्ता अपने पति के पीछे नहीं बल्कि उनके कदम-से-कदम मिलाकर चलती थीं। वे दोनों जीवन-साथी, घर तथा कार्य-क्षेत्र की ज़िम्मेदारी साथ निभाते थे। उन्होंने डी.एम.कॉलेज, मोगा, पंजाब से स्नातक की डिग्री प्राप्त की थी। वह एक स्नेहमयी पत्नी, संवेदनशील बहू, समर्पित माँ और ज़िम्मेदार पुत्री थीं। सभी उत्तरदायित्वों को बहुत तन्मयता से निर्वाह करती थीं। वे अपने माता-पिता की इकालौती संतान थीं। एक कर्त्तव्यनिष्ठ पुत्री की भाँति उन्होंने अपने पिता के निधन के बाद अपनी वृद्ध माता को संभाला।

यह अनुकरणीय दंपति तीन पुत्रियों तथा एक पुत्र के गौरवान्वित माता-पिता बने। सबसे ज्येष्ठ पुत्री मंजरी का जन्म 1961 में हुआ। उसके बाद ममता, संदीप तथा पूनम का जन्म हुआ। सभी बच्चों ने शहर के सर्वश्रेष्ठ विद्यालयों से अपनी पढ़ाई पूरी की। संदीप ने संत जेवियर स्कूल से पढ़ाई की तथा पुत्रियों ने मार्डन स्कूल, दिल्ली से पढ़ाई की।

कहानी का यह सिलसिला फिर रुक जाता है क्योंकि कुछ आगंतुक फिर आ गये हैं। आज भजन और भंडारे का आयोजन किया गया है। जिस परिवार ने इसका आयोजन किया है, वो लोग गुरूजी से आशीर्वाद लेने पहुँचे हैं। छोटे बच्चे उनका चरण स्पर्श कर आशीर्वाद ले रहे हैं। वे उन्हें प्यार से गले लगाकर, पुचकार कर तथा गुदगुदा कर आशीर्वाद दे रहे हैं। उस

परिवार की एक सदस्या अपनी कम्पनी की एच.आर. प्रमुख है। वह बहुत प्रभावित है कि साई धाम इतने बड़े पैमाने पर परोपकार का कार्य करता है। डॉ. गुप्ता बहुत विनम्रता से पूछते हैं कि क्या उनकी कम्पनी की सी.एस.आर. शाखा हमारे संस्थान के बारे में जानकारी प्राप्त करके कुछ योगदान देने की कृपा करेगी। वह स्वीकार सूचक उत्तर देती हैं तथा कहती हैं कि वो प्रयास करेंगी।

हम वापस गुरूजी की कहानी सुनने लगते हैं। "1963 में मैंने अपना स्वयं का उद्यम शुरू किया"। गुरु जी ने बताया कि उन्होंने सूती धागे का व्यवसाय स्थापित किया। दो साल के अंतर्गत, 29 वर्षीय डॉ. गुप्ता 'दिल्ली यार्न मर्चेंट एसोसिएशन' के सचिव चुने गए। यह एक प्रतिष्ठित पद था जो उस समय के व्यापार के कद्दावर लोगों को हासिल होता था। उनकी ख्याति उनके संघ में, बिना किसी संशय के, एक न्याय प्रिय व्यक्ति के तौर पर स्थापित हो गई। वह एक घटना का उल्लेख करते हैं, जब कुछ व्यापारियों और दलालों में तकरार हो गई। व्यवसाय के 1.5 प्रतिशत के मुनाफ़े में 1 प्रतिशत हिस्सा वितरकों का तथा 0.5 प्रतिशत हिस्सा दलालों का होता था। परन्तु किसी भी प्रकार के घाटे की सम्पूर्ण जवाबदेही वितरकों को वहन करनी पड़ती थी। जबकि दलाल अपने मुनाफे के हिस्से का बिना किसी शर्त के लाभ उठा रहे थे। इसे संघ में चुनौती दी गई। डॉ. गुप्ता ने तर्क दिया कि दलालों को भी घाटे की थोड़ी जवाबदेही उठानी पड़ेगी, अन्यथा उन्हें अपने हिस्से में कटौती करके एक चौथाई प्रतिशत करना होगा। बैठक का आयोजन उनके घर पर रखा गया जो देर रात तक चलता रहा। "मैं इस्तीफा दे दूँगा पर झुकूँगा नहीं, मैंने कहा"। डॉ. गुप्ता अपने निर्णय पर दृढ़ रहे। अंततः फैसला वितरकों के पक्ष में हुआ।

1965 में डॉ. गुप्ता का एक बड़ा योगदान रहा, कनारा बैंक को उत्तर भारत में प्रचलित करने में। अभी तक यह बैंक दक्षिण भारत में ही सक्रिय थी। उत्तर में मात्र दो शाखाएँ थीं, एक कनॉट प्लेस में और दूसरी चाँदनी चौक में। डॉ. गुप्ता की कंपनी के सारे लेन-देन कनारा बैंक से ही होते थे। इससे

इस बैंक को नये क्षेत्र में फैलने का मौका मिला। डॉ. गुप्ता ने कनारा बैंक को बढ़ावा देने के लिये अशोका होटल और अकबर होटल, दिल्ली में दो बड़े समारोह आयोजित किये। शहर के जाने-माने अधिकारी, उद्योगपति, व्यवसायी तथा बैंक से संबंधित अधिकारियों ने इस समारोह में भाग लिया। डॉ. गुप्ता के उद्यम के लिये आगरा में अवसर ज्यादा थे। इसलिए कनारा बैंक की उत्तर भारत की तीसरी शाखा आगरा में खोली गई। आगरा में इस बैंक की शाखा 1966-67 से कार्यरत हो गई। डॉ. गुप्ता याद करते हैं कि कैसे उन्होंने शाखा के खुलने पर बैंक के रीजनल मैनेजर को 16 लाख नक़द रूपयों को गिनने में मदद पहुँचाई थी। उन दिनों 1, 2, 5 और 10 रुपये के नोट चलते थे तथा कोई गिनने वाली मशीन भी नहीं थी। "बैंक को आगे बढ़ाने में मेरी अग्रणी भूमिका थी, मैं एक तरह से बैंक का अधिकारी ही कहलाने लगा"। डॉ. गुप्ता बैंक के विशेष ग्राहक थे। उनके चैक सीधे उनके खाते में जमा होते थे, बिना किसी समाशोधन प्रकिया के। उनकी दोषरहित प्रतिष्ठा के कारण उनकी कंपनी को 1 लाख रूपये तक की ओवर ड्राफ्ट की सुविधा दी गई थी जो कि व्यापारियों के लिये उन दिनों दुर्लभ था।

इसी बीच 1976 में डॉ. गुप्ता ने एक नये व्यापार की शुरूआत की। वह था इंग्लैंड को वस्त्र निर्यात करना। इस व्यापार के कारण उन्हें लंदन और दिल्ली के बीच यात्राएँ करनी पड़ती थीं। श्रीमती कान्ता गुप्ता उनके भारत के व्यापार संभालने में हाथ बटाने लगीं। लंदन मे उनका व्यापार सफल हुआ और 1979 में सूती धागे के व्यापार को बंद कर दिया गया। डॉ. गुप्ता को कभी लंदन तो कभी दिल्ली रहना पड़ता था। भारत रहकर वह वस्त्रों का निर्यात का संचालन करते और लंदन जाकर यहाँ से भेजा हुआ माल प्राप्त करते। वहाँ से सामान को इंगलैंड के अलग-अलग हिस्सों में विक्रय के लिये भेजा जाता था। बेल्जियम और नीदरलैंड भी भेजा जाता था। यह सारा वितरण गुरु जी स्वयं हीं अपनी गाड़ी के द्वारा करते थे। अपने विदेश के व्यापार की सारी कारवाई डॉ. गुप्ता स्वयं ही करते थे। गाड़ी में वस्त्रों के कार्टून भरे जाते थे और डॉ. गुप्ता बेल्जियम तक गाड़ी चला कर जाते थे। रास्ते में समुद्र को बड़े जहाजों से पार करना पड़ता था। कभी-कभी रात में

उन्हें बंदरगाह पर ही रुकना पड़ता था। "मैं खीरे के सैंडविच बनाता था और कॉफी थरमस में रखता था जो मेरे दिन और रात का खाना हो जाता था। मैं समुद्र पार करते समय अपनी गाड़ी में ही सो जाया करता था", गुरू जी हमें बताते हैं ।

1979 में एक बार जब गुरू जी गाड़ी चलाकर बेल्जियम जा रहे थे तो रास्ते में उनके कार की भीषण दुर्घटना हो गई। उस रात तूफान और मूसलाधार बारिश हो रही थी जिससे कि सामने देख पाना भी कठिन था। घुमावदार पर्वतों पर गाड़ी चला पाना मुश्किल हो रहा था। एक तीखे मोड़ पर गाड़ी फिसल गई और पहाड़ के नीचे गिर पड़ी। कार ने करीब पन्द्रह पलटनें खाईं। सारे काँच टूट गये। एक बॉल बियरिंग जिसे बदलना था, वह गाड़ी के अग्रिम भाग में रखा था, वह बार-बार गुरू जी के शरीर से टकराता रहा। जब वे कार से बाहर निकलना चाहे तो कार उनके ऊपर पलट गयी। परन्तु गाड़ी के अंदर भरे हुए वस्त्रों के कार्टूनों ने कार को क्षतिग्रस्त होने से रोक लिया। थोड़ा स्थिर होने पर वह अपना रुमाल दाहिनी जेब से निकालना चाहते थे लेकिन वो ऐसी स्थिति में फंसे थे कि उनका दाहिना हाथ जेब तक नहीं पहुँच पा रहा था। गौरतलब है कि उनकी आदत थी कि वे दोनों जेबों में रुमाल रखते थे, और यही आदत सहायक साबित हुई। तब वे बाईं हाथ से बाईं जेब के रुमाल को निकालने में कामयाब हुए। वे बड़ी मुश्किल से रुमाल को हिला कर संकेत देने की कोशिश करने लगे। तभी गश्तीदल के अधिकारी ने उन्हें देख लिया तथा शीघ्रता से एम्बुलेंस को बुलाया। डॉ.मोतीलाल गुप्ता को स्ट्रेचर पर उठा कर केंट और कैंटरबरी अस्पताल में इलाज के लिये ले जाया गया। उनकी जान बचा ली गई।

"मैं अपने भक्तों को मृत्यु के मुख से भी बचा लूंगा" - यह साई बाबा के वचन हैं। बाबा सर्वव्यापी हैं, उन्हें भूत, वर्तमान और भविष्य सब ज्ञात है। श्री हेमांडपंत लिखते हैं कि हम भक्त कठपुतली की भाँति हैं जिसकी डोर का संचालन साई स्वयं हीं बड़ी कुशलता से करते हैं। जो भक्त अपनी आत्मा और तन-मन से बाबा के शरणागत है उसके जीवन की रक्षा प्रभु स्वयं ही

करते हैं। इसी प्रकार साई बाबा ने अपने प्रिय भक्त को जीवन दान दिया। नियति उनका कुछ नहीं बिगाड़ सकती थी क्योंकि सदगुरू श्री साई उन्हें मानवता की सेवा करने का कार्य-भार सौंपने वाले थे।

डॉ. गुप्ता की कैन्टरबरी अस्पताल में उत्तम चिकित्सा हुई और बाद में वे लंदन के हन्सलों अस्पताल में लाए गए। लंदन के जाने-माने विख्यात शख़्सियत, लॉर्ड स्वराज पॉल, जो कि डॉ. गुप्ता के मामा-ससुर हैं, ने अपनी भांजी को फौरन आने के लिये संदेश दिया। उनका गुर्दा क्षतिग्रस्त हो गया था, पेल्विस को भी हानि पहुँची थी, नाक में चोट आई थी तथा कलाई की हड्डी टूट गई थी। परन्तु रोगी के तेजी से स्वस्थ होने पर डॉक्टर काफी अचंभित थे। शुरू में डॉ. गुप्ता की जाँच के लिये अस्पताल अपनी गाड़ी भेजकर बुलाती थी। परन्तु बाद में उन्हें बस से आने का प्रोत्साहन दिया गया ताकि वे चलने का प्रयास कर सकें। अन्ततः गुरू जी छड़ी के सहारे भली-भाँति चलने लगे।

उन्हीं दिनों लंदन में कराए गये 48 घंटे के गुरु ग्रन्थ साहिब के अखण्ड पाठ का गुरु जी स्मरण करते हैं। गुरू ग्रंथ साहिब को गुरूद्वारे से लाना, पाठ के बाद उसे पुनः गुरुद्वारे ले जाना, धर्म-गुरुओं के भोजन का प्रबंध तथा भक्तों में प्रसाद वितरण के प्रबंध में उन्होंने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। “इस शुभ कार्य के दौरान मैं कब बिना छड़ी के चलने लगा यह मुझे ज्ञात ही नहीं हुआ”,गुरू जी मुस्कुरा कर याद करते हैं।

विदेश व्यापार 1986 तक चला। गुरूजी एवं मम्मी जी के कुछ मित्र तथा लंदन में बसे परिवार के सदस्यों ने उन्हें वहीं बस जाने की सलाह दी परन्तु वे दोनों अपनी मातृ-भूमि को छोड़कर अन्यत्र जाने को तैयार नहीं हुए।

श्री साई सच्चरित्र से हमें बाबा के अनन्य भक्त, श्री काकासाहेब दीक्षित के जीवन चरित्र के बारे में जानकारी मिलती है। मुझे उनका जीवन गुरू जी से मिलता-जुलता लगता है। काकासाहेब बम्बई के एक उच्च शिक्षित वकील थे। जब वह लंदन किसी कार्य से गये थे, तो उनका पैर रेलगाड़ी पर सवार

होने के समय फिसल गया था। उनके मित्र, श्री नानासाहेब चांदोरकर ने उन्हें शिरडी जा कर साई बाबा से पैर ठीक करने के लिये प्रार्थना करने का सुझाव दिया। 1909 में वे शिरडी आए और साई बाबा के दरबार में सदा के लिये दाखिल हो गये। श्री हेमाडपंत लिखते हैं कि बाबा ने काकासाहेब को कहा कि वे भी अपने भक्त की बहुत दिनों से प्रतीक्षा कर रहे थे। काकासाहेब ने बाबा को दंडवत प्रणाम किया तथा बाबा को अपने पैर की नहीं बल्कि अपने मन की पंगुता दूर करने का आशीर्वाद मांगा। उन्होंने अपना जीवन साई बाबा की सेवा में समर्पित कर दिया। उन्होंने वहाँ दीक्षित वाड़ा बनाया जो तीर्थ-यात्रियों के ठहरने के लिये उत्तम स्थान था। शिरडी उनका गृह-स्थान बन गया।

1982 में डॉ.मोतीलाल गुप्ता भारत लौट आए और लंदन का व्यापार बंद कर दिया परन्तु वस्त्रों का निर्यात इंग्लैंड तथा अमेरिका में निरन्तर चलता रहा। आगे चलकर 1986 में एक अलौकिक मोड़ आया, तद्पश्चात उन्होंने अपने व्यापार को बंद कर दिया और अपने जीवन को साई बाबा की सेवा में समर्पित कर दिया ।

अध्याय 3

1986 : अलौकिक ज्योति का वर्ष

"मेरा भक्त चाहे एक हज़ार कोस की दूरी पर ही क्यों न हो, वह धागे से बंधी हुई चिड़िया की भाँति शिरडी को खींचा चला आता है"

~ साई बाबा

श्री साई सच्चरित्र में कई दृष्टांत दिये गये हैं जिसमें बाबा अपने दिव्यता से लोगों को आकर्षित कर लिया करते थे। कई बार तो लोगों को पता भी नहीं होता था कि बाबा कौन हैं और शिरडी कहाँ है? वे भक्त अपनी अंतरात्मा की आवाज़ से बाबा तक खींचे चले आते थे। जब वे बाबा के श्री चरणों में नतमस्तक होते, तब उन्हें शान्ति का अनुभव होता, कई के रोग दूर हो जाते, कुछ लोगों को उनके सवालों के जवाब मिल जाते, कुछ अध्यात्म का मार्ग पकड़ लेते तो कुछ लोगों को लगता कि जैसे वे अपने घर पहुँच गये हों।

श्री साई सच्चरित्र के लेखक श्री हेमाडपंत बाबा के पास मस्जिद तक कैसे पहुँचे, उसकी चर्चा करते हैं। उनकी मित्रता श्री काकासाहेब दीक्षित तथा श्री नानासाहेब चांदोरकर से हुई थी। ये दोनों बाबा की लीलाएँ बताते थे तथा उन्हें शिरडी जाने को कहते थे। परिणाम स्वरूप हेमाडपंत का भाग्य उदय हुआ और उन्हें शिरडी जाने का अवसर मिला। वह बाबा के प्रथम दर्शन का दृष्टांत कुछ इस प्रकार वर्णित करते हैं -

"मेरी इन्द्रियाँ तृप्त हो गईं । क्षुधा और तृषा की सुधि जाती रही। जिस क्षण से बाबा के भवविनाशक चरणों का स्पर्श प्राप्त हुआ, मेरे जीवन में एक नूतन आनन्द-प्रवाह बहने लगा। मैं मित्रों का सदैव के लिये ऋणी हो गया। उनका यह उपकार मैं कभी भूल न सकूँगा। मैं सदा उनका स्मरण कर उन्हें मानसिक प्रणाम किया करता हूँ। जैसा कि मेरे अनुभव में आया कि साई के

दर्शन में ही यह विशेषता है कि विचार-परिवर्तन तथा पिछले कर्मों का प्रभाव शीघ्र मंद पड़ने लगता है और शनैः शनैः अनासक्ति और सांसारिक भोगों से वैराग्य बढ़ता जाता है। केवल गत जन्मों के अनेक शुभ संस्कार एकत्रित होने पर ही ऐसा दर्शन प्राप्त होना सुलभ हो सकता है। यदि आप साई बाबा को एक दृष्टि भर देख लेंगे तो आपको संपूर्ण विश्व ही साईमय दिखलाई देगा"।

दूसरी कथा एक अन्य भक्त श्री तात्यासाहेब नूलकर की है जो 1909 में पंढरपुर में उपन्यायाधीश थे। श्री नूलकर संतों में विश्वास नहीं करते थे। उसी समय श्री नानासाहेब चांदोरकर भी पंढरपुर में मामलातदार के पद पर कार्यरत थे। वह बहुधा साई बाबा के आशीर्वाद के बारे में बताया करते थे। आखिरकार श्री नूलकर ने शिरडी जाने का निश्चय किया। वहाँ जाकर वे बाबा के अनन्य भक्त बन गये, शिरडी को ही अपना गृह बना लिया तथा अपना शरीर साई-चरणों में ही विसर्जित किया।

बूढे हाजी की कथा भी ध्यान देने योग्य है जिन्हें प्रारंभ में मस्जिद में प्रवेश की अनुमति नहीं मिली परन्तु उनकी भक्ति तथा शामा, जो बाबा के अनन्य भक्त थे, की आग्रहपूर्ण विनती से साई बाबा ने उन्हें मस्जिद में प्रवेश की अनुमति दी। बूढ़े हाजी साई के सच्चे सेवक बने। बाबा ने हाजी को अपना स्नेह और संरक्षण दिया।

यह बात जानने योग्य है कि सबको बाबा के दरबार में दाखिला नहीं मिलता था। कई लोगों को प्रारम्भ में मस्जिद में प्रवेश नहीं मिलता था पर वो लोग जो बाबा के आशीर्वाद के प्रयास में निरन्तर रहते थे, उनको एक न एक दिन बाबा का आशीर्वाद मिल ही जाता था। बहुत बार भक्तों को स्वयं ही अपनी त्रुटि ज्ञात हो जाती जिसके कारण उन्हें अस्वीकार किया गया था। परन्तु बाबा के सर्वव्यापी स्वरूप पर भक्तों का विश्वास, धैर्य और प्रायश्चित उन्हें दूसरा मौका दे देता था ताकि उन्हें बाबा का आशीर्वाद प्राप्त हो सके।

जिन लोगों पर प्रभु की कृपा हुई, वे साई के दरबार में सम्मिलित हो गए। ये वो लोग थे जो बाबा के प्रेम, मानवता तथा सेवा-भाव की शिक्षा का

अनुसरण करते थे। बाबा सदा अपने भक्तों से प्रेम करते थे तथा उनकी रक्षा करते थे। उन सौभाग्यशाली भक्तों पर कोई आँच नहीं आती थी क्योंकि वे साई के मातृत्व के संरक्षण में रहते थे। बाबा उनके जीवन तथा जीवनोपरांत की बागडोर स्वयं ही संभालते थे।

दयालु फकीर साई ने अपने महासमाधि के बाद भी भक्तों को अपनाया और आशीर्वाद दिया। संत जीवन-मरण के भेद से परे होते हैं। यह संभव है कि जो पाठक इस जीवन चरित्र को पढ़ रहा है वह भी साई की अनुकंपा से लाभान्वित हुआ हो। लेखिका को भी अपने जीवन की डगर पर साई के अस्तित्व का आभास है।

डॉ.मोतीलाल गुप्ता साई बाबा के उन भाग्यशाली भक्तों में से हैं जिन्हें बाबा ने स्वयं ही अपनी तरफ आकर्षित किया तथा उन्हें मानवता की सेवा करने के लिये माध्यम बनाया। साई के सर्वस्व शरणागति में रह कर वे भक्ति-भाव से गरीब व वंचितों की सेवा कर अपना दायित्व निर्वाह कर रहे हैं। यह परम भक्त साई के विशेष कृपा के पात्र हो गये हैं। गुरू जी का आशीर्वाद साई के आशीर्वाद के समतुल्य है।

1986 में बाबा ने उन्हें किस प्रकार स्वीकर कर आशीर्वादित किया, गुरु जी अब इसका उल्लेख करने जा रहे हैं। "जीवनी तो 1986 से शुरू करनी चाहिए। क्या उसके पहले कुछ लिखने योग्य है?", वह मुझसे बहुत नम्रता से पूछते हैं। "गुरू जी आपके जीवन के प्रत्येक चरण में एक नया स्वाद है, कृपया पाठकों को इसका रसास्वादन करने के लिये अनुमति दें", मैंने जवाब दिया। कर्म और भक्ति जीवन के दो स्तम्भ हैं जो हमें लक्ष्य की ओर संचालित करते हैं। इस तरह गुरू जी का भी जीवन दो भागों में बाँटा जा सकता है। 1986 से पहले का जीवन कर्म के सिद्धांत का प्रदर्शन है। 1986 के बाद का जीवन साई-भक्ति से परिपूर्ण है।

विगत दस वर्षों से मैं गुरूजी को बाबा के प्रतिबिम्ब के रूप में देखती हूँ। वे क्यों और कैसे हमारे सद्गुरु के प्रतिबिंब हैं, यह सवाल न कभी पूछा

और न आगे पूछने का कोई इरादा है। मैं एक साधारण, मध्यम दर्जे की छात्रा रही हूँ तो ये तात्पर्य मेरे लिये समझ पाना कठिन है। विज्ञान और गणित से जूझते हुए मेरे लिये तो प्रकृति के नियम समझना मुश्किल था। संसार की विस्मयकारी व्यवस्था जो प्रकृति के नियमों से संचालित नहीं होती उसे मैं कैसे समझ पाती? मेरे लिये तो साई सच्चरित्र पढ़ना ही अध्यात्म का पाठ है जिससे मुझे सबके प्रति भाईचारे और सेवा की भावना की शिक्षा मिलती है। मेरा विश्वास है कि जो कोई भी इस सरल मार्ग को अपनाएगा, वो जीवन की पहेली हल कर सकेगा। ईश्वर और भक्त का यह अलौकिक बंधन मैं स्वयं न समझ पाती, न ही दूसरों को समझा पाती।

जीवनी-लेखन के इस चुनौती भरे कार्य के लिये मैं अपने को असमर्थ समझती हूँ। परन्तु जब मैं लोदी रोड के साई मंदिर में प्रभु के समक्ष थी तो मेरी अंतरात्मा से एक आवाज उठी कि मैं गुरू जी से इस विस्मयकारी विशिष्ट चरित्र के बारे में जानकारी हासिल करूँ कि उन्हें मानवता की सेवा करने की शक्ति कहाँ से आती है। मैं इस ज्ञान को सब से साझा करना चाहती हूँ। मैंने साई बाबा की एक फोटो साई मन्दिर के पास की दुकान से खरीदी जो भागयवश वही फोटो थी जो गुरु जी के घर के उस कमरे में टंगी थी जहाँ मैं अपने मसूडों के ईलाज के लिये रूकी थी। मैंने उस फोटो को अपनी स्टडी टेबल पर लैपटॉप के बगल में लगा दिया। उसके बाद मुझे यह ज्ञात नहीं कि मैं जीवनी कैसे लिख पा रही हूँ।

मुझे यह पुण्य कार्य साई कृपा से मिला है। साई बाबा जब कोई कार्य सौंपते हैं तो उसे संपादित करने के लिये तन और मन को क्षमता भी प्रदान करते हैं। ऐसा माने कि एक तरह से बाबा स्वयं ही इस कार्य के निर्वहन कर्ता हैं। लेखिका को किसी तरह की चिन्ता की आवश्यकता नहीं है। इस प्रकार मुझे मेरे गुरू और मार्गदर्शक के पुण्य जीवन चरित्र को सुनने का अनमोल अवसर मिला जिसे मैं उन लोगों तक पहुँचा सकूँ जिन्हें इसे पढ़ने की इच्छा है।

1986, 10 अप्रैल वृहस्पतिवार का दिन। गुरूजी अब अपने जीवन के सबसे पवित्र क्षण का उल्लेख करते हैं- “प्रत्येक वृहस्पतिवार को श्रीमति

कान्ता गुप्ता नई दिल्ली के लोदी रोड स्थित शिरडी साई बाबा के मंदिर जाया करती थीं। उस दिन उन्होंने अपने पति से उन्हें मंदिर तक छोड़ने का आग्रह किया। डॉ. गुप्ता अपने किसी कार्य से कनॉट प्लेस जा रहे थे। जैसे ही उन्होंने अपनी पत्नी को मंदिर के सामने उतारा तभी उनकी अंतरात्मा से एक आवाज उठी कि वे भी मंदिर की दहलीज़ पार कर बाबा के समक्ष उपस्थित हों। वे जैसे ही गर्भ-गृह तक पहुँचे उन्हें पहली बार यह एहसास हुआ कि वे जन्मों-जन्मों से साई के भक्त हैं।

"जब मैं मंदिर में खड़ा हुआ तो मुझे प्रतीत हुआ कि मैं बाबा में लीन हो गया हूँ और बाबा मेरे हृदय में समा गये हैं। साई के लिये अनन्य भक्ति उमड़ पड़ी"। जिस तरह हनुमान अपने ईष्ट श्री राम के प्रतिबिंब मात्र हैं, उसी प्रकार डॉ. गुप्ता को अनूभूति हुई कि वह साई के एक नम्र सेवक हैं। उनका अस्तित्व सिर्फ अपने मालिक की सेवा और भक्ति के लिये है। डॉ. गुप्ता ने यह दृढ़ निश्चय किया कि अब से वह साई-सेवा में समर्पित हो जाएँगे। उन्होंने अपना व्यावसायिक जीवन त्याग दिया और अपने सद्‌गुरु की सेवा में लीन हो गए।

कुछ सप्ताह बाद गुरूजी शिरडी गये और उन्होंने साई बाबा के समाधि मंदिर में अपनी प्रार्थना अर्पित की। एक बार उन्होंने शिरडी से बाबा की एक मूर्ति खरीदी। वह बाबा के प्रेम से इतने आनंदित हुए कि उन्होंने बाबा की प्रतिमा को गोद में रखकर शिरडी से बम्बई और फिर बम्बई से नई दिल्ली तक का सफर तय किया। बाबा की मूर्ति का उनके घर में बड़े उल्लास से स्वागत हुआ।

श्री साई सच्चरित्र में यह उल्लेख है कि बाबा ने भक्तों को उनकी इच्छा अनुसार भक्ति करने का अवसर दिया। एक भेड़ों की चरवाहिन बाबा के चरण दबाकर सेवा करती, भागोजी, जो कुष्ट रोगी थे, वो अपनी सेवा बाबा का छत्र पकड़कर तथा उन्हें छाया देकर किया करते, कुछ भक्त बाबा की मस्जिद में आकर नमाज अदा करते तथा शिव-भक्त मेघ बाबा की पूजा बेल पत्र चढ़ाकर तथा गंगा जल से स्नान करा कर करते। कुछ लोग मुहर्रम के

पहले मस्जिद में ताजिया रखते तथा कुछ लोग रामनवमी के शुभ अवसर पर गोपाल कला उत्सव मनाते। बाबा अपने भक्तों का यह अलग-अलग भाँति का प्रेम हमेशा स्वीकार करते।

डॉ. गुप्ता बाबा की भक्ति किस प्रकार से शुरू करें, उन्हें ज्ञात नहीं था। बाबा की कृपा से उन्हें एक दैविक प्रेरणा मिली जिसमें उन्हें लगा कि उन्हें लोदी रोड के साई मन्दिर में 40 दिनों तक जाकर पूजा-पाठ की पद्धति सीखनी चाहिए। 40 दिनों तक यह भक्तिमय दंपति प्रातः 6 बजे ही खिचड़ी लेकर मंदिर पहुँच जाता। इस खिचड़ी को वे प्रसाद के तौर पर चढ़ा देते तथा 8 बजे की आरती के बाद यह प्रसाद लोगों में वितरण कर दिया करते।

“पहले दिन हमने देखा कि लोग एक पुस्तिका से श्लोक का उच्चारण कर रहे हैं। लोगों ने बताया कि यह पुस्तिका पास की दुकान से खरीदी जा सकती है। मैं तुरन्त जाकर दो पुस्तिकाएँ खरीद लाया, एक अपने लिये तथा एक कान्ता के लिए”। श्रीमती और श्री गुप्ता जी मंदिर में काफी समय व्यतीत करते थे। वे ध्यान से पूजन-अर्चन की सारी गतिविधियों को देखते थे जैसे कि स्नान, अभिषेक, आरती तथा प्रसाद-अर्पण आदि। इसके उपरांत वे खिचड़ी-प्रसाद सभी लोगों में वितरण कर दिया करते थे। “हम लोगों को कतार में खड़े होने के लिये कहते थे। लोग हमें ‘खिचड़ी वाले बाबू’ के नाम से पुकारने लगे”। गुरू जी यादों को समेटने लगते हैं।

गुरूजी अष्टोत्तरशत नामावली (साई के 108 नाम जो अभिषेक के समय उच्चरित किया जाता है) कंठस्थ करना चाहते थे। संस्कृत उनके लिये नया विषय था। डॉ. गुप्ता कोई भी नई विद्या बड़े लगन से सीखते हैं। एक पारिवारिक मित्र तथा साई-भक्त श्रीमती आभा मित्तल की मदद से उन्होंने नामावली का अनुवाद तथा उच्चारण हिन्दी तथा अंग्रेजी में लिखना एवं पढ़ना सीखा। गुरू जी ने इस प्रकार सीख कर मंत्रों को कंठस्थ कर लिया। स्व. सुरेश चन्द्र गुप्ता, अनन्य साई-भक्त थे जिन्होंने लोदी रोड के मन्दिर, जो की शिरडी की तरह ही पवित्र तीर्थ बन गया है, के लिये ज़मीन मुहैया करने में अग्रणी भूमिका निभाई थी। सुरेश गुप्ता जी, मोतीलाल गुप्ता के गुरू बन गये

और उन्हें साई के उपदेशों से अवगत कराया। गुरूजी की भक्ति दिन प्रति दिन प्रगाढ़ होती गई क्योंकि निर्देशक तो स्वयं साई बाबा थे।

1986 के अक्टूबर में गुप्ता परिवार की फरीदाबाद की 15 एकड़ की पुश्तैनी ज़मीन बेची जाने वाली थी। इस क्रय से अर्जित धन छह भाई बहनों एवं माता जी में विभाजित करने का निश्चय किया गया था। ख़रीदार को भुगतान अगले दिन करना था। उसी रात गुरूजी को साई बाबा का स्वप्न आया। उन्हें निर्देश मिला कि वो ज़मीन स्वयं खरीद लें। अगली सुबह उन्होंने अपने बड़े भाई से संपूर्ण ज़मीन खरीदने की इच्छा जताई। उसी समय संयोग वश खरीदार ने गुरू जी के बड़े भाई से मूल्य कम करने का अनुरोध किया क्योंकि तय मूल्य उनके परिवार को स्वीकार नहीं था। डॉ. गुप्ता ने उसी मूल्य पर ज़मीन खरीद ली और मामला वहीं पर थम गया। इसी ज़मीन के 3 एकड़ पर आज साई धाम स्थापित है।

फरवरी 1987 में गुरू जी को बाबा का अलौकिक दर्शन पुनः हुआ। उन्हें साई मंदिर बनाने का आदेश, मानवता की सेवा तथा बाबा के प्रेम और सद्भावना का संदेश फैलाने की आज्ञा मिली। डॉ. गुप्ता ने 3 एकड़ ज़मीन साई धाम के नाम दर्ज कर दी। उन्हें ट्रस्ट बनाने की तकनीकी बारीकियों की जानकारी नहीं थी। "जब मैंने एक आर्किटेक्ट से मंदिर बनाने को कहा तो मुझसे कई जानकारियाँ माँगी गई जैसे कि किस तरह का नक्शा होगा, उसके निर्देशकगण कौन लोग होंगे, आर्थिक व्यय कितना होगा इत्यादि जिसका उस समय मेरे पास कोई उत्तर नहीं था। मैं तो बस यही जानता था कि मुझे मुंदिर बनाना है और बाबा का संदेश फैलाना है", गुरू जी याद करते हैं।

डॉ. गुप्ता ने ज़मीन के चारों तरफ घेरा बंदी कर दी तथा एक छोटा फाटक लगा दिया। उन्होंने 8x4 फुट की एक स्टील का चादर खरीदा, दो लोहे के खंभे अपने फरीदाबाद के पुराने घर के गैरेज से ले आए जिसे जोड़ दिया गया। इस साईन बोर्ड पर लिखा गया 'शिरडी साई बाबा का प्रस्तावित टेम्पल' और इस बोर्ड को ज़मीन के अगले हिस्से के कोने पर लगा दिया गया।

गुरू जी अपने सरिता विहार स्थित निवास से वैन चलाकर फरीदाबाद रोज़ आने लगे। यह ज़मीन रोड से दूर, जंगलों के बीचों-बीच स्थित थी। फरीदाबाद अभी धीरे-धीरे शहरीकरण की तरफ बढ़ ही रहा था। कोई पक्की सड़क न होने के कारण उस ज़मीन तक पहुँच पाना कठिन था। शुरू में यहाँ बिजली की भी सुविधा नहीं थी। यह जगह आपराधिक गतिविधियों के लिये जानी जाती थी। इस जगह पर एक संस्था की स्थापना करने के लिये अदम्य साहस की आवश्यकता थी। परन्तु डॉ.मोतीलाल गुप्ता का प्रभु साई पर अटूट विश्वास और दृढ़ संकल्प की वजह से वे इस सुदूर ज़मीन पर संस्था स्थापित करने की चुनौती को स्वीकार कर सके। उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। परन्तु उनका निराकरण गुप्ता-दंपति ने बहुत सूझ-बूझ और धैर्य से किया। यह उनका विश्वास और साहस ही था कि वे साई धाम के रूप में इस बंजर धरती पर स्वर्ग उतार लाए।

डॉ. गुप्ता ने ज़मीन की साफ-सफाई व नवीनीकरण का कार्य न ही सिर्फ संभाला बल्कि मजदूरों का हाथ भी बँटाया। मेंहदी की झाड़ियों को निकलवाया गया, पुराने कुएँ को भरवाया गया, नालियों को बंद करवाया गया और ज़मीन के सामने के हिस्से को समतल बनाया गया।

"मैंने बाबा के फोटो को पीपल के पेड़ के नीचे रख दिया और बाबा ने स्वयं साई धाम में अपना स्थान ग्रहण किया", गुरू जी ने कहा। ज़मीन के पहरेदार को यह कार्य सौंपा गया कि बाबा की फोटो को दिन में पीपल के पेड़ के नीचे रख दे तथा रात होने पर एक पुराने छोटे कमरे में विराजमान कर दे। आगे चलकर एक बड़ा कमरा, लगभग 20x26 फीट का बनाया गया और छोटे कमरे को तोड़ दिया गया। यह ध्यान देने योग्य बात है कि डॉ. गुप्ता को कमरों के नाप, जो 1986 से आज तक साई धाम में बने हैं, वह कंठस्थ है। पहरेदार को बाबा की पूजा-पाठ का ज़िम्मा सौंपा गया। उसे बाबा की फोटो के पास अगरबत्ती तथा दिया जलाने का कार्य, सभी आगंतुकों में प्रसाद वितरण तथा शिरडी साई बाबा के मंदिर के निर्माण की सूचना देने को कहा गया। उन दिनों उत्तर भारत में बहुत कम लोगों को साई बाबा के बारे

में जानकारी थी। प्रायः जंगली जानवर घेराबंदी के अंदर घुस कर उत्पात मचाते थे। जो थोड़ा बहुत पैसा इकट्ठा होता था, चोर उसे लूट ले जाते थे। एक बार कुछ गुंडों ने पहरेदार को रस्सी से बांधकर गुल्लक की चोरी कर ली तो एक दफ़े भजन के लिये खरीदा गया लाउडस्पीकर चोरी हो गया। कुर्सी टेबल उठा लिये गये तथा कुछ उपद्रवी तत्त्व तोड़ फोड़ भी मचा देते, जैसे बिजली की बत्ती तोड़ देना या शौचालय को नुकसान पहुँचाना। परन्तु गुप्ता-दंपति इन सब शरारतों से कभी विचलित नहीं हुए। वे टूटे-फूटे सामान उठाकर फिर से जोड़ने में लग जाते। उनकी राह में कई बाधाएं आईं, परन्तु वे अपने गंतव्य की तरफ निरंतर बढ़ते ही चले गये।

श्री साई सच्चरित्र में विवरण है कि आज जहाँ समाधि मंदिर है, वहाँ बाबा द्वारा सिंचित एक सुन्दर बगीचा हुआ करता था। बाबा जई और जूही के पौधे ले आते तथा उसे बगीचे में लगा देते। बाबा के भक्त, श्री वामन तात्या पेशे से कुम्हार थे, वे उनके लिये रोज़ दो कच्चे घड़े ले आते। बाबा उन्हीं घड़ों में पानी भर कर पौधों को सींचा करते थे। इस तरह वहाँ पर सुन्दर बगीचा तैयार हो गया।

ठीक इसी तरह गुरू जी ने भी मन्दिर बनने वाले स्थल पर एक सुन्दर उद्यान बनाया जिसमें सुन्दर फूल और हरी मखमली घास उगाई गई। डॉ. गुप्ता एक पर्यावरणविद मनुष्य हैं जो वृक्ष लगाने की वकालत करते हैं और साई धाम को हरा-भरा रखने का भरपूर प्रयास करते हैं। उन्होंने सब्जी की भी खेती की। उन्हें एक घटना याद आती है जब वे और मम्मी जी चंडीगढ़ किसी सम्मेलन में भाग लेने जा रहे थे जो साई-भक्तों के लिये आयोजित था। वे वहाँ के भंडारे के लिये साई धाम से दो बोरी बैंगन लेकर गये थे। उन्होंने वहाँ बाबा की प्रतिमा को संगमरमर के आसन पर देखा। डॉ. गुप्ता को यह आसन पसन्द आया। फरीदाबाद लौटने पर उन्होंने तय किया कि यहाँ भी बाबा की प्रतिमा को संगमरमर के चबूतरे पर विराजमान कर दूँ, उस नये भवन में जो बनाया गया था। साई-भक्त श्री जगदीश प्रसाद, जो डॉ. गुप्ता के मित्र भी थे, उन्होंने प्रतिमा खरीदने का खर्च वहन किया। इस छोटे से मंदिर

में बाबा की यथावत पूजा एवं आरती उसी तरह होती रही जिस तरह से शिरडी में द्वारकामाई मस्जिद में हुआ करती है।

साई धाम का प्रथम भजन एवं भंडारा 1987 में दशहरा के पावन अवसर पर आयोजित किया गया। यह भी श्री जगदीश प्रसाद द्वारा ही प्रायोजित था। "हमें यह ज्ञात नही था कि दशहरा साई बाबा का महासमाधि दिवस है तथा साई-भक्तों के लिये विशेष तौर पर महत्त्वपूर्ण है"। पूरी-सब्जी का प्रसाद लोगों में बाँटा गया। डॉ. गुप्ता को याद है कि आरती के पश्चात गरीब बच्चे बार-बार प्रसाद लेने चले आते थे। कभी-कभी वे आपस में वस्त्र बदलकर आते थे ताकि प्रसाद पुनःपुनः लेने पर वे पहचाने न जाएँ। यह डॉ. गुप्ता के लिये बड़ा सबक था। उन्होंने इस बात को समझा कि जो गरीब वंचित बच्चे थे, वे भूख से अभिभूत हो कर बार-बार भोजन लेने आते और कुछ अपने परिवार वालों के लिये भी ले जाते। इसी घटना ने शिरडी साई बाबा स्कूल को स्थापित करने के लिए उनके मन में बीजारोपण कर दिया।

अगले महीने, नवंबर में, डॉ. गुप्ता के चचेरे भाई ने भजन एवं भंडारा अपने जन्मदिन के अवसर पर आयोजित किया। दिसम्बर के महीने में यह भजन-भंडारा गुरूजी के जन्मदिन के अवसर पर आयोजित किया गया। एक मशहूर गायक तथा साई-भक्त भजन में भाग नहीं ले सके क्योंकि उन तक इस आयोजन की जानकारी नहीं पहुँच सकी। इस घटना के बाद गुरू जी ने यह तय किया कि भजन और भंडारे का आयोजन प्रत्येक महीने के दूसरे रविवार को किया जाए ताकि सभी को इस बात की जानकारी रहे। इस तरह दिन निर्धारित कर देने से भक्त, मित्रगण, रिश्तेदार तथा वहाँ रहने वाले लोगों को पहले से ही कार्यक्रम की जानकारी रहती थी तथा वे तय समय पर उपस्थित होकर उत्सव-आयोजन में भाग लेते थे। उन दिनों टेलिफोन की सुविधा बहुत प्रचलित नहीं थी इसलिये लोगों को सूचित करना कठिन था। "दिल्ली से फरीदाबाद जाते समय अगर हमें किसी गाड़ी पर बाबा का फोटो लगा हुआ मिलता तो हम उनका पीछा करते तथा किसी ट्रेफिक लाईट पर

रुकने पर हम उन्हें साई धाम के बारे में बताते तथा भजन-भंडारे में आने का आमंत्रण देते", गुरू जी बड़े उत्साहपूर्वक हमें यह बताते हैं।

चाहे कुछ भी हो जाए, डॉ.मोतीलाल गुप्ता तथा श्रीमती कान्ता गुप्ता दिल्ली से फरीदाबाद प्रत्येक महीने के दूसरे रविवार को प्रातः ही भजन-भंडारे के आयोजन के लिये प्रस्थान कर देते थे। उस दिन तम्बू लगाया जाता था, हलवाई बुलाये जाते थे, राशन की खरीदारी तथा अन्य कई तरह की व्यवस्था की जाती थी। "हमने सूचना पट्ट पर तीर के निशान बना कर महत्त्वपूर्ण जगहों पर लगा दिये ताकि लोगों को साई धाम तक पहुँचने का दिशा-निर्देश मिल जाए, उन दिनों 'गूगल मैप' तो था नहीं", गुरूजी मुस्कुराते हुए हमें बताते हैं। "एक सज्जन पुरूष को जब हमारे सूचना-पट्ट के बारे में ज्ञात हुआ तो उन्होंने उसकी रंगाई का खर्च उठाने की पेशकश की। परन्तु कुछ समय बाद नगर निगम ने अधिकांश सूचना-पट्ट हटवा दिए"।

ज्यादा-से-ज्यादा लोग अब साई धाम से जुड़ने लगे। भजन का आयोजन अब लोगों के घरों में भी होने लगा। उन दिनों उत्तर भारत में इस महान संत साई बाबा और उनके प्रवचनों और चमत्कारी आशीषों को जानने वाले कम लोग थे। गुरू जी साई का उपदेश चहुँ-ओर फैलाना चाहते थे। भजनों के माध्यम से भक्तगण आनंदित हो कर बाबा के उपदेशों का गुणगान करते थे। कई भक्त इन भजन गायकों को अपने घर पर आमंत्रित करना चाहते थे ताकि उनका घर भी इन भजनों के साथ खुशी से झूम उठे। इससे उत्तम ईश्वर की क्या साधना हो सकती है? इन भजनों में भक्त भक्ति से ओत-प्रोत हो जाते थे और उन्हें परमानन्द तथा पूर्ण शांति की प्राप्ति होती थी।

गुरू जी की बड़ी भाभी, श्रीमती शारदा अग्रवाल बाबा की अनन्य भक्त थीं जिन्होंने कई मधुर भजनों की रचना की तथा अपने स्वरों से सजाया और जिनका ढोलकी की ताल पर साथ दिया एक अन्य साई-भक्त, श्रीमती शीला भाटिया ने। श्रीमती भाटिया साई धाम की सक्रिय सदस्या थीं। वे साई-भक्तों

के घरों में भजनों के आयोजन का कार्यभार संभालती थीं। इस तरह साई के उपदेशों का प्रचार किया जाता था एवं साथ ही साथ साई धाम के उद्देश्य से भी अवगत कराया जाता था। डॉ. गुप्ता की यह भजन मंडली काफी लोकप्रिय हो गयी और ज्यादा-से-ज्यादा लोग इससे जुड़ गये। बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय के स्वर्ण पदक धारक तथा एक सफल व्यवसायी ने सांसारिक सम्मान त्याग कर घर-घर भजन गा कर साई बाबा का संदेश जन-जन में फैलाने का शुभ कार्य किया।

कुछ लोगों ने आपत्ति जताई कि अनपढ़ गाँव वाले, जो साई बाबा को जानते भी नहीं थे, उन्हें भजन और भंडारे में क्यों सम्मिलित किया जाता है। उन लोगों ने शंका जताई कि गाँव के ये लोग रात में लूटपाट मचाते हैं और साई धाम को नुकसान पहुँचाते हैं। उन लोगों को गुरू जी ने समझाया कि बाबा के उपदेश को फैलाने के लिये किसी तरह का भेदभाव नहीं करना चाहिये। साई बाबा के प्रवचनों एवं उपदेशों से किसी को भी वंचित नहीं किया जा सकता। गरीब, अमीर, विद्वान, अनपढ़, विभिन्न धर्मों के लोग, सभी को बाबा के उपदेशों को सुनने का सम्पूर्ण अधिकार है। बाबा की दया दृष्टि तथा उनके उपदेश सभी के लिये समतुल्य हैं जैसे की सूर्य की किरणें बिना किसी भेद-भाव के सारी दिशाओं का अंधकार मिटाती हैं।

1988 में डॉ. गुप्ता ने सूचना एवं प्रसारण मंत्री से निवेदन किया कि मशहूर अभिनेता मनोज कुमार द्वारा निर्मित फिल्म 'शिरडी के साई बाबा' का दूरदर्शन पर रविवार के दिन प्रसारण किया जाए। यह फिल्म बाबा की जीवनी, श्री साई सच्चरित्र पर आधारित है। "इस प्रकार हम साई सच्चरित्र तथा उसके उपदेशों को जन-मानस तक पहुँचा सके", गुरू जी ने हमें समझाया।

संस्थान के दैनिक खर्च के लिये डॉ. गुप्ता की संचित आय का उपयोग किया जाता। कुछ भक्तों ने दान देना प्रारंभ किया तथा उन लोगों ने अपने परिवार वालों तथा मित्रों से भी सहयोग करने का निवेदन किया। 10 रूपये की रसीद भक्तों को उनके दान के एवज मे दी जाने लगी।

प्रथम 10 वर्ष साई धाम के लिये संघर्ष के वर्ष थे। शुरू के दिनों में यहाँ यातायात के लिये सिर्फ एक टूटा-फूटा मार्ग था। उन दिनों ओटो रिक्शा भी दो मील जाने के बाद ही मिल पाता था। वहाँ के स्थानीय लोगों की यह जिज्ञासा थी कि साई बाबा कौन हैं? यातायात के साधन नहीं होने के कारण आगतुंकों को भजन में सम्मिलित होने के लिये प्रोत्साहित करना आसान नहीं था। डॉ. मोतीलाल गुप्ता तथा श्रीमती कान्ता गुप्ता अपने संकल्प पर दृढ़ थे और साई धाम के संकल्पों को विस्तार देने के लिये निरन्तर प्रयासरत रहते थे। उन्होंने ज्यादा से ज्यादा लोगों को साई धाम से जोड़ने का हर-संभव प्रयास किया क्योंकि कोई भी संस्थान लोगों के जुड़ाव से ही परिभाषित होती है। पर्चे बाँटे जाते थे तथा महत्त्वपूर्ण स्थानों के सूचना-पट्ट पर चिपकाये जाते थे। गुप्ता दंपति की ही तरह उन भक्तों को भी श्रेय जाता है जो अपनी निरंतर भक्ति और साई धाम के प्रति लगाव के साथ अन्य लोगों को भी जुड़ने के लिये प्रोत्साहित करते थे।

समय के साथ डॉ.मोतीलाल गुप्ता द्वारा आरंभ किया गया कारवाँ बढ़ता ही गया। अधिक से अधिक जनता भजन कार्यक्रमों से जुड़ती चली गई और वर्तमान का मंदिर परिसर बड़े पैमाने के कार्यक्रम के लिये छोटा पड़ने लगा एवं एक बड़े मंदिर परिसर की आवश्यकता महसूस होने लगी। नये मंदिर बनाने के लिये धनराशि कहाँ से जुटाई जाए, यह एक बड़ा सवाल था। जो भी धनराशि इकट्ठा होती, वह तो साई धाम मन्दिर के कार्य-कलापों के लिये ही कम पड़ती थी और दान द्वारा पैसा जमा करने में अधिक समय लग जाता परन्तु भाग्य में कुछ और ही लिखा था।

1996 में डॉ.गुप्ता ने सेहतपुर ग्राम, जो दिल्ली सीमा के पास है, वहाँ की अपनी साढ़े सात एकड़ ज़मीन को विक्रय करने का चिंतन किया। कुछ ही महीनों के अन्दर उस क्षेत्र के भूखण्ड का मूल्य चमत्कारिक तौर से बढ़ गया और डॉ. गुप्ता की ज़मीन की बिक्री उम्मीद से ज्यादा, दोगुनी मूल्य में बिकी। यह इतना आसान कार्य नहीं था क्योंकि एक मिथ्य आलेखन का केस श्रीमती कान्ता गुप्ता के विरोध में दर्ज़ कर दिया गया चूंकि भूखंड उन्हीं के नाम से पंजीकृत था। परन्तु न्याय डॉ. गुप्ता के पक्ष में ही हुआ।

अब डॉ. गुप्ता के पास यथेष्ठ धनराशि आ गई तथा उन्हें किसी अन्य पर निर्भर होने की आवश्यकता नहीं पड़ी। उन्होंने स्वयं ही साई धाम के मन्दिर का निर्माण करवाया। 19-21 अक्टूबर, 1997 को बाबा की मूर्ति की स्थापना सभी संस्कारों और रीति-रिवाज के साथ तीन दिनों में संपन्न हुई। इसी दौरान भक्तों का एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस समारोह को अविस्मरणीय बनाने के लिये विश्व के कई स्थानों से साई-भक्त भाग लेने आए। डॉ. गुप्ता ने विशेष तौर से सम्मेलन के पर्चे शिरडी में तीर्थ-यात्रियों के बीच जानकारी के लिये बँटवाये। एक बम्बई के रहने वाले साई-भक्त, श्री आर.के.अग्रवाल को जब साई धाम के बारे में पता चला तब उन्होंने मंदिर के लिये बाबा की श्वेत संगमरमर की मूर्ति को प्रायोजित करने की पेशकश की। दिल्ली एवं फरीदाबाद के साई-भक्तों ने सम्मेलन में अपनी अग्रणी भूमिका निभाई तथा आयोजन में बढ़-चढ़ कर भागीदारी ली। इसमें भागीदारी निभाने वाले कुछ प्रमुख लोग थे, स्व. श्री सुरेश चन्द्र गुप्ता, श्री एस.के. घई, श्री वी.एस कुबेर (जो सेवानिवृत आई.ए.एस अधिकारी थे)। इन्होंने इस सम्मेलन के आयोजन में प्रमुख भूमिका निभाई। एक बड़ा शामियाना बगीचे के अग्रिम भाग में खड़ा करवाया गया, परन्तु उद्‌घाटन समारोह के पूर्ण होते ही बहुत जोरों से वर्षा हुई जो कई दिनों तक होती रही। इसलिये शेष आयोजन नए भवन में बाबा के समक्ष आयोजित किये गए। डॉ. गुप्ता बाबा का संदेश जन-जन तक पहुँचाने के लिये दृढ़ थे तथा इस निश्चय से उन्हें कोई भी डिगा नहीं सकता था। समारोह अत्यंत सफल साबित हुआ।

डॉ. गुप्ता ने 1990 के दशक में अखिल भारतीय साई-भक्त समाज के उपाध्यक्ष का पदभार भी संभाला। यह संस्था वर्ष में एक बार किसी साई मंदिर में 'साई सम्मेलन' आयोजित किया करती थी। एक दफ़े यह सम्मेलन गरखल, हिमाचल प्रदेश में आयोजित होना था। डॉ. गुप्ता ने भक्तों को फरीदाबाद से गरखल पहुँचाने का उत्तरदायित्व ले लिया। चार बसों का इंतजाम किया गया। भक्तों को रेलवे स्टेशन तथा हवाई अड्डे से साई धाम, फरीदाबाद लाया गया। गरखल के लिये दूसेर दिन रवाना होना था। जैसे ही

बसें अपने गंतव्य के लिये चलीं, तभी बदरपुर सीमा पर एक बस की छोटी सी दुर्घटना हो गई। उस बस के सभी भक्तों को उनके सामान सहित बाकी के तीन बसों में व्यवस्थित करना पड़ा। पूरे जत्थे को गरखल दोपहर तक पहुँचना था किन्तु वे शाम चार बजे पहुँचे। भक्तों के ठहरने का इंतजाम विभिन्न धर्मशालाओं तथा स्कूलों में किया गया था। भक्तों के सामान, जो इधर-उधर हो गये थे, उसे व्यवस्थित करना पड़ा। पूरे प्रकरण की ज़िम्मेदारी डॉ. गुप्ता पर थी। पूरे दिन के घोर परिश्रम के बाद रात्रि में उन्हें काफी थकान महसूस हुई।

"उस दिन मुझे शौचालय जाने की भी फुर्सत नहीं मिल पाई", उन्होंने कहा। इंगलैंड की कार दुर्घटना में जो उनके यूरेथ्रा में चोट लगी थी उससे वे आज भी जूझते हैं। मैंने गुरू जी से पूछा कि क्या अभी भी किसी तरह का कष्ट है तो उन्होंने जवाबा दिया "मुझे अभी भी यूरोलोजिस्ट के पास जाना पड़ता है तथा कई तरह के टेस्ट करवाने पड़ते हैं"। मैं हाल में दो बार गिर भी चुका हूँ"। यह सुन कर मैं सन्न रह गई।

"2017 की जुलाई में मैं शिरडी में पहली बार गिरा"। उस साल पहली अक्टूबर को सिरीफोर्ट औडिटोरियम में बाबा के महासमाधि दिवस का शताब्दी समारोह मनाया जा रहा था। समारोह आयोजन करने वाले सदस्यगण बाबा के समाधि मंदिर में बाबा का आशीर्वाद लेने पहुँचे थे। "पतलून पहनने के क्रम में मेरा पैर फँस गया और मैं गिर गया। मेरा सिर नल से टकराया और थोड़ा खून निकल आया"। इसके बावजूद गुरू जी ने नल बंद किया, उठे और समाधि मन्दिर की तरफ चल पड़े। उसी दिन सारा दल बंबई में लोगों को निमंत्रण देते हुए दिल्ली लौट आया। दिल्ली आने के पश्चात एक्स रे लिया गया पर फ्रैक्चर नहीं पाया गया। परन्तु कुल्हों में दर्द महसूस हो रहा था जो बढ़ता ही चला गया। तदुपरांत एक हड्डी विशेषज्ञ से परामर्श लेन के पश्चात एडवांस एक्स-रे तथा एम.आर.आई भी किया गया। इस बार एक हेयर-लाईन फ्रैक्चर पाया गया। जल्द स्वस्थ होने का उपचार बताया गया।

दूसरी बार वे 2019 के फरवरी में गिरे। गुरू जी को रात में थोड़ा दर्द महसूस हुआ जिसके लिये वो (नक्स वोमिका) एक होमियोपेथिक दवा लेना चाहते थे। वे गुसलखाने में कुल्ला करने गए। जब वे हाथ धो रहे थे तो बेहोश होकर ज़मीन पर गिर पड़े। थोड़ी देर में जब होश आया तो वे वापस कमरे में आ कर सो गए। दूसरे दिन उन्होंने अपनी दिनचर्या शुरू की और साई धाम पहुँच गए। दोपहर तक उनका रक्तचाप बढ़ गया। उन्हें तुरन्त अस्पताल लाया गया। डॉक्टरों को दिल की बीमारी का अंदेशा हुआ। जाँच पड़ताल के बाद सब कुछ ठीक पाया गया। बाद में डॉक्टरों ने यह निष्कर्ष निकाला कि उच्च रक्तचाप का कारण सर पर लगी चोट हो सकती थी। उच्च रक्तचाप के लिये दवा लेने पर पैरो में सूजन आ गयी है। गुरू जी के चलने-फिरने में जो सुधार हो रहा था, वह दूसरी बार गिरने से फिर बिगड़ गया।

यद्यपि कुछ महीनों के बाद चलने-फिरने में सुधार हो गया है परंतु हमें पता नहीं चल पाया कि दर्द अभी बचा है या नहीं। इस संदर्भ में मैं पूछती हूँ कि क्या गुरु जी ने साई बाबा से पूछा कि मैं क्यों गिरा? ये दर्द क्यों है? ये रास्ते के राड़े क्यों? इन सवालों के जवाब, जो हम बहुधा अपने जीवन में पूछा करते हैं उनका हल खोजने का प्रयास आगे के अध्यायों में किया गया है।

अध्याय 4
साई धाम की यात्रा

"यदि मैं किसी से एक रूपया दक्षिणा लेता हूँ तो उसे दस गुणा लौटाता हूँ। मैं किसी की कोई वस्तु बिना मूल्य नहीं लेता और न प्रत्येक से माँगता ही हूँ। जिसकी ओर फकीर (ईश्वर) इंगित करते हैं, उससे ही माँगता हूँ और जो गत जन्म का ऋणी होता है, उसकी दक्षिणा स्वीकार की जाती है। दानी देता है और भविष्य में सुन्दर उपज का बीजारोपण करता है। धन का उपयोग धर्मोपार्जन के निमित्त ही होना चाहिए। यदि धन व्यक्तिगत विलासिताओं में व्यय किया गया तो यह उसका दुरुपयोग है। यदि तुमने पूर्व जन्मों में दान नहीं दिया है तो इस जन्म में पाने की आशा कैसे रखते हो? इसलिये यदि प्राप्ति की आशा रखते हो तो अभी दान करो। दक्षिणा देने से वैराग्य की वृद्धि होती है और वैराग्य प्राप्ति से भक्ति और ज्ञान बढ़ जाते हैं। एक दो और दस गुणा लो"

~ साई बाबा

साई बाबा का इस जगत में अवतार गरीबों और असहायों के कल्याण के निमित्त था। बाबा की प्रत्येक कहानी में एक ही प्रसंग होता है कि कैसे उन्होंने जन-मानस की सहायता की, खुशियाँ बाँटी, सुरक्षा प्रदान की या शांति दी। कई बार तो वे दूसरों के कष्ट-हरण के लिये स्वयं कष्ट सहते थे। इस निर्धन फकीर के परोपकार का विस्तार मनुष्य की समझ के परे है। बाबा की अनगिनत लीलाएँ हैं जिसमें उन्होंने अपने आशीर्वाद से रोगों का निदान किया, निःसंतान दंपति को संतान-सुख दिया, लोगों को सर्प व बिच्छू दंश के विष प्रसार से मुक्ति दिलाई, परीक्षार्थियों को सफलता दिलाई, लोगों को उनकी नौकरियों में पदोन्नत्ति, पदस्थापन तथा सेवा निवृत्ति के बाद सहयोग

दिलवाया। इस प्रकार का आशीर्वाद पाकर भक्त अत्यंत हर्षित हो जाते तथा बाबा के सदा के लिये कृतज्ञ बने रहते।

अब प्रश्न यह है कि मनुष्य ईश्वर का किस विधि धन्यवाद-ज्ञापन करे? वह फकीर जो जीर्ण-शीर्ण मस्जिद में रहता हो, फटी-पुरानी कफनी पहनता हो और घरों से भिक्षा मांग कर गुजारा करता हो, उसे एक कृतज्ञ भक्त आखिर क्या अर्पण करे? ईश्वर को अपनी संतुष्टि के लिये किसी वस्तु-विशेष की आवश्यकता नहीं होती। परन्तु मनुष्य अपने इष्ट के प्रति प्रेम तथा कृतज्ञता प्रदर्शित करने हेतु कुछ वस्तु अवश्य भेंट करना चाहता है। कृतज्ञता का भाव एक सद्‌गुण है। अगर हम पर किसी व्यक्ति का अनुग्रह होता है तो हम उसके ऋणी हो जाते हैं तथा सही समय पर हम भी उस व्यक्ति को अनुग्रहित करने की इच्छा रखते हैं। उदाहरण के तौर पर हम बच्चों को उनके जन्म-दिवस पर प्राप्त किये हुए उपहारों के बदले में उनके मित्रों को मिठाई, टॉफ़ी इत्यादि भेंट करना सिखाते हैं। विद्यालयों में 'धन्यवाद' उन प्रथम शब्दों में से है जो बच्चों को सिखाया जाता है। अब प्रश्न यह है कि हम किस प्रकार परम पिता परमात्मा के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करें?

प्रश्न के लिये हमें चिंतन की गहराई में जाना पड़ेगा। मैं कल्पना करती हूँ कि मैं द्वारकामाई (बाबा ने जीर्ण-शीर्ण मस्जिद को यह नाम दिया था जहाँ वे निवास करते थे) के द्वार पर खड़ी हूँ और बाबा मुझे आशीर्वाद दे रहे हैं कि जिस परीक्षा के लिये मैंने नित्य-प्रतिदिन परिश्रम किया है उसमें सफलता अवश्य मिलेगी। अंततः मैं परीक्षा में सफल हो जाती हूँ और मस्जिद आ कर बाबा के चरणों में अपनी कृतज्ञता प्रकट करती हूँ। मेरे नेत्र अश्रुपूरित हैं, मेरी भक्ति दृढ़ है पर क्या मैं कोई तुच्छ भेंट बाबा के श्रीचरणों में अर्पित कर सकती हूँ? इस प्रश्न का उत्तर व्यक्ति-विशेष पर निर्भर करता है। कदाचित मैं प्रथम मास का वेतन उनके चरणों में अर्पित कर दूँ। या यह निवेदन करूँ कि वे मेरी बनाई हुई खीर ग्रहण कर लें।

गुरू पूर्णिमा के कुछ दिन के पश्चात मैं साई धाम पहुँची और अपने गुरू जी को नारियल भेंट किया। गुरू जी ने उसे स्वीकार भी किया और उसे दिन

के खाने के साथ ग्रहण भी किया। गुरू जी के द्वारा मेरी इस तुच्छ भेंट को स्वीकार करने से जो मुझे हर्ष और संतुष्टि हुई उसे शब्दों में वर्णन करना मुश्किल है। तब मुझे यह एहसास हुआ कि मानव, जिसका एक स्वरूप है, उसे अपने ईष्ट के प्रति आभार व्यक्त करने के लिये कुछ ठोस वस्तु की आवश्यकता होती है जिससे उसकी इन्द्रियों को संतुष्टि मिलती है। मेरी भक्ति कृतज्ञता अभिव्यक्ति के लिये पर्याप्त तो है परन्तु मानव होने के नाते मुझे किसी वस्तु, जैसे कि नारियल आदि, के भेंट करने से अवश्य ही प्रसन्नता होती है। गुरूजी को धन्यवाद-ज्ञापन करने के लिये नारियल मेरी भावनाओं का प्रतीक बन गया ।

परन्तु संतो को धन या खीर या नारियल की क्या आवश्यकता? यह तो भक्त का प्रेम तथा ईश का आभार-व्यक्त करने में मनुष्य की सीमित क्षमता है जिसके कारण वह प्रभु को फूल, पत्ते, जल, अन्न, वस्त्र, धन इत्यादि भेंट करता है। जब साई बाबा को उनके कृतज्ञ भक्त कुछ भेंट करते तो वे दक्षिणा में मिली सारी वस्तुओं को गरीब-वंचित भक्तों में वितरित कर देते थे। जो धन-राशि दान में मिलती उसे अन्न तथा अन्य खाद्य सामग्री खरीदने में प्रयोग किया करते थे। बाबा को अन्न-दान बहुत प्रिय था। बाबा की लोकप्रियता जब तक आस-पास के गाँवों में सीमित थी, तब वे स्वयं भोजन पकाते और फकीरों, गरीबों, बच्चों और भक्तों में वितरित कर देते थे। वे अपनी दक्षिणा से साड़ी, धोती, इत्यादि खरीद कर आगन्तुकों को भेंट कर दिया करते थे। बाबा बहुत उदारता और विनयशीलता के साथ परोपकार किया करते थे। यह फ़क़ीर जो स्वयं निर्धन था, वो आध्यात्मिक और सांसारिक संपत्ति, दोनों का ही दाता था ।

अपितु मैं वर्तमान में साई बाबा का किस तरह धन्यवाद-ज्ञापन करूं? उनका दैहिक आवरण अब इस संसार में नहीं है, परन्तु जब भी वो मुझे आनन्द और सफलता का आशीर्वाद देते हैं, तब मैं अपनी कृतज्ञता किस प्रकार व्यक्त करूँ? तब मैं भोजन, वस्त्र, धन किस को अर्पण करूँ? इस प्रश्न का उत्तर बाबा के ही निम्नलिखित वचनों में समाहित है-

"जीव भिन्न प्रकार के हो सकते हैं, पर सब की क्षुधा सामान होती है, कुछ बोल पाते हैं कुछ मूक रहते हैं। यह बात जान लो कि जो भूखे को भोजन कराता है वह अप्रत्यक्ष रूप से मेरी ही सेवा करता है। यह परम सत्य है।"

साई बाबा भूखे, बेसहारा, वंचित और बीमार मनुष्यों को अपनी संतान समझते थे। इसलिये जब वे साकार रूप में हमारे बीच नहीं हैं तो उनके बच्चों की सेवा करना ही बाबा की सेवा के समतुल्य है। यही ईश्वर के धन्यवाद-ज्ञापन का उत्तम उपाय है।

इसका प्रारम्भ हम अपने आस-पास के लोगों की देख-भाल करके कर सकते हैं, विशेषकर उनको जिन्हें हमारी आवश्यकता है क्योंकि परोपकार की शुरुआत तो घर से ही होती है। हम अपने कर्मचारियों के स्वास्थ्य जाँच तथा दवाइयों का खर्च वहन कर सकते हैं। हम उनके बच्चों की शिक्षा प्रायोजित कर सकते हैं या फुर्सत में उन्हें पढाई में मदद कर सकते हैं। हमारे परोपकार के पथ पर चलने का यह प्रथम चरण हो सकता है। वैसे यह बात भी सोचने योग्य है कि ऐसे कर्म हमें अनुदान के तौर पर नहीं अपितु अपना कर्त्तव्य समझ कर करना चाहिए। ऐसे समाज जहाँ गरीब और अमीर की आमदनी में ज़मीन-आसमान का अंतर हो, वहाँ यह निश्चित ही अनुचित होगा अगर समृद्ध लोग आगे आ कर अपने श्रमिकों को उनके श्रम के बदले में अधिक से अधिक लाभ न पहुँचाएं। फिर भी ऐसी सेवा परोपकार करने का पहला कदम हो सकता है।

अगर हमें इच्छा-शक्ति, दृढ़ संकल्प और साधन भी उपलब्ध हों तो हम अपने घरों-दफ्तरों की दहलीज़ के बाहर परोपकार का कार्य शुरू कर सकते हैं ताकि अधिक-से-अधिक ज़रूरतमंदों को लाभ पहुँचे। अपितु प्रश्न यह है कि इस प्रयास में हम कैसे आगे बढ़ सकते हैं? डॉ.मोतीलाल गुप्ता के अन्तर्मन में कुछ ऐसे ही सवाल उठ रहे थे जब उन्होंने साई धाम की स्थापना की। साई भगवान के प्रति अपनी भक्ति को कैसे मूर्त्त रूप दिया जाए? इस सवाल का उत्तर बहुत सरल था। उन्हें बस साई बाबा के सिद्धांत का अनुसरण करना था और वह था गरीब और जरूरतमंदों की सेवा।

साई धाम की स्थापना 1988 में 'शिरडी साई बाबा टैम्पल सोसाइटी' के नाम से की गयी। इसके संस्थापक का मुख्य उद्देश्य बाबा के उपदेशों को जनमानस में फैलाना, गरीब वंचितों का उद्धार करना और उनके सामाजिक और आर्थिक स्तर को ऊपर उठाना था। इस उद्देश्य से साई धाम की यात्रा शुरू हुई।

इस संस्थान के उद्देश्य को स्थापित करने के बाद डॉ. गुप्ता को अब यह तय करना था कि वे किस विधि से तथा किन साधनों से अपने इस सपने को साकार कर पायेंगे। प्रारंभ में इस संस्थान ने, जिसके सदस्य थे डॉ. मोतीलाल गुप्ता, श्रीमती कान्ता गुप्ता, उनके कुछ रिश्तेदार, मित्रगण तथा कुछ कर्मचारी, विभिन्न प्रकार से गरीबों एवं ज़रूरतमंदों की सेवा शुरू की। 54 साल की उम्र में डॉ.मोतीलाल गुप्ता ने अपने पुण्य ध्येय की प्राप्ति के लिये अपना व्यावसायिक जीवन त्याग दिया। प्रारम्भिक दिनों में डॉ. गुप्ता ने अपनी संचित आय बड़ी उदारता से संस्थान के कार्यवाही के लिये उपयोग किया। भाग्यवश उनके पुत्र संदीप गुप्ता ने अपने स्वयं का कारोबार प्रारंभ किया और अपनी कुशलता से व्यापार में सफलता प्राप्त की। इस तरह अब डॉ. गुप्ता ने अपना संपूर्ण ध्यान साई धाम पर लगा दिया क्योंकि घर का उत्तरदायित्व उनके पुत्र द्वारा संचालित होने लगा। साई धाम के दैनिक खर्च के लिये दान से अर्जित आय को उपयोग में लाया जाने लगा। कई मित्रों और रिश्तेदारों ने भी दान दे कर सहयोग किया। इन लोगों ने अपने परिचितों से भी इस पुण्य कार्य में सहयोग करने का निवेदन किया।

साई धाम में सर्वप्रथम होमियोपैथिक डिस्पेंसरी का संचालन प्रारंभ हुआ। प्रारंभ में डॉ. गुप्ता संस्थान के मुख्य गेट के बाहर एक टेबल लगाकर रोगियों का उपचार किया करते थे। वे ग्रामीण इलाकों में स्वास्थ्य जाँच शिविर लगाते थे जिसमें अन्य होमियोपैथिक डॉक्टरों को भी भाग लेने का निवेदन किया जाता था। जैसे-जैसे गरीब वंचित लोग इस मुफ्त उपचार से लाभ उठाने लगे, वैसे-वैसे गुरू जी की डिस्पेंसरी की लोकप्रियता बढ़ती गई। केवल गरीब ही नहीं बल्कि समृद्ध भी इस अद्भुत डॉक्टर से अपने उपचार

के लिये आने लगे। सभी रोगियों का मुफ्त उपचार तथा उन्हें मुफ्त दवाईयाँ दी जाने लगी। कुछ लोग इस महान कार्य को देख कर विस्मित और मुग्ध हो जाते तथा साई धाम को दान देते। इस तरह गुरूजी ने अपने अनोखे उपचार से एक चुंबक की भाँति धनी और गरीब, यानि दानी व दान के पात्र, दोनों को ही साई धाम के प्रति आकर्षित किया।

संस्थान के आस-पास के जंगलों में मच्छर और कीड़े पनपते थे जिसके कारण बाहर बैठ कर रोगियों का उपचार करना सहज नहीं था। सर्दियों में यह कार्य और भी कठिन हो जाता था। अतः यह निर्णय लिया गया कि ज़मीन के अग्रिम भाग में एक दुकान बनाई जाएगी जिसमें क्लीनिक की व्यवस्था होगी जहाँ डॉ. गुप्ता रोगियों का उपचार कर सकेंगे। वे लोग जो क्लीनिक नहीं पहुँच पाते, उनके घरों में दवा पहुँचाई जाती थी। आज तक असंख्य लोगों को गुरू जी की दवाओं से लाभ हुआ है।

करीब दस वर्षों तक डिस्पेंसरी की ज़िम्मेदारी स्वयं डॉ. गुप्ता ने खुद संभाली। साई धाम से जुड़े कुछ भक्तों ने दिल्ली और आस पास के इलाकों में क्लीनिक खोलने हेतु जगह मुहैया करवाई। डिस्पेंसरी के बारे में जानकारी की खोज के दौरान मुझे एक 12 पृष्ठ का दस्तावेज़ मिला जिसकी तारीख अक्टूबर 1999 की थी जो उस समय के तत्कालीन प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी को संबोधित था तथा आगे चल कर श्रीमती सोनिया गाँधी को भी भेजा गया था। उस दस्तावेज़ में ग्रामीण क्षेत्र की स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं पर प्रकाश डाला गया था। डॉ. गुप्ता ने एक विस्तृत लेख तैयार किया था कि किस प्रकार होमियोपैथिक उपचार सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों तथा शहरी क्षेत्र की झोपड़-पट्टियों में स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं को हल करने में कारगर हो सकता है। डॉ. गुप्ता के दस्तावेज़ में होमियोपैथिक कॉलेज खोलने का सुझाव, साथ ही शिक्षकों को प्राथमिक होमियोपैथिक चिकित्सा की ट्रेनिंग और गाड़ियों में चलती-फिरती होमियोपैथिक डिस्पेंसरी के संचालन का सुझाव भी दिया। मूल्य-लाभ विश्लेषण भी पेश किया गया जिसमें यह साबित किया गया कि होमियोपैथिक उपचार सस्ता होने के

कारण गरीबों को आर्थिक लाभ भी पहुँचेगा एवं राज्य का भी स्वास्थ्य के क्षेत्र में आर्थिक बोझ कम होगा। उनके कई सुझावों को सरकार के द्वारा मान्य किया गया और उसे लागू भी किया गया। यह ध्यान देने योग्य बात है कि डॉ. गुप्ता ने 'कॉम्पेंडियम ऑफ होमियोपैथिक मेडिसीन' के दो संस्करण प्रकाशित किये जिसे समाज सेवियों तथा होमियोपैथिक डॉक्टरों में बांटा गया जिससे अनेकों लोगों को लाभ पहुँचा।

डॉ. गुप्ता की दूरदर्शिता तथा उनकी योजनाओं को साकार करने की पद्धति अद्भुत है। वह हर वो कार्य को करने के लिये आतुर रहते हैं जिसमें परोपकार निहित हो। 1990 के दशक में जब साई धाम अपना प्रारूप तय कर रहा था, होमियोपैथिक उपचार की सेवा एक ऐसा कार्य था जो शुरू से ही व्यवस्थित तौर पर किया जा रहा था। एक अन्य गतिविधि जो नियमित तौर पर की जाती थी, वह थी गरीबों को दंत चिकित्सा उपलब्ध कराने की। संस्थान की अन्य गतिविधियों में शामिल था- वस्त्र और कंबल वितरण, गरीबों को चिकित्सा के लिये आर्थिक मदद, विकलांगों को आर्थिक सहायता ताकि वे स्वावलंबी बन सकें, वंचित गरीब छात्रों को किताबें और लेखन सामग्री मुहैया कराना तथा ऐसे ही अनेक प्रकार के अन्य कार्य।

नई सहस्राब्दी के नए सवेरे से साई धाम की गतिविधियाँ बढ़ने लगीं। साई धाम की विश्वसनीयता और प्रतिष्ठा अब स्थापित हो चुकी थी। तब डॉ. गुप्ता ने योजना-बद्ध तरीके से परोपकारी कार्यों को आगे बढ़ाने का निर्णय लिया। अब समय था इस संस्थान को एक मूर्त्त रूप देने का और एक प्रबल संगठन के तौर पर स्थापित करने का। डॉ. गुप्ता ने सोचने पर बल दिया कि ये सब कार्य किस तरह से संपादित किया जाए ताकि वंचितों को लंबे समय तक लाभ मिल सके और उनके जीवन का स्तर स्थायी रूप से बेहत्तर बनाया जा सके। गुरू जी की व्यस्तता संगठन के कार्यों में बढ़ने लगी जिससे उन्हें डिस्पेंसरी चलाने के लिये समय नहीं मिल पा रहा था। इस कारणवश 1 जनवरी 2000 के दिन साई धाम डिस्पेंसरी को चलाने के लिये एक योग्य होमियोपैथिक डॉक्टर की नियुक्ति की गई।

डॉ. गुप्ता गरीबों को केवल चिकित्सा, भोजन, वस्त्र और आर्थिक सहायता देने से संतुष्ट नहीं थे। उन्होंने देश की गरीब आबादी की समस्याओं को बहुत गहराई से समझा। वह व्यग्र थे, एक ऐसे परिवर्तन के लिये जिससे गरीब नागरिक अपनी देखभाल के लिये सरकार पर निर्भर न रहें अथवा स्वावलम्बी बनें। इस तरह के परिवर्तन के लिये उनकी व्यग्रता विगत 35 वर्षों से बढ़ती ही चली जा रही है।

डॉ. गुप्ता ने यह निष्कर्ष निकाला कि सिर्फ अच्छी शिक्षा ही गरीबों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को स्थाई तौर पर बदलने में सक्षम है। गरीबी की दुर्गति से युवा पीढ़ी को निकालने के लिये यह अत्यन्त आवश्यक है कि उन्हें शिक्षित किया जाए। डॉ. गुप्ता इस बात में पूर्ण विश्वास रखते हैं कि राष्ट्र के सभी बच्चों को, उनके धर्म, जाति, लिंग या आर्थिक स्तर के भेद भाव के बिना, मुफ्त और गुणवत्ता वाली शिक्षा मिलनी चाहिए। कुशल सरकारी तंत्र के अभाव में देश के गरीब बच्चों को गुणवत्ता वाली शिक्षा मुहैया कराना सभी सक्षम नागरिकों का कर्त्तव्य बन जाता है। गरीबी और अमीरी की खाई कम नहीं हो पा रही है क्योंकि सामान्य अवसर सभी को उपलब्ध नहीं है। एक राष्ट्र विकसित होने का ख़िताब तब ही हासिल कर पाता है जब उसके प्रत्येक नागरिक का जीवन-स्तर सम्मान-जनक हो, सभी को समान अवसर प्राप्त हो तथा सबका आर्थिक-सामाजिक स्तर न्यायसंगत हो।

ऐसा क्यों होता है कि मुझे और आपको सर्वश्रेष्ठ विश्वविद्यालयों में दाख़िला मिल जाता है जबकि झुग्गियों में रहने वाले हमारे सह-नागरिकों को इन विद्यालयों की जानकारी ही नहीं होती। इस प्रश्न का विश्लेषण हमें बहुत गंभीरता से करना होगा। प्रथमतः यह तो प्रारब्ध ही है जिसके कारण हमारा जन्म एक समृद्ध परिवार में हो। पुरखों की संपत्ति का लाभ आगे की पीढ़ियों को भी मिलता है जिससे उन्हें घर, ज़मीन, जायदाद का अभाव नहीं होता। इस तरह के परिवार अपने बच्चों को, उस समय की प्रचलित एवं आधुनिक शिक्षा उपलब्ध कराने में समर्थ होते हैं। इस तरह उनके सामाजिक तथा आर्थिक स्तर में भी बढ़ोत्तरी होती चली जाती है। ये संभव हो सका, उन

संसाधनों की वजह से जो उन्हें विरासत में मिली थी। परन्तु हमारे बन्धु नागरिक जो झुग्गियों में रहते हैं तथा ऐसे परिवार में जन्मे हैं जो शिक्षा और संसाधन से वंचित हैं, क्या वे अपने बच्चों को शिक्षा या दो वक्त की रोटी दे सकते हैं? हमारे पूर्वज अपनी अगली पीढ़ी को आधुनिक शिक्षा, भोजन और वस्त्र दे पा रहे थे परन्तु हमारे गरीब बंधुओं की स्थिति विपरीत थी। उनके पूर्वजों को अपने गांव को छोड़ कर शहरों में आकर बसना पड़ा और झुग्गियों में रहकर रोटी, कपड़ा और झोपड़ी के लिये मशक्कत करनी पड़ी। यह तो स्पष्ट है कि जिस अथाह दयनीय स्थिति में वे जीने के लिये बाध्य हैं वह उनकी इच्छा से नहीं है। स्वतंत्रता के सात दशक बाद भी समृद्ध और वंचित वर्गों के सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में इतनी असमानता है कि यह आज के ज़माने में चौंकाने वाली बात है।

दोनों वर्गों के बीच की इस विशाल खाई को कम करने का यह अत्यंत कठिन कार्य का बेड़ा उठाया है डॉ.मोतीलाल गुप्ता ने।

5 अप्रैल 2004 को डॉ. गुप्ता को एक संगठन द्वारा साई धाम में गरीब-वंचित बच्चों के लिये एक अंशकालिक (पार्ट टाइम) स्कूल प्रारंभ करने का सुझाव मिला। उन्होंने स्कूल शुरू करने का निर्णय लिया परन्तु अंशकालिक नहीं, उन्होंने पूर्णकालिक स्कूल, व्यवस्थित तौर पर शुरू करने की ठान ली।

डॉ. गुप्ता में किसी भी परियोजना को त्वरित प्रारंभ करने का हुनर है। पहले योजना बनाई जाती है, उसका विश्लेषण किया जाता है, तद्पश्चात कार्य को प्रारंभ करने में तनिक भी विलम्ब नहीं किया जाता। परियोजनाओं को उनके प्रारंभिक काल में निष्पादित करने की जो विशेषता उनमें है वह देश के भावी प्रबंधकों के लिये प्रेरणा का विषय है। परियोजनाओं को त्वरित प्रारंभ किया जाता है, त्रुटियों की समीक्षा की जाती है, कमियों से निपटने के लिये नियोजन किये जाते हैं ताकि परियोजनाएँ चलती रहें।

एक सप्ताह बाद, 12 अप्रैल 2004 को साई धाम के भवन के दो कमरों में स्कूल प्रारंभ कर दिया गया। कुर्सी, टेबल तथा स्कूल के अन्य जरूरत के

सामान की शीघ्र व्यवस्था की गई। दो साई-भक्तों ने शिक्षिका बनने का कार्य संभाला। ऐसे हुई शिरडी साई बाबा स्कूल की विनयशील शुरूआत। प्रारंभ में गरीब बच्चों के अभिभावकों को स्कूल भेजने के लिये प्रोत्साहित करना बहुत कठिन था। डॉ. गुप्ता और उनके स्वयं-सेवकों को निरंतर प्रयास करना पड़ा तथा उनके घर जा कर शिक्षा के लाभ को समझाना पड़ा ताकि वे अपने बच्चों को स्कूल भेजने के लिये राज़ी हो पाएँ।

समाज सेवकों को यह ज्ञात रहता है कि जीवन में संघर्ष करते-करते गरीब निराशा से भर जाता है। इस तरह की मदद के प्रति शुरूआत में उसके मन में थोड़ा अविश्वास उत्पन्न हो सकता है। क्या हमें इससे लंबी अवधि तक किसी तरह का फायदा मिल सकता है? क्या मैं अपने बच्चों का समय शिक्षा में व्यय करूँ या मेहनत मजदूरी में लगाऊँ जो मुझे एक वक्त का भोजन देगा? क्या यह वादा मिथ्या है? ये सभी सवाल उसके मन में कौंधते हैं जो उसे बदलाव के पथ पर चलने से हतोत्साहित करते हैं। ये तो समाज सेवकों की जवाबदेही होती है कि वे गरीबों को लंबी अवधि के लिये लाभान्वित होने का आश्वासन दें। इस परोपकार की यात्रा में हमें निरंतर प्रयासरत रहना पड़ता है।

46 विद्यार्थियों के साथ विद्यालय प्रारंभ हुआ। उसी समय मंदिर के ऊपरी बरामदे में गरीब महिलाओं की सिलाई-कढ़ाई के प्रशिक्षण का केन्द्र खोला गया। दोनों परियोजनाओं के लिये अस्थायी व्यवस्था की गई थी।

डॉ. गुप्ता, श्रीमती गुप्ता तथा साई धाम के अन्य सदस्यों ने स्कूल भवन के निर्माण हेतु बहुत विचार-मंथन किया। आरंभ में यह योजना बनाई गई कि मंदिर के भवन को थोड़ा बढ़ा कर, उसके ऊपर कक्षाएं बनाई जाऐं। इस नए भवन के लिये एक विस्तृत परियोजना बनाई गई परन्तु जब वे अनुमति के लिए शिक्षा-विभाग गये तो उन्हें बताया गया कि एक पंजीकृत स्कूल के लिये स्वतंत्र भवन होना आवश्यक है। कक्षाओं का आकार 18x24 फीट, गलियारा 10 फीट तथा लड़के-लड़कियों के लिये अलग-अलग शौचालय आवश्यक

हैं। एक आर्किटेक्ट की नियुक्ति की गई जिसने सरकारी मानदंड के अनुसार स्कूल के लिये तीन मंज़िलों वाले भवन का प्रारूप तैयार किया।

साई बाबा की दया से डॉ. गुप्ता भवन बनाने की धन-राशि की व्यवस्था कर पाए। उनकी दोषरहित ख्याति, जो एक व्यावसायिक के रूप में उन्होंने स्थापित की थी वह इस मोड़ पर लाभदायक हुई। ख़ास कर कनारा बैंक के साथ उनके पुराने गूढ़ सम्बन्ध काम आए। गुरू जी ने कनारा बैंक के प्रबंधक, श्री पी.पी.मल्लिया को गुरू पूर्णिमा के आयोजन पर बतौर मुख्य अतिथि का न्यौता दिया। उनके साई धाम आगमन पर गुरू जी ने उनसे गरीब वंचित बच्चों के स्कूल निर्माण के लिये विचार-विमर्श किया। महाप्रबंधक इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने तुरंत पचास हजार रूपयों के दान की घोषणा कर दी। इस पुराने ग्राहक के दीर्घकालिक संबंधों पर विश्वास करते हुए महाप्रबंधक ने अपने मुख्यालय को आश्वस्त करते हुए कक्षा बनाने के लिये 2,50,000 की राशि की भी स्वीकृति करवा ली।

उसी अवधि में कनारा बैंक के पूर्व महाप्रबंधक, श्री के.एम.शेठ, जिनकी प्रोन्नति होकर सिंडिकेट बैंक में स्थानान्तरण हो गया था, उन्होंने भी डॉ. गुप्ता की इस योजना से अपनी सहमति जताई। उसी समय सिंडिकेट बैंक के अध्यक्ष सह निदेशक अवकाश पर चले गए। श्री शेठ ने कार्यकारी निदेशक का पद संभाला तथा कक्षा बनाने के लिये 2,50,000 की धन राशि साई धाम के नाम त्वरित निर्गत करा दी। एक्साइज के एक अधिकारी ने इस पुनीत कार्य के लिए, अपने अच्छे रिश्तों के एवज में, फरीदाबाद के अनेक व्यवसायियों से 62 ट्रक गिट्टी और पत्थर का चूरा मुहैया करवा दिया। धन राशि और सामग्री मिलने पर शिरडी साई बाबा स्कूल का भवन-निर्माण तीव्र गति से प्रारंभ हो गया।

12 दिसंबर 2004 को हरियाणा के राज्यपाल, माननीय डॉ. ए. आर.किदवई ने विद्यालय की नींव डाली। एक वर्ष से भी कम अवधि में ही नीचे की मंज़िल, जिसमें छह कक्षाएँ , एक प्राध्यापक का कक्ष तथा तीन

शौचालय तैयार हो गए। अगले वर्ष अक्टूबर 2005 में विजयदशमी के पावन अवसर पर श्री के.वी.सिंह, हरियाणा के मुख्यमंत्री के आफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी(ओ.एस.डी) ने नव-निर्मित शिरडी साई बाबा स्कूल का उद्‌घाटन किया।

स्कूल भवन का विस्तार काफी शीघ्रता से होने लगा। जर्मनी के दूतावास ने भी स्कूल के विस्तार में अहम भूमिका निभाई। जर्मन दूतावास के अधिकारी साई धाम देखने आए थे। यहाँ के कार्य से प्रभावित हो कर दूतावास ने करीब साढ़े चार लाख रूपये निर्गत किये। कई अन्य भक्तों ने कक्षाओं के निर्माण को प्रायोजित किया। फलस्वरूप 2008 तक द्वितीय तथा तृतीय मंज़िल का निर्माण हो गया। धीरे-धीरे कक्षाओं तथा छात्रों की संख्या बढ़ती गयी।

कई गणमान्य अतिथियों को कक्षाओं के उद्‌घाटन के लिये बुलाया गया तथा स्कूल के आयोजन एवं वार्षिकोत्सव के लिये भी उन्हें निमंत्रण दिया गया। डॉ. गुप्ता विशेष प्रयत्न करते हैं कि गणमान्य उद्योगपति, सरकारी अधिकारी तथा समाज के अन्य महत्त्वपूर्ण शख्सियतों को साई धाम में निमंत्रित किया जाए। इस प्रकार साई धाम को अपने कार्य को प्रदर्शित करने का मौका मिलता रहता है।

डॉ. गुप्ता के विचार से जब इस तरह के प्रबुद्ध नागरिक, जो एन.जी.ओ को सहयोग देने में सक्षम हैं, साई धाम का दौरा करते हैं तो इसका संस्थान पर दीर्घकालिक प्रभाव पड़ता है। इनके आगमन से एन.जी.ओ की मान्यता एवं सत्यता प्रमाणित होती है। अगर पैसे ऑनलाईन भेज दिये जाएँ तो इस बात की मन में शंका रहेगी कि संस्थान ने पैसों का सही उपयोग किया या नहीं। परन्तु अगर लोग संस्थान का दौरा स्वयं ही करें तो इस बात का विश्वास तो हो ही जाता है कि उनके पैसों का दुरुपयोग नहीं हुआ, साथ-ही-साथ दान देने वाला यह भी देख पाता है कि किस प्रकार उसके योगदान से लोग लाभान्वित हो रहे हैं। इस तरह वह संस्थान से लम्बे काल के लिये जुड़े रहने

को प्रेरित होते हैं। यह ध्यान देने योग्य बात है कि सिर्फ एक या दो बार के दान से किसी स्वयं-सेवी संस्थान को ज़्यादा लाभ नहीं पहुँचता। संस्थानों में कर्मचारी काम करते हैं तथा साधनों की ज़रुरत होती है। कर्मचारियों को वेतन देना पड़ता है, आफिसों के किराये देने पड़ते हैं तथा नियमित कार्यकलापों का भी खर्च वहन करना पड़ता है। जब तक एक संस्थान को नियमित आय का स्रोत नहीं मिलता तब तक वे अपना कार्यकलाप किस प्रकार चला पाएँगे? साई धाम ऐसे एन.जी.ओ., जो गरीबों की मुफ्त सेवा करते हैं, उन्हें हमारे ऐसे लोगों की सहायता की ज़रुरत होती है ताकि कम से कम उन तक इतनी राशि पहुँच पाए कि संस्थानों को बंद करने की नौबत ना आ जाए।

हम सबको ये सवाल पूछना होगा कि आखिर एक समाज को एन.जी.ओ. की आवश्यकता क्यों पड़ती है? इसका जवाब यह है कि सामूहिक तौर पर कहीं हम से यह चूक हो रही है कि हम समाज के हर नागरिक को रोटी, कपड़ा और मकान जैसी बुनियादी ज़रूरतों को मुहैया कराने में विफल हुए हैं। इसलिये अपने गरीब नागरिकों की विषम परिस्थिति के लिये हम सभी जिम्मेदार हैं। निश्चित तौर पर गरीबों ने अपनी ऐसी स्थिति का अपनी इच्छा-अनुसार चयन तो नहीं किया है। यह तो नियति का खेल है कि एक ही घड़ी में एक शिशु किसी डॉक्टर के परिवार में जन्म लेता है तथा दूसरा किसी दिहाड़ी मजदूर की झोपड़ी में। एक राष्ट्र के तौर पर हम विश्व गुरू कैसे बन सकते हैं जब कई राज्यों में करीब 40 प्रतिशत नागरिक गरीबी रेखा के नीचे हैं?

बढ़ती हुई आबादी इस दुर्गति को बढ़ावा दे रही है। मैंने अक्सर ये आलोचनाएँ सुनी हैं कि हमारे देश के गरीब-वर्ग ही जनसंख्या वृद्धि के सबसे बड़े अपराधी हैं। उन लोगों से मैं पूछती हूँ कि अपने परिवार में झाँक कर देखो कि हमारे बाप-दादा कितने भाई-बहन हुआ करते थे? उदाहरण के तौर पर मेरे दादा-दादी तथा नाना-नानी सभी के छह से सात भाई-बहन थे। इस बात पर जोर देनी चाहिए कि आधुनिक शिक्षा (जो समृद्ध लोगों को ही

प्राप्त होती थी) ने ही यह चेतना जगाई कि कम बच्चे होने के कितने फायदे हैं। अच्छी शिक्षा तथा आधुनिक चिकित्सा की वजह से समृद्ध परिवारों की आगे की पीढ़ी ने 'हम दो हमारे दो' की उक्ति को अपनाने में सफल हुए। परन्तु जो वर्ग शिक्षा से वंचित रहे और अच्छी स्वास्थ्य व्यवस्था भी नहीं मिली उन्हें इस बात को समझने का मौका ही नहीं दिया गया। फिर उस दिहाड़ी मजदूर के परिवार को, जिसके पाँच बच्चे हैं, उसके प्रति हीन भावना रखना एक आडम्बर कहलाएगा। इस स्थिति में यह हम सबकी जवाबदेही हो जाती है कि हम अपने गरीब नागरिकों को अज्ञानता से बाहर निकालें जिसमें वे जीवन-यापन कर रहे हैं। बिरले ही ऐसे लोग होते हैं जो डॉ.मोतीलाल गुप्ता की तरह निरक्षरता, भूख तथा बेरोज़गारी के विरूद्ध जंग में सबसे सामने तैनात हैं। अन्य लोगों को, कम-से-कम, इन योद्धाओं को हर-संभव सहयोग देना चाहिए। हमें समझाना होगा कि भारत का दोहरा चेहरा नहीं हो सकता- एक विकासशील तथा एक वह जो मात्र जीने के लिये जद्दोजहद कर रहा हो।

डॉ.मोतीलाल गुप्ता के व्यक्तित्व सरीखे लोग हमारे समाज में दुर्लभ हैं। परन्तु कुछ लोग जो उनकी तरह हैं, उन्हें हमारे समाज की सहायता की आवश्यकता है। यह सत्य है कि कई नकली स्वयंसेवी संस्थाएं अस्तित्व में हैं जो खुले आम अपने फ़र्ज़ी परोपकारी कार्यों का दावा करती हैं। हम इस विषय पर समय व्यर्थ नहीं गंवाएँगे कि ऐसे संगठन अस्तित्व में क्यों हैं तथा उन्हें कौन चलाता है? महत्त्वपूर्ण प्रश्न यह है कि सच्चे तथा फर्जी एन.जी.ओ. में फर्क कैसे करें? अगर मैं अपने शहर के सर्वश्रेष्ठ 10 एन.जी.ओ. के नाम 'गूगल' से जानना चाहूँ तो उनमें से कितने सही हैं और कितने फ़र्ज़ी, यह बात नेट से पता लगाना मुश्किल हो सकता है। एक तरीका यह हो सकता है कि हम निर्णय लें कि हमें किस क्षेत्र में अपना योगदान देना हैं - जैसे कि शिक्षा, स्वास्थ्य-सम्बन्धी क्षेत्र, अनाथों की रक्षा, नारी सशक्तिकरण, वस्त्र-भोजन वितरण या पर्यावरण संबंधी कार्य। इस विषय पर निर्णय लेने के बाद हम किस एन.जी.ओ. से जुड़ें, इसे तय कर पाना आसान हो पाएगा। अगर किसी एन.जी.ओ. से हमारे मित्र, साथी या पड़ोसी जुड़े हैं तो हम भी उस संस्थान से

जुड़ने का प्रयास कर सकते हैं। यदि यह संस्थान उस क्षेत्र में कार्य नहीं करता जिससे की आप जुड़ना चाहेंगे तब भी प्रारंभ करने के लिये आप वहां जाएँ। उदाहरण के लिये अगर आप साई धाम से जुड़ते हैं परन्तु अगर आप बुजुर्गों की देखभाल करने वाली संस्थान से जुड़ना चाहते हैं तो यह संभव है कि साई धाम के किसी सदस्य के द्वारा आपको दूसरे संस्थानों के बारे में जानकारी मिल सके जहाँ आप अपना योगदान देना चाहेंगे। इसका कारण यह है कि ऐसे संस्थानों में आप उन लोगों से जुड़ पाते हैं जो आपकी ही तरह परोपकार करने को आतुर हैं। मेरा यह दृढ़ विश्वास है अगर हमें परोपकार करना है या वंचितों के लिये कर्त्तव्य निर्वहण करना है तो निश्चित तौर पर देर-सवेर हम अपने मनोकूल संगठन से जुड़ ही जाते हैं।

मेरा परिवार भी साई धाम से परोपकार में विश्वास रखने वालों के सम्पर्क से जुड़ पाया। 2010 में श्री आनंद कुमार, मेरी माता जी के छोटे मौसा जी, जो इंडियन ऑयल कोरपोरेशन में निदेशक (रिसर्च एण्ड डेवेलपमेंट) के पद पर कार्यरत थे, उन्होंने साई धाम का दौरा किया। हमारे प्रिय मणी नाना (ऐसे हम उन्हें संबोधित करते हैं) अपने आप में एक परोपकारी व्यक्ति हैं जिन्होंने बहुत छात्रों को परामर्श दिया है तथा उनके मार्गदर्शक बने हैं। कई गरीब वंचित छात्रों को जरूरत पड़ने पर उच्च शिक्षा के लिये छात्रवृति भी दी है। आई.ओ.सी.एल उन पी.एस.यू (PSU) में से है जिसने शिरडी साई बाबा स्कूल को अपने सी.एस.आर (CSR) के तत्वाधान के अंतर्गत सहयोग दिया। नई कक्षाओं के निर्माण में सहयोग हेतु एक मुलाकात निर्धारित की गई जिससे श्री आनंद कुमार एवं श्रीमती मधु कुमार को डॉ. गुप्ता से मिलने का मौका मिला। यह दंपति साई धाम के परोपकारी कार्यों से बहुत प्रभावित हुआ। उनकी कंपनी से निर्गत की गई राशि से एक कक्षा का निर्माण संभव हो सका।

हमारी मधु मौसी, साई धाम के आध्यात्मिक पहलू तथा डॉ. गुप्ता की साई बाबा के प्रति अनन्य भक्ति से बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने अपना अनुभव मेरे माता-पिता को बताया तथा वहाँ जाने का प्रबंध भी करा दिया।

इस तरह मेरे माता-पिता तथा मेरे भाई को गुरू जी के चरण-स्पर्श का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस मुलाकात के दौरान गुरू जी ने हमारे परिवार को सर्वोच्च उपहार से आशीर्वादित किया जिसका कोई सानी नहीं है और वह है श्री साई सच्चरित्र। हम सदा के लिये श्रीमती मधु तथा श्री आनन्द कुमार के अनुगृहित रहेंगे जिन्होंने हमें साई धाम का रास्ता दिखाया तथा गुरू जी से हमारा परिचय करवाया।

डॉ. गुप्ता सक्रिय तौर पर साई धाम के लिये पी.एस.यू., मल्टी नैशनल कंपनियों तथा प्राइवेट लिमिटेड कंपनियों से योगदान लेने की कोशिश करते रहते हैं। सरकार ने कंपनियों को अपने आय का एक न्यूनतम हिस्सा सामाजिक कल्याण के लिये निर्गत करने का निर्देश दिया है। डॉ. गुप्ता जैसे समाज-सेवकों को कंपनियों के पास जा कर योगदान के लिये निवेदन करना पड़ता है, बजाय कि कंपनी स्वयं सक्रिय होकर अपने सी.एस.आर का भाग साई धाम जैसी संस्थानों को दान करें। कंपनियों की ऐसी ढिलाई ने कई तरह के फर्जी एन.जी.ओ. को सी.एस.आर. का फायदा उठाने का अवसर दे दिया है, जिसके कारण वैध संस्थान अनुदान से वंचित रह जाते हैं। प्राइवेट लिमिटेड कंपनियों के पास अथाह संसाधन है। देश के प्रबुद्ध लोगों को आगे आ कर कोई तरीका तय करना होगा जिससे कि कंपनियों के सी.एस.आर के तहत के योगदान को वैध संस्थानों तक पहुँचाया जा सके। डॉ. गुप्ता अपने को एक पेशेवर भिक्षुक कहते हैं। उन्हें कई कंपनियों के दरवाज़ों को खटखटाना पड़ता है, अधिकारियों को साई धाम आने का आग्रह करना पड़ता है और उनके योगदान के लिये कई बार दफ्तरों के चक्कर लगाने पड़ते हैं जिसके वे असली हक़दार हैं। उनका निवेदन स्वीकार हो या अस्वीकार परन्तु डॉ. गुप्ता का यह प्रयास सदैव ही चलता रहता है।

साई धाम के संस्थापक के अथक प्रयास की वजह से वे कुछ बड़े पी.एस.यू. के आत्मविश्वास तथा सहयोग प्राप्त करने में सफल हुए हैं। श्रेय उन उद्यमी तथा कर्त्तव्यनिष्ठ पी.एस.यू. के अधिकारियों को भी जाता है

जिन्होंने व्यक्तिगत तौर पर साई धाम को सहायता पहुँचाने की मुहिम में साथ निभाया।

प्रथमतः 2009 में पी.एस.यू से धन राशि निर्गत कराने का प्रयास किया गया। एक साई-भक्त, श्री विजय धीर ने डॉ. गुप्ता को यह अवगत कराया कि पी.एस.यू. तथा प्राइवेट कंपनियों को कानूनी तौर पर अपनी आय का कुछ प्रतिशत भाग सामाजिक सेवा के कार्यों में लगाना अनिवार्य है। डॉ. गुप्ता को यह एहसास हुआ कि साई धाम सरीखे एन.जी.ओ., जो गरीब-वंचितों को भोजन, वस्त्र, शिक्षा मुहैया कराते हैं, को अगर इस प्रकार की सहायता मिले तो वे अपनी परोपकारी योजनाओं को लम्बे समय तक जारी रख सकते हैं। साई धाम जैसे एन.जी.ओ. स्वयं के उपक्रम से धन इकठ्ठा करने में सक्षम नहीं होते। इसीलिये ऐसे संस्थान 'सोशल एंटरप्राइज' से भिन्न होते हैं। सोशल एंटरप्राइज वो संगठन होते हैं जो गरीब वंचितों को रोजगार देते हैं, जो किसी सामान का उत्पादन करते हैं अथवा अपनी सेवाएं देते हैं और इनके एवज में भुगतान लेते हैं। इस तरह से सोशल एंटरप्राइज अपने कार्यों द्वारा धन उपार्जित करते हैं। परन्तु साई धाम सरीखे एन.जी.ओ. सोशल एंटरप्राइज नहीं है। एक एन.जी.ओ., जो भूखे को भोजन, गरीब-वंचित बच्चों को शिक्षा, गरीबों को स्वास्थ्य संबंधित सहायता दे रहा हो वह अपनी आय कहाँ से सुनिश्चित करेगा? वह तो सिर्फ दान से हीं अपने संस्थान को चला सकते हैं।

श्री धीर के सुझाव से डॉ. गुप्ता ने दस लाख रूपये के अनुदान की अर्जी स्टील ऑथोरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) के समक्ष प्रस्तुत की। जुलाई 2008 में डॉ. गुप्ता अपने भतीजे की शादी में शरीक होने अमेरिका रवाना हो गये। अगली सुबह सेल की टीम साई धाम के दौरे पर आई। डॉ. गुप्ता के पुत्र की निर्माण कंपनी ने बगल की ज़मीन पर फ्लैट बनाने का कार्य शुरू किया था। स्कूल के एक कर्मचारी ने अधिकारियों को बताया कि बगल में बन रहे फ्लैट डॉ. गुप्ता के पुत्र की कंपनी के हैं। इस कारणवश टीम ने अपने ब्योरे में लिख दिया कि संस्थान के ट्रस्ट की फ्लैट निर्माण

करने की कंपनी है तथा उन्हें अनुदान की आवश्यकता नहीं है। इस तरह आवेदन रद्द कर दिया गया।

2010 में एक साई-भक्त तथा बोर्ड के सदस्य, श्री यशपाल भूटानी ने डॉ. गुप्ता को सेल में पुनः आवेदन देने के लिये प्रोत्साहित किया। श्री भूटानी के भाई, श्री विनोद अरोड़ा, जो सेल (SAIL) भिलाई में कार्यकारी निदेशक के पद पर कार्यरत थे, उनकी पदस्थापना अस्थाई तौर पर दिल्ली मुख्य कार्यालय में किसी नई प्रयोजना के अधीक्षण हेतु की गई थी। साई धाम के आवेदन को अनुमति दिलाने में उनकी मुख्य भूमिका रही। पूर्व राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणव मुखर्जी के पुत्र श्री अभिजीत मुखर्जी, जो महाप्रबंधक सी.एस.आर. के पद पर थे, उन्होंने डॉ. गुप्ता को यह शुभ समाचार दिया कि निदेशक ने भवन की तीन कक्षाओं के निर्माण के लिये 15 लाख रूपये आवंटित कर दिये हैं।

एक अन्य साई-भक्त ने शिरडी साई बाबा स्कूल की परियोजनाओं की चर्चा पॉवर ग्रिड के अध्यक्ष सह निदेशक से की। धन राशि हेतु आवेदन की स्वीकृति तो मिली परन्तु केवल कक्षा के मेज़, कुर्सी आदि सामानों के लिए। डॉ. गुप्ता ने इस बात पर ज़ोर डाला कि अभी राशि केवल कक्षाओं के निर्माण के लिये चाहिए। इसलिये आवेदन को कक्षाओं के निर्माण हेतु ही निर्गत कराया जाए, नहीं तो साई धाम दी गई धन-राशि स्वीकार नहीं कर सकेगा। अधिकारीगण संशय में थे कि नए निवेदन में काफी समय लग सकता है या फिर उसके अस्वीकार होने की भी सम्भावना है। परन्तु डॉ. गुप्ता अपनी बात पर अडिग रहे। उनके आग्रह पर ध्यान दिया गया और अंततः कंपनी ने दो नई कक्षाओं के निर्माण हेतु निवेदन को स्वीकार कर लिया।

ओ.एन.जी.सी. ने शिरडी साई बाबा स्कूल को बहुत उदारता से सहयोग दिया है। 2010 में डॉ. गुप्ता के एक मित्र ने ओ.एन.जी.सी के वित्त निदेशक से अनुदान के लिये निवेदन करने का सुझाव दिया। आवेदन भेजा गया परन्तु वित्त निदेशक तथा एच.आर. निदेशक अवकाश पर थे इसलिये सी.एस.आर

विभाग के अधिकारियों ने सी.एम.डी. के सामने आवेदन प्रस्तुत कर दिया। भाग्य ने साथ दिया और आवेदन स्वीकार कर लिया गया। तदुपरांत सी. एम.डी के सेवानिवृत्त होने पर नए सी.एम.डी. को स्कूल के वार्षिकोत्सव के आयोजन पर बतौर मुख्य अतिथि आमंत्रित किया गया तथा उनसे नई कक्षाओं का उद्घाटन कराया गया जो ओ.एन.जी.सी. के सहयोग से बने थे। डॉ. गुप्ता के विश्वस्त मित्र, श्री अरूण गोयनका ने नए सी.एम.डी. को साई धाम की गतिविधियों से अवगत कराने में अहम भूमिका निभाई। सी.एम.डी. साई धाम के मानवता की सेवा के कार्यों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने अतिरिक्त 10 लाख निधि देने की घोषणा कर दी। आज भी समय समय पर ओ.एन.जी.सी. साई धाम को सहयोग देती रहती है।

डॉ. गुप्ता फरीदाबाद में स्कूल संचालन के अनुभव तथा उसकी सफलता से प्रेरित हो कर शिरडी साई बाबा स्कूल को देश के अन्य हिस्सों में भी शुरू करने की योजना बनाने लगे। इस बार वह ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिये प्रयासरत थे। उन्होंने राजस्थान तथा मध्य प्रदेश में विकल्प तलाशे परन्तु बात नहीं बनी। अंततः उन्हें उत्तर प्रदेश के महोबा जिले के निसवारा गाँव में स्कूल खोलने का अवसर प्राप्त हुआ। पूर्व सांसद श्री विजय बहादुर सिंह जो डॉ. गुप्ता के कनिष्ठ दामाद के मामा हैं, उन्होंने अपने ग्राम निसवारा के विकास के लिये पाँच एकड़ ज़मीन साई धाम के नाम कर दी। डॉ. गुप्ता ने उस ज़मीन तक जाने वाले रास्ते के चौड़ाईकरण हेतु एक एकड़ भूमि का अतिरिक्त क्रय किया।

श्री के.सी.मिश्रा जो ओ.एन.जी.सी. के सी.एस.आर विभाग के मुख्य महाप्रबंधक थे, वे साई धाम के कार्यों से तथा बुंदेलखण्ड में विद्यालय स्थापित करने की योजना से अत्यंत प्रभावित हुए तथा विद्यालय के भवन के निर्माण हेतु उन्होंने कंपनी से 95 लाख की राशि की स्वीकृति दिलवाने में अहम भूमिका निभाई। आर.ई.सी. लिमिटेड ने भी निसवारा में स्कूल निर्माण के लिये 30.80 लाख रूपये का योगदान दिया। निर्माण त्वरित गति से चला तथा 2013 में ही दो कक्षाएँ बन कर तैयार हो गयीं ।

आज निसवारा के विद्यालय में करीब 600 गरीब-वंचित बच्चे मुफ्त शिक्षा के साथ भोजन, वस्त्र, स्वास्थ्य सुविधाएँ, पुस्तक आदि का लाभ उठा रहे हैं। साई धाम ने एक अशिक्षित, कुपोषित तथा बेरोज़गारी से ग्रसित मरूभूमि में ज्ञान की हरियाली फैला दी। निसवारा का दिल्ली से कोई रेल-सम्पर्क नहीं है। सबसे नज़दीकी रेलवे स्टेशन हरपालपुर में है जो निसवारा से 20 कि.मी. दूर है तथा सबसे नज़दीकी शहर है झांसी जो निसवारा से 110 कि.मी. की दूरी पर है। हमें डॉ. गुप्ता की अद्भुत प्रबंधकीय क्षमता तथा दूरदृष्टि वाले नेतृत्व की सराहना करनी चाहिए जिन्होंने भारत के अति-पिछड़े क्षेत्र में शिक्षण संस्था की स्थापना बड़ी सफलता से की है। अब डॉ. गुप्ता अन्य एन.जी.ओ. और समाज-सेवकों से साझेदारी करना चाहते हैं जो देश के विभिन्न हिस्सों में शिरडी साई बाबा स्कूल के तर्ज पर स्कूल स्थापित करने की इच्छा रखते हों।

श्री सी.के.मिश्रा का निसवारा से जो भावनात्मक जुड़ाव है, वो उनके आधिकारिक निवेश से बढ़कर है। वहाँ के ग्रामीण लोगों के विकास के प्रति उनकी लगन ने इस परियोजना को सफल बनाने में अहम भूमिका निभाई है। वे व्यक्तिगत तौर पर निसवारा के स्कूल का दौरा करते रहे हैं तथा साई धाम से जुड़ाव रखते हैं। अपने आधिकारिक स्तर से ऊपर उठ कर जो समाज के प्रति अपना दायित्व निभाते हैं तथा अपने ह्रदय में सेवा-भाव रखते हैं वही लोग मानवता की असली मिसाल पेश करते हैं।

पी.एस.यू. के अलावा अमेरिका में बेस प्रवासी भारतीय भी साई धाम को सहयोग देने में काफी सक्रिय हैं। होम ऑफ होप की अध्यक्षा तथा संस्थापिका डॉ.नीलिमा सभरवाल से डॉ. गुप्ता की मुलाकात की कहानी बहुत रोचक है। होम ऑफ होप, कैलिफोर्निया का एक गैर सरकारी, गैर मुनाफे वाली संगठन है जो भारत में गरीबों को शिक्षा मुहैया कराने में प्रयासरत है। 2009 में जब डॉ. गुप्ता और श्रीमती गुप्ता अपने भतीजे के विवाह में अमेरिका गये थे, तब उनकी मुलाकात श्रीमती रीता शर्मा से हुई जो डॉ. गुप्ता की बहन की सहेली की बहु हैं। श्रीमती शर्मा साई धाम के कार्यों से बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने

डॉ. गुप्ता और डॉ.सभरवाल की मुलाकात तय की। डॉ.सभरवाल एक उदाहारणात्मक व्यक्तित्व हैं जो होम ऑफ होप के ध्येय के प्रति प्रतिबद्ध हैं। प्रत्येक वर्ष वे स्वयं भारत की यात्रा करती हैं। यहाँ आकर वे उन एन.जी.ओ. का दौरा करती हैं जिन्हें उनका संगठन सहयोग देता है। वह एक विवरण भी तैयार करती हैं कि इन स्वयं-सेवी संस्थानों को आगे कैसे सहयोग देना है। 2010 में अगली भारत-यात्रा में उन्होंने साई धाम का भी दौरा किया तथा यहाँ के परोपकारी कार्यों से बहुत प्रभावित हुईं। उन्हें यह ज्ञात हुआ कि शिरडी साई बाबा स्कूल में कम्प्यूटर सुविधा ठीक नहीं है। उनके संगठन ने स्कूल के कम्प्यूटर लैब के लिये 25 नए कम्प्यूटर लगवाने हेतु 30 हजार डॉलर का अनुदान एक अग्रणी कम्प्यूटर संस्थान, एन.आई.आई.टी. को दिया ताकि वो युवाओं को साई धाम के तकनीकी प्रशिक्षण प्रोग्राम के अंतर्गत प्रशिक्षण दे सकें। साई धाम नवयुवकों और नवयुवतियों को यह अवसर मुहैया कराता है जिससे वे कम्प्यूटर लैंगवेज, ग्राफिक डिजाईनिंग तथा हार्डवेयर रिपेयर सीख कर नौकरी हासिल कर सकें। होम ऑफ होप की सहायता से डॉ. गुप्ता का युवाओं को कौशल विकास देने का सपना साकार हुआ।

अगर किसी में परोपकार करने का दृढ़ संकल्प हो तो देर-सवेर ईश्वरीय शक्तियाँ दाता और याचक को जोड़ ही देती हैं। बड़े पैमाने पर परोपकार का विचार करने वाले लोग आपस के मेल-जोल से मानवता की सेवा करने में सफल हो जाते हैं। अमेरिका के एक प्रमुख व्यवसायी, श्री अजय चोपड़ा की सेवा के प्रति निष्ठा इस बात को साबित करती है। वे होम ऑफ होप से जुड़े हुए हैं जहाँ से उन्हें फरीदाबाद के साई धाम के परोपकारी कार्यों के बारे में पता चला। संयोग से वे फरीदाबाद के ही रहने वाले हैं। श्री चोपड़ा ने अपने भाई, श्री अनिल चोपड़ा से फरीदाबाद संपर्क किया तथा संस्था के बारे में जानकारी हासिल की। उन्हें साई धाम के बारे में जितनी ज्यादा जानकारी मिली, वे उतने ही अपनी मातृभूमि के इस संस्थान में योगदान देने के लिये उत्सुक हो गए। डॉ. गुप्ता याद करते हैं जब उन्होंने श्री चोपड़ा से पहली बार

बातचीत की थी। "श्री चोपड़ा ने मुझे फोन पर अमेरिका से सम्पर्क किया। मैं दिल्ली से फरीदाबाद के रास्ते में था। बहुत जोरों से गर्जन के साथ बारिश हो रही थी। फ़ोन कनेक्शन बार बार टूट रहा था। तथा हम एक-दूसरे की बात सुन नहीं पा रहे थे"। अधिकतर अच्छे कार्य में इस तरह की बांधाएँ आती ही हैं। दाताओं के दृढ़ संकल्प से अपना कर्त्तव्य निर्वहन करना चाहिए ताकि रास्ते की सभी बांधाऐं हट जाएँ। श्री अजय चोपड़ा जैसे परोपकारी व्यक्तियों को उनके परोपकार की राह में आने वाली कोई भी गर्जन या बिजली या बाधा डिगा नहीं सकती। उन्होंने साई धाम के लिये 25000 डॉलर की राशि निर्गत कर दी। बाद में इस राशि को दोगुनी कर दी तथा 50000 डॉलर का दान दिया। श्री चोपड़ा 2012 से लेकर आज तक बड़ी उदारता से साई धाम को अपना योगदान देने की कृपा कर रहे हैं।

श्रीमती विनीता भंडारी, जो अमेरिका.में बिल्डिंग किड्ज़ नामक कंपनी की संस्थापिका हैं, उन्हें साई धाम के बारे में होम ऑफ होप से जानकारी मिली। बिल्डिंग किड्ज अमेरिका की एक अग्रणी कंपनी है जिसके किन्डर गार्डन स्कूल समस्त अमेरिका में फैले हुए हैं। जब श्रीमती भंडारी को फरीदाबाद के शिरडी साई बाबा स्कूल के बारे में पता चला तो उन्होंने यहाँ भी किन्डर गार्डन की कक्षा स्थापित करने का निर्णय लिया। डॉ. गुप्ता इस निर्णय से अति प्रसन्न हुए और उन्होंने नए निर्माणाधीन भवन की पहली मंज़िल को के.जी. सेक्शन के लिये आवंटित कर दिया। आज बिल्डिंग किड्ज साई धाम में के.जी. क्लास की तीन कक्षाएं चलाता है जिसमें 144 छोटे बच्चे हाजिरी लगाते हैं। इसका विशेष पाठ्यक्रम कला और नृत्य पर आधारित है। प्रत्येक कक्षा में एक कन्ष्ठि और एक वरिष्ठ शिक्षिका हैं तथा दो कर्मचारी सहायता के लिये भी हैं। इस स्कूल की कार्यवाही तथा नित्य के कार्य कलाप बिल्डिंग किड्ज के मार्गदर्शन पर ही किये जाते हैं तथा आर्थिक सहायता भी वहीं से मिलती है। श्रीमती भंडारी भारत के वंचित परिवारों के नन्हें बच्चों को खेलने, पढ़ने एवं सीखने की वह सारी सुविधाएँ एवं संसाधन उपलब्ध कराना चाहती हैं जो की एक छोटे बच्चे को अमेरिका

में मिलता है। इसका बहुत सकारात्मक प्रभाव बच्चों के पढ़ने और समझने पर पड़ा है। छोटे पौधों को अच्छी तरह सींचने से पेड़ तो निश्चित ही स्वस्थ-सुन्दर होंगे। बिल्डिंग किड्ज के बच्चे जब पहली कक्षा में पहुँचते हैं तब उनका प्रदर्शन उत्कृष्ट होता है।

शिरडी साई बाबा स्कूल की बातें अधूरी रह जाऐंगी अगर हम यहाँ की प्राध्यापिका, श्रीमती बीनू शर्मा की चर्चा न करें। बीनू मैडम को उनके श्वसुर ने इस संगठन से परिचित करवाया। वह इस स्कूल में 2005 में एक शिक्षिका के तौर पर आईं और प्रधान-अध्यापिका का पद 2010 में संभाला। उनकी स्कूल के प्रति निष्ठा अतुलनीय है। मैं उनसे अपने तीसरे दौरे के दौरान मिल पाई क्योंकि अन्य दो दौरों के समय वह शिक्षिकाओं एवं प्रधानाध्यापक की नियुक्ति के लिये निसवारा गईं थीं। मैंने उनसे पूछा कि शिरडी साई बाबा स्कूल से जुड़े रहने की उनकी प्रथम प्रेरणा क्या है? उनक पास दो टूक जवाब था- मेरे विद्यार्थी। बातचीत से पता चला कि पिछले 14 वर्षों से उनके विद्यार्थी उन्हें गौरवान्वित कर रहे हैं।

2017 में दसवीं कक्षा को सी.बी.एस.ई. द्वारा मान्यता प्राप्त हुई थी। अगले साल छात्रों ने उत्कृष्ट प्रदर्शन किया तथा हिन्दी, गणित एवं अंग्रजी में 99, 94 तथा 93 प्रतिशत के उच्च अंक से उत्तीर्ण हुए। सर्वोच्च औसत अंक 89 प्रतिशत रहा। कक्षा में सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाला ऑटो चालक का पुत्र है, जिस बालिका को 95 अंक प्राप्त हुए वह एक दैनिक मजदूर की पुत्री है तथा जिस छात्रा ने सामाजिक विज्ञान में 94 अंक लाए वह एक तलाकशुदा, गरीब माता की संतान है जो घरों में काम काज करके जीवन व्यापन करती है। साई धाम के शिक्षकों और छात्रों का संबंध दीर्घकाल तक रहता है। छात्र आगे की उच्च शिक्षा के विषय में अपने शिक्षकों से परामर्श लेते हैं। आगे चलकर उन्हें नौकरी के लिये भी मदद दी जाती है।

इस स्कूल के छात्र यहाँ से निकलने पर भी अपने स्कूल से जुड़े रहते हैं, वे साई धाम द्वारा आयोजित कार्यक्रम पर उपस्थित रहते हैं। अगर हम

शिरडी साई बाबा स्कूल के वार्षिक उत्सव कार्यक्रम में उपस्थित रहें, जो डॉ.मोतीलाल गुप्ता के जन्मदिन पर 11 दिसम्बर को आयोजित होता है, तो हम बच्चों के अंग्रेजी में भाषण, संगीत, नृत्य को देखकर भूल जाऐंगे कि यह समाज के वंचित वर्ग के बच्चे हैं। ऐसा लगेगा कि ये समृद्ध वर्ग के बच्चे हैं। छात्रों का बीनू मैडम तथा अन्य शिक्षकों के लिये प्रेम और आदर यह दर्शाता है कि साई धाम ने इन बच्चों के जीवन में अनमोल परिवर्तन किया है जिसके लिये वे सदैव आभारी रहते हैं।

दशहरे के अवसर पर मैं जब साई धाम गई थी तब मुझे एक पूर्व छात्र, राहुल से मिलने का अवसर मिला जो 'टाइम्स ऑफ इंडिया' में पत्रकारिता प्रभार में कार्यरत है। वह त्योहार तथा अन्य विशेष अवसरों पर साई धाम जरूर आता है। राहुल ने बताया कि इस स्कूल के अच्छे परिणाम का कारण यह है कि शिक्षक और छात्र दोनों कभी अनुपस्थित नहीं होते हैं। छात्रों की निरंतर उपस्थिति का मुख्य कारण है कि स्कूल का स्वादिष्ट और स्वास्थ्य वर्धक भोजन, जो सभी छात्रों को दिया जाता है। यही कारण है कि शिरडी साई बाबा स्कूल की छुट्टियों में भी 'समर कैम्प' का आयोजन किया जाता है तथा अतिरिक्त कक्षाएँ चलाई जातीं है ताकि छात्र स्कूल आते रहें और भोजन पाते रहें। सरकार जब स्कूलों को तीव्र गर्मी के मौसम में निश्चित तौर पर बंद रहने का फरमान जारी करता है तो डॉ. गुप्ता नगर निगम से विशेष अनुमति का निवेदन करते हैं कि शिरडी साई बाबा स्कूल की बसों को चलने दिया जाए तथा पुलिस की जाँच से मुक्त किया जाए क्योंकि उन दिनों स्कूल की बसों को चलाने की अनुमति नहीं रहती है। इस प्रकार बच्चे स्कूल आ कर भोजन ग्रहण कर पाते हैं। डॉ. गुप्ता दान दाताओं को प्रोत्साहित करते हैं कि वे अपने जन्मदिन या अपनी साल गिरह पर छात्रों के लिए एक दिन के भोजन का खर्च वहन करें। यह पद्धति बहुत सफल हुई है। करीब 70 प्रतिशत भोजन का दाताओं द्वारा प्रयोजन हो ही जाता है। इस तरह साई धाम को आर्थिक तौर पर काफी राहत मिलती है।

इस बात पर अवश्य गौर किया जाए कि साई धाम को यह सफलताएँ बहुत प्रयत्न के बाद मिली हैं। बीनू मैडम वो दिन याद करती हैं, जब उन्हें बच्चों को स्कूल भेजने के लिये उनके माता-पिता को समझाना पड़ता था। छात्रों को स्कूल यूनिफार्म के साथ नेल कटर, कंघी तथा जूता पॉलिश भी दिया जाता था ताकि वे अपने को संवार कर स्कूल आ सकें। शुरू के दिनों में बीनू मैडम तथा अन्य शिक्षकाएँ बच्चों को स्वयं कंघी करना सिखाती थीं ताकि वे सफाई का भी पाठ सीख सकें। आज शिरडी साई बाबा स्कूल के छात्र साफ-सुथरे तथा करीने से तैयार दिखते हैं। अच्छी हिन्दी और अंग्रेजी बोलते हैं तथा हृष्ट पुष्ठ दिखते हैं। इस तरह वंचित वर्ग के अन्य माता पिता इन बच्चों को देखकर अपने बच्चों को भी श्रमिक का कार्य न करा कर स्कूल भेजने के लिये प्रोत्साहित होते हैं।

आज स्कूल में करीब 50 प्रतिशत छात्राएं हैं। प्रारंभ में कन्याओं को स्कूल भेजने के लिये अभिभावकों को प्रोत्साहन देना बहुत बड़ी चुनौती थी। डॉ. गुप्ता महिला सशक्तिकरण के लिये कटिबद्ध हैं। इस बात को ध्यान में रखकर इस परोपकारी दंपति ने प्रथमतः साई धाम मन्दिर के बरामदे में महिला व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्र शुरू किया। यहाँ पर दान में मिली हुई सिलाई मशीनों से सिलाई प्रशिक्षण की कक्षाएँ चलने लगीं। श्रीमती कान्ता गुप्ता के मार्गदर्शन में महिलाओं को सिलाई प्रशिक्षण मिलने लगा। आगे चलकर साई धाम के नए भवन के एक हिस्से में कमरों को पूर्ण तौर से प्रशिक्षण केंद्र बनाया गया तथा पेशेवर प्रशिक्षकों को नियुक्त किया गया। डॉ. गुप्ता की वस्त्र निर्माण कंपनियों में पहचान होने की वजह से इन प्रशिक्षित महिलाओं को इन कम्पनियों में कार्य भी मिलने लगा ताकि वे आत्म-निर्भर बन सकें। आज के समय में साई धाम का भारत की सर्वश्रेष्ठ सिलाई मशीन कंपनी 'सिंगर' के साथ अनुबंध है जो मुफ्त में सिलाई, औद्योगिक सिलाई तथा परिधान डिज़ाइनिंग का प्रशिक्षण देता है। इसके साथ यहाँ एक सुसज्जित ब्यूटी पार्लर भी युवतियों को प्रशिक्षण देता है। इनमें से कुछ ब्यूटिशियनों को नौकरी मिल जाती है तथा कुछ ने तो अपना स्वयं का पार्लर खोल लिया है।

डॉ. गुप्ता ने गरीब-वंचितों के लिये सामूहिक विवाह समारोहों का प्रचलन प्रारंभ किया ताकि वे कन्याओं के विवाह के लिये धन-सृजन करने के बजाए अपनी बालिकाओं की शिक्षा पर धन-व्यय कर सकें। इस प्रकार कन्या के माता-पिता का आर्थिक बोझ हल्का हो जाता है। इस बात को ध्यान में रख कर साई धाम वर्ष में चार बार सामूहिक विवाह आयोजित करता है। 2007 से फरवरी 2020 तक साई धाम ने 1025 विवाह आयोजित किये हैं। प्रारंभ में गरीब परिवारों को सामूहिक विवाह के लिये राज़ी कराना मुश्किल था। श्रीमती नीरा गोयल, एक नेक दिल इंसान ने इस चुनौती को स्वीकारते हुए गरीब परिवारों को सामूहिक विवाह में हिस्सा लेने के लिये प्रोत्साहित किया। ग्रामीण क्षेत्रों में तथा झुग्गियों में घर-घर जा कर इस संस्थान के सदस्य इसके फायदे के बारे में बताते थे और उन्हें इसके लिये प्रोत्साहित करते थे। गुप्ता दंपति को इस आयोजन में सहायता की, उनके निजी मित्र श्री बद्री प्रसाद तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती निशा गोयल ने।1 जुलाई 2007 को 5 जोड़ों का विवाह साई धाम में पहली बार करवाया गया। नव वर-वधू को अनेक उपहार दिये गए। प्रारंभ में साई धाम के सदस्य अपने मित्र तथा रिश्तेदारों से नए जोड़ों के लिये वस्त्र, बर्तन तथा गृह उपयोगी सामान दान देने का निवेदन करते थे। साई धाम की सदस्या श्रीमती रेखा गुप्ता के कुशल नेतृत्व में सामूहिक विवाह एक वृहद आयोजन बन गया है। आज साई धाम नए जोड़ों को वस्त्र, बर्तन, प्रेशर कुकर, गैस चुल्हा, साईकिल, सूटकेस, सौंदर्य प्रसाधन, फैन, इलैक्ट्रीक आयरन, ऊनी वस्त्र, चादर, राशन इत्यादि उपहार-स्वरूप देता है। सामूहिक विवाह के दिन वर-वधू अपने परिवार के साथ प्रातः ही साई धाम पहुँच जाते हैं। सभी को नाश्ता कराया जाता है। सौंदर्य प्रसाधनालय में कार्यरत युवतियाँ वधुओं का श्रृंगार करती हैं। दोपहर में विवाह की रस्में पूरी की जातीं हैं तथा भोजन के पश्चात विदाई की रस्म की जाती है।

आज कई गणमान्य नागरिक सामूहिक विवाह के कार्यक्रम में भाग लेते हैं तथा योगदान देते हैं। प्रारंभ के दिनों में धनराशि के अभाव से दान

में मिली हुई पुरानी वस्तुओं को साफ़ कर उपहार स्वरूप दिया जाता था। श्रीमती कान्ता गुप्ता अन्य स्वयं सेविकाओं के साथ मिल कर स्वयं पुराने कपड़ों को साफ करके उसे नए उपहार का रूप दिया करती थीं। अपितु अब साई धाम केवल नई चीजें उपहार में देता है क्योंकि नव-दंपति को एक नए जीवन की शुरूआत करनी है। साई धाम को इस सामूहिक विवाह से संबंधित चुनौतियों का सामना भी करना पड़ता है। वर-वधू के बारे में पूरी तरह से जाँच-पड़ताल करनी पड़ती है ताकि पहले से शादी-शुदा लोग इस आयोजन में भाग लेने के लिये अपने को पंजीकृत न करा पायें। कभी-कभी छोटी उम्र के भी लड़के-लड़कियों के विवाह का आवेदन आता है जिसे साई धाम स्वीकार नहीं करता। सामूहिक विवाह के पीछे का उद्देश्य है, कम खर्च में विवाह आयोजन करने का प्रोत्साहन देना। उपहार देना प्राथमिकता नहीं है। इन विवाहों से महिला सशक्तिकरण को बल मिलता है।

साई धाम की जवाबदेही यहीं समाप्त नहीं होती है। कई बार विवाह के उपरांत इन्हें परामर्शदाता का भी कार्य करना पड़ता है। अगर वधुओं को उसके ससुराल वाले घर से निकाल देते हैं तो वो पुनः साई धाम मदद के लिये लौट आती हैं। श्रीमती नीरा गोयल ऐसे मामलों में हस्तक्षेप करती हैं तथा युवती, तथा अगर उसके साथ उसका नवजात शिशु भी है, तो उनकी सलामती को प्राथमिकता देते हुए मामलों को सुलझाने का हर संभव प्रयास करती हैं।

श्रीमती नीरा गोयल को इस चुनौती के लिये क्या प्रेरित करता है? बीनू मैडम की अपने छात्रों के प्रति प्रतिबद्धता क्यों है? क्यों श्री सी.के.मिश्रा अपने आधिकारिक कर्त्तव्यों से ऊपर उठकर हवाई यात्रा करके मुंबई से दिल्ली आते हैं, 10 घंटे की यात्रा करके हरपालपुर पहुँचते हैं तथा पुनः कार की यात्रा करके निसवारा के स्कूल का निरीक्षण करते हैं? इन सब सवालों का जवाब यह कि वे परोपकार करने की प्रबल इच्छा रखते हैं। वे इन वंचितों के जीवन में आमूल-चूल परिवर्तन लाना चाहते हैं। और इस प्रकार वे अपना धन्यवाद

ज्ञापन करते हैं उस सर्वोच्च शक्ति के प्रति जिसने इन्हें दूसरों की सेवा के लायक बनाया।

इन सब की नैया के खेवैया हैं डॉ.मोतीलाल गुप्ता। इनकी सहभागिनी श्रीमती कान्ता गुप्ता जी इनकी सह कप्तान थीं जिनकी अनुपस्थिति यह संस्था सदा याद करती है। साई धाम एक बड़ा जहाज है जो गरीबी, भुखमरी, निरक्षरता, बेरोज़गारी की लहरों को पार करता हुआ आगे बढ़ता चला जा रहा है। हम सलाम करते हैं उन सभी सहकर्मियों को जिन्होंने अपने साई धाम के कप्तान, डॉ. मोतीलाल गुप्ता के लक्ष्य को साधने में सदा सहयोग दिया।

डॉ. गुप्ता ने ऐसी संस्था स्थापित की जिसमें लोगों का हित चाहने वाले परोपकारी लोग जुड़ते चले गए। 1988 से गुप्ता दंपति ने साई धाम को अपना घर बना लिया जिसे उन्होंने प्रेम एवं करुणा से सींचा। यहाँ के स्वयं सेवी सदस्यों ने भी अपनी-अपनी ज़िम्मेदारियाँ भली-भाँति निभाई है। साई धाम उन्हें चुंबक की तरह खींच ले आता है। यहाँ के मैनेजर, शिक्षकों तथा कर्मचारियों की निष्ठा और कर्त्तव्य परायणता अतुलनीय है। साई धाम से सबके जुड़ाव का कारण पृथक हो सकता है परन्तु उनका ध्येय एक ही है, वो है सेवा।

साई धाम की एक स्पष्ट विशेषता यह है कि वह दान-दाताओं को परोपकारी कार्य, जो उनके सहयोग से हो रहे हैं, उसके बारे में निश्चय हीं अवगत करता है। अगर कक्षाओं के निर्माण के लिये दान मिला है तो उसका उद्घाटन दान-दाताओं से करवाया जाता है। भोजन प्रायोजित करने वाले लोग भोजन बांटने में भागीदारी निभा सकते हैं। अगर कोई प्रशिक्षण कार्यक्रम किसी संस्था ने प्रायोजित किया है तो उस संस्था को प्रमाण पत्र वितरण समारोह में अवश्य आमंत्रित किया जाता है। और जो नियमित तौर पर साई धाम को आर्थिक तथा अन्य सहायता प्रदान करते हैं उनके लिये परोपकार एक नैतिक कर्त्तव्य है तथा साई धाम उनका मंदिर।

डॉ.मोतीलाल गुप्ता के लिये नित्य एक नई परियोजना के प्रारंभ का दिन होता है। प्रत्येक परियोजना को महत्त्वपूर्ण माना जाता है। कई परियोजनाएँ चल नहीं पातीं तो कुछ बहुत सफल होती हैं। परन्तु असफलताएँ डॉ. गुप्ता को हतोत्साहित नहीं करती बल्कि उन्हें सबक सिखाती हैं। उनकी सभी परियोजनाओं की चर्चा करने के लिये हमें एक अन्य किताब लिखनी पड़ेगी। जैसे मैंने किताब लिखना प्रारंभ किया वैसे ही उनकी एक नई परियोजना प्रारंभ हो गयी है- वह है वस्त्रों का दूर-दराज़ के ग्रामीण तथा आदिवासी क्षेत्रों में वितरण। साई धाम की यह नूतन शाखा दान में मिले हुए कपड़ों की छँटाई, सफाई तथा पैकिंग में लगी है। जो सूती वस्त्र पहनने लायक नहीं होते हैं उनसे सैनिटरी नैपकीन भी बनाए जाते हैं। कपड़ों की बोरियों तथा नैपकिन के पैकेटों को ट्रक में भरकर वितरण के लिये सुदूर ग्रामीण इलाकों में भेजा जाता है। हर माह तीन से चार ट्रक साई धाम से रवाना होते हैं। अब तक हिमाचल प्रदेश, उड़ीसा, राजस्थान, झारखण्ड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, हरियाणा के कई ग्रामीण क्षेत्रों को लाभ पहुँचाया जा चुका है।

श्री के.ए.पिल्लैय साई धाम के प्रबंधक हैं और पिछले 30 सालों से मानवता की सेवा में लगे हैं। उनकी प्रेरणा हैं साई बाबा, बीनू मैडम और उनकी शिक्षिकाओं के लिये प्ररेणा के स्त्रोत हैं उनके छात्र, कर्मचारियों के लिये उनकी प्रेरणा है इस संस्था की संस्कृति तथा उनके प्रति लोगों का सम्मान भाव और कई लोगों के लिये इस संस्था के संस्थापक के प्रति निष्ठा ही प्रेरणा का स्त्रोत है।

श्री विकास मल्होत्रा, जो यहाँ के बोर्ड के कार्यकारी सदस्य है, उनसे मेरी पहली मुलाकात इस जीवनी-लेखन के संदर्भ में हुई। हाल के दौरे से मुझे पता चला कि श्री मल्होत्रा इस संस्था के स्थायी सदस्य नहीं है। परन्तु इस संस्था के प्रति उनकी निष्ठा तथा प्रतिबद्धता अति-सराहनीय है। उनकी सेवाऐं साई धाम के लिये स्वैच्छिक हैं। डॉ. गुप्ता ने इस संस्थान से जुड़े सभी लोगों में एक विश्वास और परोपकार की ज्योति जलाई है। अगर हम थोक व्यापारी का उदाहरण लें, जिसका लंबे समय से एक विश्वास का नाता साई

धाम से है, वह उधार देने में कभी नहीं हिचकता है। फरीदाबाद का स्थानीय जन-समुदाय भी इस एन.जी.ओ. के लिये विशेष सम्मान रखती है। वे हर संभव आर्थिक या वस्तु, सामग्री से साई धाम को सहायता पहुँचाते रहते हैं तथा यहाँ होने वाले आयोजनों में बढ़-चढ़ कर भाग लेते हैं। यहाँ तक कि यहाँ के स्थानीय प्रशासन, संस्थाएँ तथा राजनीतिक नेतागण भी डॉ. गुप्ता को विशेष समारोहों पर सम्मानित करते हैं।

एक व्यक्ति-विशेष का प्रयास अत्यन्त प्रशंसनीय है जिन्होंने अपने सपनों को पंख दिए तथा असंभव को संभव बना डाला। डॉ. गुप्ता एक ऐसे उदाहरण हैं जिनके स्वयं के अथक प्रयासों से तथा दृढ़ संकल्प, निष्ठा, इमानदारी, साहस और नित्य 16 घंटे की कड़ी मेहनत से, वह भी 85 वर्ष की उम्र में, वे गरीबों-वंचितों के जीवन को सुधारने में सफल हुए हैं। डॉ. गुप्ता की परियोजनाओं की शुरुआत बहुत विनम्रशील होती है और आगे चल कर सफलता की बुलंदियों तक पहुँच जाती है। सेवा की सभी संभावनाएँ जो उनके विचार में उपजती हैं उसे बहुत कायदे से कार्यान्वित किया जाता है। यह साई धाम आने पर पूर्णतः सत्य साबित होता है। गुप्ता दंपति ने इस यात्रा का प्रारम्भ अकेले ही किया, कुछ लोगों ने इनकी दार्शनिक भावनाओं से अपने को जोड़ा तथा उनके सहयात्री बन गये, कुछ लोगों ने प्रेरित हो कर अपनी नई राह चुनी तो कुछ लोग साई धाम के आजीवन सदस्य बन गए। साई धाम एक ऐसी संस्था है जिसका एकमात्र ध्येय है मानवता की सेवा।

साई धाम की यात्रा सरल नहीं रही है। नदी जब अपने उद्गम स्थान से निकलती है तब उसे पहाड़ों व चट्टानों से टकराकर आगे बढ़ना पड़ता है। धीरे-धीरे जब वह पहाड़ों से समतल धरती पर उतरती है तब उसकी धारा में एक निरंतरता आ जाती है। नदी फसलों को उगाने में मदद करती है, पीने का पानी देती है तथा इसके अन्दर अनेक प्रकार के जीव-जन्तु पलते हैं। परन्तु नदी को अन्ततः सागर से मिल जाना है। साई धाम भी इसी नदी की तरह है जो सबको जीवन दान देता है तथा लोगों के जीवन में खुशियाँ लाता है। अन्ततः इसके समस्त शुभ कार्य साई के चरण कमलों में समर्पित हो जाते हैं।

अध्याय 5

डॉ. मोतीलाल गुप्ता का व्यक्तित्व

"मैं दासों का दास, तुम्हारा ऋणी हूँ, मैं तुम्हारे दर्शन से धन्य हुआ। यह मेरा भाग्य है कि मुझे तुम्हारे चरणों के दर्शन हुए"

~ साई बाबा

मनुष्य को स्वयं पर गर्व करने के अनेक कारण हो सकते हैं। वैभव का गर्व। प्रतिष्ठा का गर्व। विद्या का गर्व। सौंदर्य का गर्व । सफलता का गर्व। प्रतिभा का गर्व।

गर्व अथवा अहंकार का विचार तुलनात्मक है। गर्व का कारण किसी अन्य सन्दर्भ में अवहेलना का कारण बन सकता है। मैं अपने विद्यालय की सबसे बुद्धिमान विद्यार्थी हो सकती हूँ। यह विचार मुझे गर्व से परिपूर्ण कर देगा। मेरा चुनाव एक प्रतिष्ठित महाविद्यालय में हो जाएगा। यह संभव है कि वहाँ मेधावियों से भरी कक्षा में मैं सबसे पिछड़ी छात्रा बन जाऊँ। मेरी बुद्धिमत्ता में कोई कमी नहीं होगी परन्तु मैं अवमानना से भर जाऊँगी। उसी तरह मैं अपने शहर की सबसे धनी व्यक्ति हो सकती हूँ, यह मेरे गर्व का कारण हो सकता है। परन्तु किसी धनाढ़यों के सम्मेलन में मैं सबसे गरीब व्यक्ति हो सकती हूँ जो मुझे तिरस्कार से भर देगा। चूँकि गर्व का महत्त्व तो दूसरे से तुलना करने में ही है तो हमें अपने गर्व के कारण का सबके समक्ष प्रदर्शन करने की आवश्यकता पड़ती है। अपने को श्रेष्ठ साबित करना तथा दूसरे की हीनता पर ही अहंकार सुदृढ़ होता है। आज के सोशल मीडिआ की दुनिया में अपनी श्रेष्ठता प्रदर्शित करना सहज है क्योंकि इसके लिये बहुत से मंच बनाए गये हैं। हम सबकी सोशल मीडिया पर एक छोटी दुनिया है जहाँ हम अपने गर्व का प्रदर्शन कर सकते हैं। यह संसार एक दूसरे के बीच की प्रतियोगिताओं से ही चिन्हित होता है। हमें तो अपने को दूसरे से तुलना

करनी है और साबित करना है कि हम ही सर्वश्रेष्ठ हैं। अपितु गर्व अगर तुलनात्मक है, तो इस संसार में क्या है जो तुलना के परे है? जो स्वयं में ही सम्पूर्ण है?

श्री हेमाडपंत द्वारा रचित श्री साई सच्चरित्र में साई बाबा के व्यक्तित्व के वर्णन से ऐसा लगता है कि संत ही हैं जो तुलना से परे हैं, वह सम्पूर्ण हैं। उनकी किसी अन्य से प्रतिस्पर्धा नहीं होती। प्रतिस्पर्धा से मिलने वाले लाभों की उन्हें आवश्यकता नहीं होती। साई बाबा एक फकीर थे जो एक टूटी-फूटी मस्जिद में अकेले रहते थे। वे कभी-कभी पास के जंगलों में विचरते या नीम-वृक्ष के नीचे ध्यान में बैठ जाते या बहते हुए नदी-नाले के किनारे बबूल वृक्ष की छाव तले बैठ जाते। उन्हें नैष्कर्म्य अर्थात कर्मों से परे होने की अवस्था प्राप्त थी। एकमात्र कर्म जिसमें वे संलग्न रहते थे वह था दान का कर्म । उन्होंने सदा ही लोगों को स्वास्थ्य, शांति, आनंद और ज्ञान दिया। साई एकाकार थे। वे शिरडी अकेले ही आए थे और ठीक वैसे ही अकेले ही चले गए। वो सबके दाता थे और सभी उनके अपने थे। इस परिस्थिति में कोई भी उनसे अनभिज्ञ नहीं था। जब सब उनमें ही सम्मिलित हैं तो प्रतिस्पर्धा का कोई स्थान नहीं है। अहंकार का भी कोई स्थान नहीं है। गर्व का भी कोई स्थान नहीं है। तुलना का कोई औचित्य नहीं है। इसलिये हम इस निष्कर्ष पर पहुँचे हैं कि अगर गर्व तुलनात्मक है तो गर्व व अहंकार से रहित होना ही सम्पूर्ण है, ईश्वरीय है।

डॉ.मोतीलाल गुप्ता एक ऐसे व्यक्तित्व हैं जो गर्व एवं अहंकार को नकारते हुए सदा सम्पूर्णता की तरफ बढ़ रहे हैं।

डॉ. गुप्ता के लिये जीवन में प्रतिस्पर्धा का कोई स्थान नहीं है। उनका अस्तित्व साई के इच्छानुकूल है। वे सेवा करते हैं क्योंकि यह साई का आशीर्वाद है। जब सब साई-चरणों में समर्पित है तो गर्व का कोई कारण ही नहीं बनता। जब हमारा अस्तित्व अपने परमपिता को अर्पित है तो अहंकार का स्थान कहाँ रह जाता है?

“जब मैंने डॉ. गुप्ता को पहली बार देखा तो वे खुशी और उत्साह से झूम रहे थे”, श्री राघवन जी अपनी यादों को शब्दों से सजाते हैं। श्री राघवन साई बाबा के अनन्य भक्त हैं। वे ‘सिक्यूरिटी प्रिंटर्स प्राइवेट लिमिटेड’ नामक कंपनी के अध्यक्ष सह निदेशक हैं। डॉ. गुप्ता और श्री राघवन की मित्रता 23 वर्षों से चली आ रही है तथा साई-भक्ति की मधुरता उन्हें प्रगाढ़ रूप में जोड़े रखती है।

श्री राघवन, डॉ. गुप्ता द्वारा 1997 में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय साई-भक्त सम्मलेन में भाग लेने आए थे। यह सम्मलेन साई धाम में बाबा की मूर्ति के अनावरण के पवित्र अवसर पर आयोजित किया गया था। एक विशाल जूलुस निकाला गया था। मशहूर भजन गायक बाबा के सुरीले भजन गा रहे थे। जिस तरह श्री हेमाडपंत ने श्री साई सच्चरित्र में चावड़ी समारोह का वर्णन किया है, उसी तरह इस संगीतमय कार्यक्रम में सभी भक्त खुशी से झूम रहे थे। साई बाबा कभी मस्जिद और कभी चावड़ी (जो कि एक या दो कमरों का मकान था) में रहा करते थे। जिस दिन बाबा मस्जिद से चावड़ी को जाते उस दिन भक्तगण भजन कीर्तन करते तथा जुलूस निकालते थे। भक्तगण वाद्ययंत्रों पर भजन गाते हुए चलते और बाबा के साथ चावड़ी तक जाते। श्री हेमाडपंत चावड़ी समारोह का इन शब्दों में वर्णन करते हैं-

“जब बाबा चावड़ी के समक्ष पहुँचे , उस समय उनके मुख मंडल की दिव्य प्रभा बड़ी अनोखी हो गई, ऐसा प्रतीत होने लगा, मानो अरूणोदय के समय रवि क्षितिज पर उदित हो रहा हो। काकासाहेब दीक्षित चाँदी के थाल में गुलाल से सने हुए फूल की पंखुड़ी ले आए और बाबा के ऊपर बरसाने लगे। वाद्य बजते रहे ओर बाबा का मुखमंडल एक दिव्य आभा से जगमगा उठा। सभी लोग तृप्त हृदय से इस रस माधुरी का आस्वादन करने लगे। इस मनमोहक दृश्य और अवसर का वर्णन शब्दों में करने में कलम असमर्थ है। भाव-विभोर होकर भक्त म्हालसापति तो नृत्य करने लगे, परन्तु बाबा की अभंग एकाग्रता यथावत रही। एक हाथ में लालटेन लिये तात्या पाटिल बाबा के बाईं ओर तथा बाबा की कफनी का एक छोर पकड़े म्हालसापति दाहिनी

ओर चला करते थे। सम्पूर्ण वायुमंडल भी खुशी से झूम उठा और इस प्रकार समारोह चावड़ी पहुँचा।"

डॉ.मोतीलाल गुप्ता एवं श्रीमती कान्ता गुप्ता के अथक प्रयास के फल स्वरूप यह सम्मलेन बहुत ही सफल रहा। साई-भक्ति के गठजोड़ ने श्री राघवन और श्री गुप्ता के संबंधों को प्रगाढ़ बना दिया। "श्री मोतीलाल गुप्ता सेवा में डूबे रहते हैं। किसी भी परियोजना को तय करने के बाद उसे पूरा करके ही छोड़ते हैं। अपने लक्ष्य को पूरा करने में कोई विलम्ब नहीं चाहते। जिससे कभी-कभी उनका धैर्य टूटने लगता है", श्री राघवन बतलाते हैं। गुरू जी कभी-कभी क्रोधित भी हो जाते हैं। वह अपने काम में इतनी तन्मयता से डूब जाते हैं कि उसे पूरा करने की प्रक्रिया में उन्हें आभास ही नहीं होता कि वो कब क्रोधित हुए। परन्तु दूसरे ही क्षण वे नील गगन की तरह शांत भी हो जाते हैं।

श्री साई सच्चरित्र के उपाख्यान के अनुसार बाबा भी बिना किसी कारण के क्रोधित हो जाया करते थे। परन्तु कुछ ही क्षणों में वे शांत भी हो जाया करते थे। श्री हेमाडपंत इसका वर्णन निम्नलिखित शब्दों में करते हैं-

"कभी वे भक्तों पर क्रोधित हो जाते तो कभी वे मोम से भी अधिक नरम हो जाते जैसे कि शान्ति और क्षमा की मूर्ति हों। यद्यपि वे क्रोध से आग बबूले हो उठते तथा उनकी आँखें लाल हो जातीं परन्तु अन्दर से वे प्रेम और ममता से भरे रहते। भक्तों को बुलाकर वे कहा करते कि उन्हें तो ज्ञात ही नहीं है कि वे कब उन पर क्रोधित हुए। यदि यह सम्भव है कि माताएँ अपने बच्चों को ठुकरा दें या समुद्र नदियों को लौटा दे तो ही वे भक्तों की उपेक्षा कर सकते हैं अन्यथा नहीं। वे तो भक्तों के पास ही रहते हैं और जब भक्त उन्हें पुकारता है तो वे तुरन्त ही उपस्थित हो जाते हैं। वे तो सदा भक्तों के प्रेम के भूखे हैं।"

समुद्र में कभी नीचे तो कभी ऊँचे ज्वार उठते हैं । जब ज्वार नीचे रहता है तो समुद्र शान्त और शिथिल लगता है। यह समय मछुआरों के लिये बहुत

मददगार होता है जब वे अपना कार्य बिना किसी खतरे के कर सकते हैं। लोग समुद्र तट का आनंद उठाते हैं क्योंकि उस समय ज्वार बहुत कम होता है तथा समुद्र शांत और निर्मल होता है। परन्तु जब ज्वार ऊँचा उठता है तो समुद्र खतरनाक और क्रोध से भरा हुआ दिखता है। मछुवारों और नाविकों को अधिक सावधानी बरतनी पड़ती है। सबसे कुशल नाविकों को भी सचेत रहना पड़ता है क्योंकि प्रकृति के कोप के आगे उनकी कुछ नहीं चलती। समुद्र मनुष्य के अहंकार पर अंकुश लगा रहा होता है। मानव को अपने आप ही प्रकृति के सामने झुक जाना चाहिए क्योंकि उसका घमंड उसके विनाश का कारण बन सकता है। यहाँ एक आवश्यक बिन्दु पर ध्यान देना पड़ेगा। विशाल समुद्र अपने ज्वार-भाटा के लिये उत्तरदायी नहीं है। वह तो सिर्फ अनेक जीव-जन्तुओं का आश्रयदाता है। उसके ज्वार-भाटा के लिये उत्तरदायी तो ब्रह्मांड की शक्तियाँ हैं, जैसे चाँद और सूर्य की चुम्बकीय शक्तियाँ।

बाबा उदार समुद्र की तरह अपने भक्तों के कल्याण के लिये सदैव तत्पर रहते थे। उनका क्रोध, जिससे वे स्वयं ही अनभिज्ञ थे, यह सीख देता था कि उनके भक्तों में विनयशीलता तथा विनम्रता का भाव होना चाहिए ताकि हम अपने अहंकार रूपी शत्रु को वश में कर सकें। गुरू जी इसी संत की छाया-मात्र हैं। गुरू जी ने अपने आप को बाबा को समर्पित कर दिया है जैसे कि समुद्र अपनी लहरों के संचालन के लिये चन्द्रमा को समर्पित है।

एक बार जब मैं साई धाम आई थी तो मैंने देखा कि ऑफिस के एक कर्मचारी को काफी डाँट पड़ रही है क्योंकि उसने स्टाफ रूम की चाबियाँ गलत जगह पर रख दी थीं जिससे सुबह ऑफिस खोलने में देर हो गई। गुरू जी कभी-कभी अत्यंत क्राधित हो जाते हैं। कर्मचारी ने अपनी गलती मान ली। इस तरह का क्रोध लोगों को मानसिक पीड़ा पहुँचा सकता है तथा अहंकार को भी ठेस पहुँचा सकता है। परन्तु साई धाम के कर्मचारी अपने अध्यक्ष महोदय के कुपित होने पर जरा भी विचलित नहीं होते हैं। इसके पीछे एक कारण है। गुरूजी दूसरे ही क्षण कर्मचारी को बुला कर

पूछते हैं, "बेटा तेरे चेहरे पर इतने लाल मुहांसे कैसे हो गए"? गुरू जी बहुत ही प्यार भरे अंदाज़ में उससे बोलते हैं क्योंकि उन्हें उसके चेहरे पर कुछ कीड़ों के काटने के निशान दिख गये थे। उसने हल्के बुखार की भी समस्या बताई। फ़ौरन उसे होमियोपैथिक दवाएँ दी गई। उसके कष्ट का त्वरित निदान हो गया।

कुछ सालों पहले तक कर्मचारियों को गुरू जी के कोप से बचने का एक विशेष सहारा था। वह था मम्मी जी का आश्रय। श्री राघवन बताते हैं, "कान्ता भाभी जी आदर्श अर्धांगिनी थीं"। उनका स्वर्गवास डॉ. गुप्ता के लिये अपूरणीय क्षति है। श्री राघवन उन दुःखद क्षणों को याद करते हैं जब श्रीमती कान्ता गुप्ता का देहवसान हुआ था। डॉ. गुप्ता जिन्होंने अभी तक अपने दुःख को दबाए रखा था, अपने मित्र के सांत्वना भरे स्पर्श से अपनी जीवन संगिनी के वियोग के अश्रुओं को न रोक सके।

"कान्ता भाभी जी असाधारण व्यक्तित्व और अद्वितीय विनम्रता से पूर्ण थीं", श्री राघवन याद करते हैं। वे बताते हैं कि जब कपड़े दान में मिलते थे तो वे अन्य स्वयं-सेविकाओं के साथ लग कर कपड़ों को छांटने और तह लगाने में लग जाती थीं। जब साई के भजन गाए जाते तो वह पूर्णरूप से भक्ति में लीन हो जाती थीं। "इस तरह का व्यक्तित्व था कान्ता भाभी जी का"।

श्री के.ए.पिल्लैय जो साईधाम की सेवा में तीस वर्ष से प्रबंधक के रूप में कार्यरत हैं, उनके भी कुछ ऐसे ही भाव हैं। श्री पिल्लैय का समर्पण साई धाम के प्रति अति-सराहनीय है। वे उन चंद लोगों में से हैं जो साई धाम के प्रारंभिक दिनों से जुड़े हैं। कितने ही लोग आए और गये परन्तु श्री पिल्लैय अपनी निष्ठा में अडिग रहे। उनके और डॉ. गुप्ता के बीच कोई विवाद हो जाने पर श्रीमती गुप्ता ही बीच-बचाव करती थीं। "मैं पिछले 35 वर्षों से हर साल शिरडी तीन या चार बार जाता हूँ। एक बार मैंने डॉ. गुप्ता को बाबा की मूर्ति को लक्स साबुन और पाईप से धोते हुए देखा। यह देख कर मैं हैरान हो गया और मैंने उन्हें बताया कि बाबा की मूर्ति के स्नान का यह

गलत तरीका है। शिरडी के समाधि मंदिर में इस प्रकार से स्नान व जलाभिषेक नहीं किया जाता। डॉ. गुप्ता ने साबुन और पाईप को फेंक दिया। उन्होंने मुझसे विनम्रता से पूछा कि शिरडी में बाबा की मूर्ति के स्नान का कार्यक्रम कैसे किया जाता है, उसकी मैं उन्हें जानकरी दूँ। इस महान व्यक्ति में अहंकार का नाम-मात्र नहीं है। वे सदा सीखने के लिये तत्पर रहते हैं"। श्री पिल्लैय बताते हैं कि डॉ. गुप्ता नित्य एक परियोजना की शुरूआत करते हैं। आश्चर्य यह है कि उनकी सभी परियोजनाएँ लागू की जाती हैं और आगे भी बढ़ जातीं हैं। ऐसी है उनकी काम के प्रति निष्ठा।

श्रीमती आभा मित्तल एवं श्री डी.सी. मित्तल जो गुप्ता दंपति के पारिवारिक मित्र हैं, जो स्वयं भी साई-भक्ति में लीन हैं, उन्होंने भी साई धाम के बारे में कई जानकारियाँ दी। श्रीमती आभा मित्तल ने डॉ. गुप्ता के सहयोग से 'अष्टोत्तर नामावलि' को संस्कृत से हिन्दी और अंग्रेजी में अनुवाद किया था। उनके अथक प्रयासों से किताब प्रकाशित हुई और अनेक भक्तों को पढ़ने और समझने का अवसर प्राप्त हुआ। वे बताती हैं कि पिछले तीन दशकों से गुप्ता दंपति फरीदाबाद प्रातः काल पहुँच जाते, दिन भर का कार्यभार सम्भाल कर संध्या होने पर ही अपने घर दिल्ली को लौटते। अनेकों बार डॉ. गुप्ता साई धाम में ही रात्रि-विश्राम कर लेते थे। विगत 10-12 वर्षों में ही साई धाम के पास की सड़क बनी है। इससे पहले यहाँ आने के लिये कच्ची सड़क ही थी। डॉ. गुप्ता अपनी नीले रंग की वैन चलाते, बगल में श्रीमती गुप्ता बैठतीं तथा वे साई धाम आकर इसकी रचना में जुट जाते। यह संस्था जो ऊँचे इरादे लेकर खड़ी है वह इन्हीं दोनों ने ईंट-ईंट जोड़ कर अपने अथक प्रयासों से इसे चरितार्थ किया है।

एक बार हमें गुरू जी के बड़े भाई से मिलने को अवसर मिला। नब्बे वर्षीय उनके भाई उनके सामने बैठे हुए उनकी साई धाम की कार्यवाई देख रहे थे। केबिन से बाहर जाते हुए उन्होंने अपने छोटे भाई को गौर से देख कर कहा "तुम एक महान कार्य कर रहे हो"।

डॉ. गुप्ता के सभी मित्र तथा रिश्तेदार उन्हें सम्मान से देखते हैं। वे सब के सुख-दुख के साथी हैं। किसी रिश्तेदार का आपरेशन हो, किसी बच्चे का कहीं पर दाखिला हो या किसी दफ्तर का कोई कार्य हो, डॉ. गुप्ता से अगर कोई मदद की गुहार लगाता है तो वो अवश्य उसे सुनते हैं और उसका निदान करने में इतने लीन हो जाते हैं, मानो वो उनका स्वयं का कार्य हो। श्रीमती मोनिका कुमार, साई धाम की सदस्या तथा भजन गायिका कहती हैं कि उनके नाम के अनुकूल ही उनका आचरण भी है, मोती की तरह पवित्र और अनमोल।

श्री दिनेश रघुवंशी, एक प्रसिद्द कवि तथा रोटरी संस्कार चार्टर, फ़रीदाबाद के अध्यक्ष जो साई धाम से कई सालों से जुड़े हैं, वे डॉ.मोतीलाल गुप्ता के व्यक्तित्व को निम्नलिखिल कविता के द्वारा व्यक्त करते हैं-

"फ़कीरी जो जिये मन में वही खुशहाल होता है,
चले आदर्श पथ पर उसका ऊँचा भाल होता है,
धरा पर अनगिनत मोती जन्मते रोज़ ही लेकिन,
कहीं सदियों में कोई एक 'मोतीलाल' होता है।
जिसे न कोई लालच हो, ना तो मृत्यु का ही भय हो,
ज़ुबाँ पर जिसकी बस इंसानियत की ताल हो, लय हो,
सहारा बेसहारों का जो बने ज़िन्दगी भर का,
ज़मीं से आसमां तक ऐसे 'मोतीलाल' की जय हो।

अगर हम घण्टे भर भी साई धाम में समय बितायें तो पायेंगे कि डॉ. गुप्ता कितनी कुशलता से यहाँ का प्रबंधन संभालते हैं। सबको समय पर भोजन करने के लिये कहना, लोगों की मदद करना, आगंतुकों का आदर से स्वागत करना उनके चरित्र का परिचय देता है। उनकी प्रभावशाली परोपकारिता स्वतः चलती रहती है। मेरे पिछले आगमन के दौरान ऑफिस की रसोई की प्रभारी के चेहरे और आँख की पुतलियों पर दाने हो गये थे, जो काफी कष्टदायी थे। गुरू जी ने शीघ्र ही दवा बना कर उन्हें दे दी। मेरे अगले

दौरे में जब मैं यहाँ आई तो वे पूर्ण रूप से स्वस्थ थीं और कोई निशान भी नहीं थे। उन्होंने बताया कि वह चंद दिनों में ही गुरू जी की दवा से ठीक हो गई। गुरू जी में लोगों को स्वास्थ्य प्रदान करने की अद्भुत क्षमता है। वे अपनी होमियोपैथिक दवाइयों से छोटी बीमारियों से ले कर मिर्गी तथा डेंगू जैसी बीमारियों का भी उपचार करने में सक्षम हैं। गुरूजी द्वारा रोगियों को पूर्णरूपेण स्वस्थ करने के अनेक उदाहरण हैं जिनमें से कुछ वृत्तांतों का यहाँ उल्लेख किया जा रहा है -

सन 2000 में एक साई-भक्त अपने चार साल के बेटे को लेकर डॉ. गुप्ता के पास आए। बच्चे का निचला होठ नीला पड़कर लटक रहा था। यह एक अजीबो-गरीब बीमारी मालूम पड़ रही थी। गुरू जी ने साई बाबा से आशीर्वाद लिया तथा कुछ दवाएँ दे दीं। उन्होंने मरीज़ की सारी जानकारी लिख ली क्योंकि उन्हें लगा कि उपचार में समय लग सकता है। परन्तु कुछ समय के इलाज के पश्चात बच्चे के होठ सामान्य हो गये और किसी तरह की तकलीफ भी नहीं रही। आज वह लड़का इंग्लैंड में अपनी पढ़ाई कर रहा है।

कुछ महीने पहले गुरूजी के मित्र, श्री महाबीर गोयल, जो पेशे से पत्रकार हैं, उनका फोन आया, वे काफी घबराए हुए मालूम पड़े। उनके भाई डेंगू से ग्रसित थे। उन्होंने गुरु जी से इलाज करने का निवेदन किया। रात्रि के नौ बज गये थे। गुरू जी साई धाम से अब घर लौटने वाले थे। उन्होंने दवाओं की दो पुड़िया तैयार की और उन पर नम्बर एक और नम्बर दो लिख दिया। उन्होंने श्री गोयल को फोन से सूचना दी कि वे दवा साई धाम के चौकीदार से ले लें। उनको कहा गया कि दवा नम्बर एक को उसी रात दे दी जाए। बुखार न होने पर अगली सुबह उन्हें दवा नम्बर दो दे दी जाए जिससे रोगी के बदन दर्द को भी आराम मिलेगा। इन आदेशों का पालन किया गया। इन दो दवाइयों के सेवन से मरीज़ डेंगू से पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गए। श्री गोयल के भाई ने अपनी कृतज्ञता दर्शाने हेतु अपनी आइ.एम.टी. फरीदाबाद स्थित फैक्ट्री में लोगों के मुफ्त इलाज के लिये एक होमियोपैथिक डिस्पेंसरी खोल दी जिसका उद्‌घाटन गुरू जी के कर-कमलों द्वारा करवाया गया।

एक अन्य घटना है साई धाम ऑफिस के कर्मचारी की बेटी की जिसे अक्सर मिर्गी के दौरे आते थे जिसकी वजह से उसे प्रत्येक दो या तीन महीनों पर अस्पताल में भर्ती करना पड़ता था। इसी तरह देहरादून के प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान के संस्थापक की बेटी को भी मिर्गी के दौरे आते थे। कर्नाटक के हुबली जिले के एक भक्त के भी बच्चे को यह समस्या थी जिसका वो निदान ढूँढ रहे थे। गुरू जी की दवा से इन तीनों मिर्गी के मरीजों का सम्पूर्ण इलाज हो गया।

1990 से 1996 तक गुरूजी कुछ भक्तों के साथ साल में एक या दो बार शिरडी अवश्य जाते थे। पूरी टोली कर्नाटक एक्सप्रेस से यात्रा किया करती थी। ट्रैन कोपरगांव में रूकती थी जो शिरडी से कुछ मील दूरी पर है। गुरू जी अपनी दवा का बैग भी साथ लेकर चलते थे तथा शिरडी में मेडिकल कैम्प का आयोजन भी करते थे। एक बार जब अपनी टोली के साथ वे कोपरगांव में ट्रेन का इंतज़ार करते हुए कुछ साथियों को दवाई दे रहे थे तो उन्हें दवा बांटते देख एक फेरी वाला उनके पास आया। उसने कहा कि विवाह के 12 वर्ष होने पर भी उसे संतान की प्राप्ति नहीं हुई है। गुरू जी ने उसे दवा दी और साल भर के अंतर्गत उसने संतान सुख प्राप्ति की खुशखबरी सुनाई।

इस चमत्कारी डॉक्टर का कहना है कि यह दवा नहीं बल्कि साई की असीम कृपा है जिससे रोगी स्वस्थ हो जाते हैं। गुरू जी एक आध्यात्मिक चिकित्सक भी हैं। एक घटना यहाँ उल्लेख करना आवश्यक है। श्री प्रवीण कुमार गुप्ता, महाप्रबंधक (वित्त) एन.टी.पी.सी. जो अब साई धाम के ट्रस्टी भी हैं, उनके पिता पिछले पाँच सालों से बीमार थे। बीमारी इतनी गंभीर हो गई थी कि हर बार उनके यूरेथ्रा से पेशाब निकालना पड़ता था। श्री कुमार और उनके भाई ने डॉ. गुप्ता से आग्रह किया कि वे साई बाबा से उनके मोक्ष की कामना करें। गुरू जी ने साई बाबा से प्रार्थना की कि रोगी पर दया करें तो उन्हें एक आलौकिक दृष्टांत का आभास हुआ। बहुत साल पहले रोगी ने एक विधवा स्त्री को उसकी पुत्री के विवाह के लिये दान का आश्वासन दे कर समय आने पर मना कर दिया और यही उनके कष्ट का कारण बना। हम

जैसा बोएंगे वैसा ही काटेंगे। परिवार ने यह घटना याद की तथा दृष्टांत की सत्यता को स्वीकार किया। श्री प्रवीण कुमार ने अपने भाई के साथ साई धाम मंदिर में यह संकल्प लिया कि वे दोनों भाई साई धाम के अगले सामूहिक वैवाहिक कार्यक्रम में एक-एक विवाह का खर्च वहन करेंगे। बीमार पिता जो पिछले पांच-छह सालों से कष्ट झेल रहे थे, उन्हें उनकी इच्छा अनुसार अगले 48 घंटे के भीतर मोक्ष मिल गया।

डॉ.मोतीलाल गुप्ता ने हज़ारों को स्वास्थ्य, खुशी और सांत्वना दी है। उनके परोपकार की कोई सीमा नहीं है। उनके आदर्श कर्म ने अन्य लोगों को सच्चाई और सेवा के पथ पर चलने के लिये प्रेरित किया है। वे स्कूल के बच्चों को अपने भाषण द्वारा सकारात्मक ऊर्जा से भर देते हैं ताकि वे अपने माता-पिता की अच्छी संतान और देश के अच्छे नागरिक बन सकें। उन्होंने कितने ही लोगों को परोपकार करने लिये प्रेरित किया, जैसे कि एक वट-वृक्ष तो पशु-पक्षियों को लाभ पहुँचाता ही है, साथ में इस विशाल वृक्ष से निकली टहनियाँ भी यही सत्कर्म करती हैं।

श्री एस.के.माथुर, जो एक सेवा-निवृत इंजीनियर हैं तथा अपना अधिकतम समय साई धाम के कार्यों में व्यतीत करते हैं, उनसे मेरी मुलाकात और बातचीत बहुत शिक्षाप्रद है। श्री माथुर का साई धाम का प्रथम आगमन कार्यवश था। उन्होंने इतने बड़े पैमाने पर परोपकार के कार्यों का संचालन अबतक नहीं देखा था। उन्होंने यह भी नहीं सोचा था कि वह भी इस कार्य का हिस्सा बनेंगे। श्री माथुर इन कार्यों से इतने प्रभावित हुए, खास कर साई धाम के वंचित बच्चों की शिक्षा और भोजन अभियान से कि उन्होंने भी अपने को इस संस्था से जोड़ लिया। आज वे साई धाम में सोलर से उपलब्ध बिजली के कार्य की देख-रेख करते हैं।

श्री माथुर ने डॉ. गुप्ता के नेक कार्यों से प्रेरित हो कर एक अपनी भी स्वयंसेवी संस्था, 'कर्त्तव्य', की शुरुआत की है। कर्त्तव्य सरकारी स्कूलों में मुफ्त में सेनिटरी नैपकीन के वितरण का कार्य करता है। "परोपकार क्या है?

इसे क्यों करना चाहिए? सेवा किस तरह करनी चाहिए, यह सब मैंने बाऊजी से सीखा है", श्री माथुर कहते हैं। वे व्यक्तिगत स्तर पर भी परोपकार करना चाहते थे। सेनिटरी नैपकीन का वितरण छोटे स्तर पर शुरू करके आज कई सरकारी स्कूलों में इसे प्रारम्भ किया गया है। वे आँगनवाड़ियों के साथ भी मिल कर इस कार्य को आगे बढ़ाने में सफल रहे हैं। इस कार्य के लिये धन-राशि मित्रों तथा पड़ोसियों से मिल जाती है जो अधिकांशतः सेवा-निवृत हैं। डॉ. गुप्ता भी इस सेवा के कार्य के लिये आर्थिक मदद करते हैं।

इस परियोजना से जुड़े हुए फैसलों को गुरू जी से विचार-विर्मश करके निदान कर दिया जाता है। एक ऐसी ही समस्या थी कि इस्तेमाल किये हुए सैनिटरी नैपकिन का अपशिष्ट निपटान। इस समस्या का हल निकाला गया और अपशिष्ट निपटान मशीनों के निर्माताओं से करार किया गया और जरूरत के हिसाब से इनको स्कूलों में स्थापित किया गया। सैनिटरी नैपकिन के वेंडिंग मशीन भी कई स्कूलों में लगा दी गई हैं।

नैपकीन के वितरण के अलावा श्री माथुर ने प्लास्टिक थैली का प्रयोग रोकने के लिये अभियान शुरू किया है। इस कार्य के लिये आस-पास के लोगों से दान में प्राप्त पुरानी चादरों और पर्दों से गरीब महिलाओं से थैलियों की सिलाई कराई जाती है तथा उन्हें मज़दूरी भी दी जाती है। गांधी जयन्ती के अवसर पर श्री माथुर ने करीब 800 थैलियां फरीदाबाद सेक्टर-16 की सब्जी मंडी में वितरित कीं। श्री माथुर का कहना है कि परोपकार के इस मार्ग पर चलने का सर्वप्रथम कारण हैं डॉ. गुप्ता।

मैं एक और संस्था 'ब्राईट फ्युचर' का उल्लेख करना चाहूँगी जो पूर्वी दिल्ली के गाजीपुर की झुग्गियों में बसे बच्चों को स्कूल के उपरान्त दी जाने वाली शिक्षा का कार्य करता है। इसकी संस्थापक, श्रीमती कोमल सिंह, डॉ.मोतीलाल गुप्ता की पुत्री की सहेली हैं और प्रवासी भारतीय हैं। कोमल जी एक समर्पित समाज सेविका हैं जो झुग्गी-झोपड़ियों में रहने वाले बच्चों के उद्धार के लिये सेवा में जुटी हुई हैं। परन्तु इस परोपकारी कार्य को भारत में

किस प्रकार आरम्भ किया जाए, इसकी उन्हें जानकारी नहीं थी। कोमल जी कहती हैं, "अंकल ने वक्त ज़ाया किये बगैर मुद्दे पर आ गए। वह बातें कम करते हैं और कार्य को बिना विलम्ब आरम्भ करने के लिये तत्पर रहते हैं। उन्होंने ट्रस्ट स्थापित करने के लिये जो बुनियादी ज़रूरतें होती हैं, उससे अवगत कराया तथा उन व्यक्तियों के नाम और पते दिये जो मुझे मदद कर सकते थे। जिस तीव्र गति से वे कार्य सम्पादित करते हैं, वह विस्मयकारी है। उनकी प्रतिक्रिया त्वरित होती है तथा वो 'अभी का अभी' में विश्वास रखते हैं। उनकी कागजी कार्यवाही त्रुटिहीन होती है। वे कल पर कभी भरोसा नहीं करते हैं। वे निरंतर, बिना थके, सप्ताह के सातों दिन कार्य करते हैं। उनका निशाना अर्जुन की तरह अपने ध्येय पर रहता है"। 2009 से कोमल जी प्रत्येक वर्ष तीन से चार महीनों के लिये भारत आती हैं तथा ब्राईट फ्यूचर के लिये कार्य करती हैं।

गुरू जी ने अनेक युवाओं को उनके सपने साकार करने में मदद पहँचायी है। उनकी लोगों पर दया दृष्टि साक्षात साई बाबा का आशीर्वाद है। गुरू जी के ही आशीर्वाद ने मेरा भी कैरियर संवारा है। उसी प्रकार गुरू जी ने मेरे भाई को भी अपना आशीर्वाद दिया है। मेरा भाई मेरे माता-पिता के साथ 2010 में साई धाम पहली बार आया। पहली मुलाकात में ही उसे गुरू जी से पढ़ाई में ध्यान नहीं देने के लिये डाँट पड़ी थी। गुरू जी का कोप ही उसके लिये आशीर्वाद बन गया क्योंकि यह उसके लिये एक अनमोल घड़ी थी, जब उसे गुरू मिल गए। 2016 में वो जब अच्छी नौकरी की तलाश में था, उसी समय गुरू जी ने उसे आश्वासन दिया कि उसे एक महीने के अन्दर शुभ समाचार मिल जाएगा। गुरू जी के आशीर्वाद से उस पर साई कृपा हुई और उसे नौकरी मिल गई जिससे उसके जीवन की दशा और दिशा बदल गई।

2018 में मैं अपने परिवार के साथ गुरूजी से मिलने गई। मेरे भाई ने कई अन्तर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालयों में आगे की पढ़ाई के दाखिले के लिये आवेदन दिया था। इस बारे में मैं भी काफी चिंतित थी। कई विश्वविद्यालयों के परिणाम आ गये थे परन्तु हम उन परिणामों से संतुष्ट नहीं थे। हमारी भेंट के दौरान

हमने देखा कि गुरू जी कंप्यूटर पर किसी तकनीकी समस्या को हल करने में जुटे हैं। गुरु जी ने मेरे भाई से इस समस्या को सुलझाने का प्रयास करने को कहा। बाबा की दया से उसने वह समस्या हल कर दी। गुरू जी ने उसी क्षण उसे आशीर्वाद दिया कि वह सितम्बर महीने में अपनी पढ़ाई के लिये विदेश रवाना हो जायेगा। हमें ये पता था कि गुरू जी का आशीर्वाद सदा सत्य होता है परन्तु हमें जहाँ तक ज्ञात था, सभी विश्वविद्यालयों के परिणाम तो घोषित हो चुके थे। करीब डेढ़ महीने बाद मेरे भाई ने मुझे फोन किया। उसी दिन मैंने साई सच्चरित्र का पारायण किया था। उसने मुझे बताया कि गुरू जी की भविष्यवाणी सत्य निकली और इंग्लैंड के एक अग्रणी विश्वविद्यालय में उसका चयन हो गया है। इतने विख्यात विश्वविद्यालय में दाख़िला होने की उसे उम्मीद ही नहीं थी और इसी कारण यह बात उसकी स्मृति में ही नहीं थी कि उसने वहां का फॉर्म भी भरा है। 29 सितम्बर 2018 को मेरा भाई इंग्लैंड के लिये रवाना हो गया। गुरू जी की वाणी अक्षरशः सत्य हुई।

डॉ.मोतीलाल गुप्ता की जीवनी अद्भुत है। उसे शब्दों में ढालना बहुत चुनौतीपूर्ण कार्य है। एक कुशल चिकित्सक, अलौकिक आरोग्यदाता, प्रेरक शिक्षक तथा समर्पित समाज सेवक, डॉ. गुप्ता के व्यक्तित्व के कई पहलू हैं। अपितु वे अहंकार से पूर्णतः मुक्त हैं। उनके लिये 'मैं' शब्द का कोई महत्व नहीं है। उनका पूर्ण जीवन कर्म और भक्ति से परिपूर्ण है। वे तन-मन व आत्मा सहित साई चरणों में समर्पित हैं। गुरु जी गृहस्थ आश्रम में रहते हुए विषयों से अनासक्त होने का पाठ पढ़ाते हैं। उनके व्यक्तित्व का वर्णन करने में शब्द कम पड़ जाते हैं। फिर भी उनकी जीवनी को एक वाक्य में लिखा जा सकता है कि वे सच्चिदानंद सद्गुरु साई नाथ महाराज के अनन्य भक्त व अनुयायी हैं।

मैं गुरू जी के दर्शन के लिये उनके घर, ग्रेटर कैलाश पहुँची थी। उस समय उन्हें घुटनों में काफी दर्द था। मैंने गुरूजी से पूछा, "आप बाबा से क्यों नहीं प्रश्न करते कि यह दर्द और तकलीफ क्यों"? उन्होंने बड़ी सरलता से जवाब दिया कि वे बाबा से सवाल नहीं करते। जब मैं अपने मालिक के शरणागति में हूँ तो सवाल क्यों करना है? मुझे उनसे जो कुछ मिलता है, वह

मेरे भले के लिये ही है। यहाँ तक ही यह दर्द भी। हमें अपने अच्छे-बुरे कर्मों का फल भोगना ही पड़ता है। हमें सहनशीलता से उसे स्वीकार करना चाहिए। जब स्वयं साई बाबा ही गुरू जी के रक्षक एवं आश्रयदाता हैं तो उन्हें चिन्ता किस बात की?

यह सितम्बर 1998 की बात है। एक बार मध्य रात्रि में गुरू जी को हल्का दिल का दौरा पड़ा था। उनके कर्त्तव्य-परायण पुत्र श्री संदीप गुप्ता जी जब उस घटना को याद करते हैं तो लगता है कि हम श्री साई सच्चरित्र का ही कोई अध्याय सुन रहे हैं। "रात के करीब दो बजे मुझे गहरी नींद में यह दृष्टांत हुआ कि पापा को मेरी जरूरत है", श्री संदीप गुप्ता याद करते हुए बताते हैं। उस रात केवल वे दोनों ही घर में थे। परिवार के अन्य सदस्य बाहर गये हुए थे। जब वह पिता जी के कमरे में गये तब उन्होंने उन्हें बिस्तर पर नहीं पाया। उन्होंने बाथरूम का दरवाज़ा खटखटाया। तब अन्दर से एक धीमी आवाज़ सुनाई पड़ी। वह समझ गये कि कुछ तो गड़बड़ है। अपने पिता से किसी तरह दरवाज़ा खोलने को कहा। वे फ़ौरन अपने पिता को लेकर सबसे नज़दीकी अस्पताल पहुँचे जहाँ पता चला कि उन्हें दिल का हल्का दौरा पड़ा है। दूसरे दिन ऑपरेशन किया गया तथा बंद धमनी में स्टंट डाला गया। श्री संदीप गुप्ता कहते हैं कि वे उनके साई बाबा ही थे जिन्होंने उन्हें गहरी नींद से जगाया और अपने पिता के बचाव के लिये उन्हें दौड़ाया।

ऐसे आलौकिक चमत्कारों से साई बाबा अपने प्रिय भक्तों की रक्षा करते हैं!

श्रीमती पूनम मोतवानी गुप्ता, डॉ. गुप्ता की बहु, उनके भोजन की समय-सारणी तैयार कर रही थीं तथा डॉक्टर से चेक-अप का समय निर्धारित कर रही थीं। श्रीमती मोतवानी-गुप्ता स्वयं भी एक सफल उद्यमी हैं। वे कहती हैं, "डैड कोई भी निर्णय शीघ्र ले लेते हैं। कुछ दिन पहले हम आँख के डॉक्टर से परामर्श लेने गये, जिन्होंने बताया कि उनकी आँखों के लिये छह इंजेक्शन आवश्यक हैं। मैं हिचकिचा रही थी कि किसी अन्य चिकित्सक से भी परामर्श

ले लिया जाए। परन्तु डैड ने समय बर्बाद न करते हुए त्वरित निर्णय ले लिया और छह सूई भी लगवा लिये ”।

श्रीमती कान्ता गुप्ता के स्वर्गवास के बाद श्रीमती पूनम मोतवानी गुप्ता तथा श्री संदीप गुप्ता ने साई धाम की बागडोर को सँभालने का निर्णय लिया है। मानवता के कल्याण के लिये वे अपने पिता की सहायता करने में जुट गये हैं।

अगले दिन हमें साई धाम की वेबसाईट निर्माण के सिलसिले में नेहरू प्लेस जाना था। वहां पर एक बैठक निर्धारित थी। गुरू जी अपने फिजीयोथैरपी के कार्यक्रम के बाद शीघ्र बैठक के लिये तैयार हो गये। सिया भैया ने हमें नाश्ते में आलू के पराठे खिलाए। मैंने पिछली बार से भी अधिक आलू के पराठे खाए। इस बार हमें शरीफा भी मिला जो मेरे और गुरू जी का प्रिय फल है। भोला भैया समय पर हाज़िर हो गये और गुरू जी का ब्रीफकेस तथा लैपटाप गाड़ी में रख लिया। हम नेहरू प्लेस की तरफ निकल पड़े। जब तक हमारी मीटिंग चल रही थी, तब तक गुरू जी को कई फोन कॉल आए। साई धाम के माली को स्कूल के मैदान में लगे घास को संवारने को कहा जा रहा था, कुछ कागजों पर हस्ताक्षर चाहिए थे, कपड़ों की नई खेप को बोरियों में बंद करवाना था, एक चपरासी को ऑफिस से हटाकर कपड़े छाँटने वाले विभाग में भेजना था और निसवारा में खराब पड़े प्रिंटर को दिल्ली मंगवाना था। इतने में ही गुरू जी का ध्यान इस ऑफिस के बेहतर किस्म के डस्टर पर पड़ा। इस डस्टर में मार्कर के लिये एक होल्डर भी था। गुरू जी ने विनम्रता से उस डस्टर को एक दिन के लिये मांगा तथा उसे शाम तक वापस करने का वादा किया। बैठक समय पर समाप्त हो गई और मुझे कानपुर के लिये ट्रेन पकड़ने का पर्याप्त समय मिल गया। हम जब भोजन के लिये घर की तरफ बढे, तब गुरु जी ने कहा, “भोला देखो ये डस्टर बहुत बढिया किस्म के हैं, इसलिये अगली बार हम ऐसे ही डस्टरों को स्कूल के लिये ऑर्डर देंगे। इस सैम्पल को सप्लायर को दिखा कर इसे आज शाम तक उन्हें वापस पहुँचा देना”।

अध्याय 6
श्री साई सच्चरित्र : एक अमूल्य निधि

"वे भाग्यशाली, जिनके समस्त पाप नष्ट होने हों, वे ही मेरी उपासना की ओर अग्रसर होते हैं। यदि तुम केवल 'साई साई' का ही स्मरण करोगे तो मैं तुम्हें भवसागर से पार उतार दूँगा। इन शब्दों पर विश्वास करो, तुम्हें अवश्य लाभ होगा। मेरी पूजा के निमित्त कोई सामग्री या अष्टांग योग की आवश्यकता नहीं है। मैं तो भक्ति में ही निवास करता हूँ"

~ साई बाबा

श्री साई सच्चरित्र एक कविता है। एक ऐसी कविता जो एक संत के दिव्य जीवन का गुणगान करती है, जिनका अवतार इस लोक में लोगों के कल्याण के लिये हुआ। इस कविता की पंक्तियों में इतने रस सम्मिलित हैं कि इसका सार एक जीवन काल में समझ पाना कठिन है। यह संभव है कि हमारा मन इस कविता के भाव को न समझ पाए परन्तु हमारी आत्मा इस कविता के लय के साथ लयबद्ध होने की क्षमता रखती है। यह कविता तुच्छ मानव और दिव्य ईश को प्रेम के धागों से जोड़ देती है। प्रेम अमूल्य है। प्रेम ही तो हमें अपने माता, पिता, भाई, बहन, मित्र, जीवनसाथी से जोड़ता है। प्रेम जल की तरह पवित्र और निर्मल है। पात्रों के अनुसार ये भिन्न-भिन्न आकार ले लेता है। माता के प्रति प्रेम अपने शिक्षक के प्रेम से भिन्न है, अपने प्रियवर के प्रति प्रेम अपने मित्र के प्रेम से भिन्न है। यद्यपि प्रेम का आकार हर के लिये भिन्न है परन्तु इसका मूल तो एक ही है - प्रेम का मूल। प्रेम अपरिहार्य है। अपितु क्या कोई प्रेम है जो निराकार है? क्या कोई प्रेम है जो किसी शरीर मात्र में नहीं बल्कि पूरे ब्रह्माण्ड में समाता है? क्या कोई प्रेम है जो सनातन है? क्या कोई प्रेम है जो गर्भ या पवित्र वचनों के परे है? ऐसा प्रेम जो शर्तों और कारणों पर

नहीं बंधा हो, जिसका न आदि हो और न अंत, जिसे समय, स्थान या शरीर की आवश्यकता न हो।

यही प्रेम है, साई बाबा का प्रेम - सत् चित आनंद का प्रेम।

श्री साई सच्चरित्र में इसी प्रेम को लयबद्ध किया गया है। इस ग्रन्थ में बाबा का उनके भक्तों के प्रति प्रेम की अनेकों लघुकथाएँ लिखी गई हैं। बाबा की महिमा से भक्तों को सफलता, स्वास्थ्य, आनन्द, सुख तथा खुशी की प्राप्ति होती थी। श्री साई सच्चरित्र बाबा के जीवन की आँखों-देखी झांकी तथा उनके शिक्षा की बहुत अनुपम प्रस्तुति है। यह पाठकों को सहज ही उपलब्ध है। बाबा साक्षात प्रेम की मूर्ति थे जो एक समय में शिरडी, महाराष्ट्र में वास करते थे। यह पुस्तक उसी काल का झरोखा है जब बाबा शिरडी में रहने आए थे। हम अपनी कल्पना से, लेखक के शब्दों द्वारा शिरडी की झांकियों को अपने मानस-पटल पर जीवंत कर सकते हैं।

साई सच्चरित्र से ही हमें लेखक के बारे में यह पता चलता है कि उन्हें बाबा के दर्शन का सौभाग्य 1910 में हुआ। वे अपने मित्र श्री नानासाहेब चंदोरकर तथा काकासाहेब दीक्षित का आभार प्रकट करते हैं जिन्होंने उन्हें शिरडी जा कर बाबा के दर्शन करने की प्रेरणा दी। श्री गोविन्द रघुनाथ दाभोलकर, उर्फ श्री हेमाडपंत ब्रिटैन-शासित भारत के सरकारी अधिकारी थे, जो बाबा की महासमाधि से दो साल पूर्व, 1916 में सेवानिवृत हो गये थे। अध्याय-3 में वे लिखते हैं कि बाबा के अनुग्रह से सेवानिवृति के उपरांत उन्हें अल्पकाल के लिये एक अन्य सरकारी नौकरी मिल गई थी। इस अल्पकाल सेवा के उपरांत उन्होंने स्वयं को साई बाबा की सेवा में समर्पित कर दिया।

मूल पुस्तक मराठी के ओवी छन्दों में लिखी गई है। ओवी, दोहे की भाँति कविता लेखन की शैली है जो मराठी साहित्य में उपयोग की जाती है। यह काव्यगत शैली 12वीं शताब्दी से चली आ रही है। मराठी के प्रबुद्ध कविगण जैसे, संत श्री ज्ञानेश्वर, श्री एकनाथ महाराज एवं श्री नामदेव ने कई दार्शनिक काव्य मराठी ओवी में लिखे हैं। ज्ञानेश्वरी जिसे भार्वाथ दीपिका भी

कहते हैं, वह भगवत् गीता का माराठी ओवि में प्रस्तुतिकरण है जिसे 12वीं सदी में लिखा गया। ओवि छन्दों में लोक गीत का प्रचलन 12वीं शताब्दी के भी पहले पाया गया है।

अध्याय 52, जो मूल पुस्तक का अंतिम अध्याय है, उसमें श्री हेमाडपंत अपने समापन की टिप्पणी प्रस्तुत करते हैं। लेखक सूची देने का प्रस्ताव रखते हैं जैसे कि मराठी कविताओं में प्रचलन है। उस सूची में सभी अध्यायों के बारे में एक या दो छंदो में विवरण रहता है। परन्तु हेमाडपंत के एकत्रित अध्यायों में ऐसी सूची नहीं पायी गयी। ऐसा माने कि लेखक की कविता का समापन उन्होंने ने अपनी आत्मा के द्वारा किया और ना कि शब्दों के द्वारा। बाबा के अन्य भक्त, श्री बी.वी.देव ने, जो थाणे में मामलातदार के पद पर कार्यरत थे, हेमाडपंत की साई सच्चरित्र की सूची तैयार कर उसे सम्पूर्ण किया। श्री बी.वी.देव के कुछ अनुभवों को सच्चरित्र के 40वें एवं 41वें अध्याय में सम्मिलित किया गया है। श्री दाभोलकर का स्वर्गवास 1929 में हुआ। इसलिये श्री साई सच्चरित्र 1929 के बाद मूल रूप से प्रकाशित हो पाई होगी।

श्री साई सच्चरित्र का अंग्रेजी में प्रथम अनुवाद श्री नागेश वासुदेव गुणाजी ने किया। पेशे से श्री गुणाजी एक अधिवक्ता थे जिन्होंने 28 किताबें लिखी थीं। वे एक प्रख्यात विद्वान थे। वे साई बाबा की शिक्षा से बहुत प्रभावित थे, अत: उन्होंने मूल साई सच्चरित्र का मराठी ओवि से अंग्रजी में अनुवाद करने का कार्य किया। श्री गुणाजी का स्वर्गवास 1964 में हुआ। इसलिये हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि श्री साई सच्चरित्र गैर मराठी भाषियों को 1964 तक उपलब्ध हो गया होगा। श्रीमती ज़रीन तारपोरेवाला साई बाबा की अनन्य भक्त थीं जिन्होंने सन 2003 में श्री साई सच्चरित्र का अंग्रेजी अनुवाद मराठी ओवी के छंद से छंद मिलाकर किया। इस पुस्तक का संपादन, टाइपिंग और प्रकाशित करने का शुभ कार्य श्री विजय राघवन (जो श्रीमती ज़रीन को प्रेम से दीदी सम्बोधित करते थे) तथा डॉ.मोतीलाल गुप्ता ने किया। श्रीमती ज़रीन ने अपनी पुस्तक 'श्री साई समारथ सच्चरित्र' के अभिस्वीकृति में इन दोनों के बहुमूल्य योगदान के लिये अपना आभार व्यक्त किया है। इस पुस्तक के

अग्रिम प्रकाशन का प्रतिलिप्य अधिकार (कापीराईट) श्री साई बाबा संस्थान को दे दिया गया है।

कैसा दृश्य हुआ करता होगा जब साई बाबा मस्जिद में निवास करते थे- उनकी बोली कैसी होगी, वे क्या खाते होंगे, किस तरह शिरडी वासियों के साथ हँसते-खेलते होंगे? इस ईश्वर के मनुष्य अवतार की लीलाएं तथा उनकी शिक्षा श्री हेमाडपंत के शब्दों के बखान के द्वारा कल्पना की जा सकती है।

भगवान कौन है? क्या ईश्वर का कोई रूप होता है? क्या ईश्वर का अस्तित्व है? हमने ईश्वर को अपनी आँखों से कभी नहीं देखा। मनुष्यों को तो विश्वास के लिये प्रमाण चाहिए। और जिन्हें विश्वास है वे अपनी कल्पना से भगवान की एक छवि बना लेते हैं। हम पौराणिक कथाओं में भगवान को एक पात्र बना देते हैं या भगवान की पत्थर या काठ की मूर्ति बना देते हैं या फिर भगवान को हम प्रकृति के अनेकों रूप जैसे नदी, पर्वत, पेड़-पौधे, सूर्य के रूप में पूजते हैं या फिर भगवान को कई निराकार, निर्गुण भी मानते हैं। शिरडी ग्राम में एक फकीर रहने आए। वे कौन थे, कहाँ से आए थे इसकी किसी को जानकारी नहीं है। शिरडी वासियों को इस फकीर को साक्षात देखने का, उनके वचनों को सुनने का तथा उनके चमत्कारों के साक्षी बनने का शुभ अवसर मिला। हम इन चमत्कारों का तर्क या चेतना की दृष्टि से आंकलन नहीं कर सकते हैं। बाबा किसी व्यक्ति को मात्र देखकर उसका भूत, वर्तमान तथा भविष्य कैस बता देते थे? ये कैसे संभव है कि बाबा अपनी दया-कृपा से असाध्य रोग जैसे कि मिर्गी, टी.बी., प्लेग, मलेरिया ठीक कर देते थे? यह कैसे संभव है कि उनके आशीर्वाद से 27 वर्षों से एक स्त्री की सूनी गोद को मातृत्व का सुख मिल जाता था? इन सभी बाबा की शक्तियों के साक्षात्कार के बाद शिरडी ग्राम के अनुगृहित लोग अपने साई बाबा को ईश्वर मानने लगे। मनुष्यों को उनका प्रमाण मिल चुका था। इन घटनाओं के उपरांत साई के वचनों को परम सत्य माना गया। मनुष्य जो भगवान के रहस्य को समझने की कोशिश में लगा था, उनके लिये एक ऐसे संत का उदय हुआ जिसने पहले अपने चमत्कारों से अपने

ईश्वरीय तत्त्व का परिचय दिया एवं अपनी कीर्ति और मधुर कथाओं द्वारा ईश्वरीय शक्ति का परिचायक बन गया। धन्य हैं श्री हेमाडपंत, जिन्हें बाबा की कथाएँ, अनुभव तथा उनकी शिक्षा को श्री साई सच्चरित्र में लिखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यदि इस एक पुस्तक को तन्मयता से पढ़ा तथा अपनाया जाए तो हमें परम सत्य की झांकी मिलती है जिसे शब्दों से वर्णित नहीं किया जा सकता। ठीक वैसे ही जैसे प्रेम को परिभाषित नहीं किया जा सकता। बस उसकी अनुभूति की जा सकती है।

'अल्लाह मालिक' ये बाबा के दो शब्द श्री साई सच्चरित्र के सार हैं। अगर बाबा 'अल्लाह' को पुकारते हैं तो निश्चित ही अल्लाह का अस्तित्व कायम है। ब्रह्मण्ड की सभी शक्तियाँ एक ही सर्वोच्च उर्जा में समाहित हो जाती हैं। इसी सर्वोच्च ऊर्जा से सभी का उदय होता है तथा इसी में सभी समा जाते हैं। यही सर्वोच्च ऊर्जा 'ईश्वर' है। बाबा कहते हैं कि अल्लाह मालिक हैं जिसके हाथ में हम सभी कठपुतलियों की डोरियां है। अल्लाह मालिक है और हम सब उनके दास हैं। 'दास' शब्द में कई विशेषताएँ हैं। दास का अर्थ है कि हम संपूर्ण रूप से अपने मालिक के चरणों में समर्पित हैं। सर्वस्व शरणागति तभी संभव है जब अहंकार पूर्णत: नष्ट हो जाए।

अहंकार क्या है? अहंकार 'मैं' को दर्शाता है। 'मैं' मात्र एक अक्षर है जो अपने सिवा किसी अन्य को स्वीकार नहीं करता। उसका अस्तित्व अकेला है। वह स्वयं में ही रहता है। इसलिये यह 'मैं' केवल अपनी चिंता करता है, इसके पास किसी और के लिये जगह नहीं है। 'मैं' अपना ही तुष्टीकरण करता है, उसे किसी और की परवाह नहीं होती। यह 'मैं' अहंकार से परिपूर्ण हो कर सिर्फ अपने लिये सर्वश्रेष्ठ की कामना करता है तथा अपना पूरा जीवन अपने ही तुष्टिकरण में लगा देता है। अहंकार अपने को सफल करना चाहता है, असफलता से बचता रहता है। वह स्वयं के लिये धन, प्रतिष्ठा, यश, वंश तथा ज्ञान संचित करता है ताकि उसका अहंकार बना रहे। माया अहंकार को अपने घेरे में रखती है। संपत्ति से मोह, अपने प्रियजनों से मोह या अपनी प्रतिष्ठा से मोह अहंकार और माया के बीच के सम्बन्ध को प्रगाढ़ करता है।

अहंकार किसी के सामने झुकता नहीं है। अहंकार से अभिमान का उदय होता है। अभिमान अहंकार का हथियार है जो उसकी रक्षा करता है। लोहे के समान बलवान अभिमान झुकता नहीं है तथा अहंकार से अड़ा रहता है। परन्तु जब इस तरह का व्यक्तित्व दुःखों से घिरता है, जो अवश्यंभावी है, तब वह राहत के लिये तड़पने लगता है। किसी भी प्रकार की दुर्गति दुःखदायी होती है। यह दुर्गति की स्थिति ही है जो 'मैं' को अपने से परे देखने को मजबूर कर देती है। क्या कोई अन्य हमारी दुर्गति को कम कर सकता है? कदाचित स्वयं को किसी अन्य के साथ जोड़ने से हमारे दुःख क्षीण हो सकते हैं। परन्तु दो या दो से अधिक व्यक्तित्व दुःखों को क्षीण करने के लिये पर्याप्त नहीं होते। क्योंकि संयुक्त होने पर भी, 'मैं' से परिपूर्ण व्यक्तित्व एक नहीं हो पाते। उनमें दोहरापन रहता है, वे एकाकार नहीं हो पाते। उनका अभिमान, उनका अहंकार, उनका घमंड उन्हें अपने 'मैं' के पार उस सर्वशक्तिमान परब्रह्म के दर्शन नहीं होने देता। निरंतर दुर्गति का सामना करने के उपरांत हीं हम ईश्वर की प्रभुता को स्वीकार करते हैं और उनसे अनुरोध करते हैं कि वे सहायता प्रदान करें तथा हमारी माया की रक्षा करें। प्रार्थना भी लेन-देन के तर्ज पर होती है। 'मैं' उस सर्व शक्तिमान से स्वास्थ्य, धन, प्रसन्नता, सफलता, अपने और अपनों की कुशलता की कामना करता है। कामनाओं के पूर्ण होने पर, 'मैं' उस सर्वोच्च शक्ति को धन, स्वर्ण, ज़मीन आदि दान करने का वचन देता है। 'मैं' सदा प्रत्यनशील रहता है कि उसका अहंकार और अभिमान बना रहे। अहंकार का कारोबार अनन्त तक चलता रहता है।

अहंकार या 'मैं' का विपरीत है दासत्व। दास अपनी अहंकार की बेड़ी तोड़ कर स्वयं को सर्वोच्च शक्ति के श्री चरणों में समर्पित कर देता है। अहंकार विहीन होते ही सारी कामनाएं विलुप्त हो जाती हैं। 'मैं' अपने को बिना किसी शर्त के समर्पित कर देता है। दास यह विचार करता है कि मालिक का निर्णय शिरोधार्य है। दास अपने मालिक के शरणागति है। उसके लिये किसी लक्ष्य की प्राप्ति या इच्छाओं की पूर्ति की कामना शेष नहीं रहती। जब मालिक हमारी देखरेख कर रहे हैं तो हमें किस बात की चिन्ता? अब तो

दुर्गति का प्रश्न ही नहीं उठता। दास का अस्तित्व अपने कर्म का निर्वहन तथा अपने मालिक के प्रति भक्ति के लिये ही है। 'मैं' और 'सर्वोपरि' के बीच का अन्तर धुंधला होने लगता है। अब किसी प्रकार की उलझन या द्वंद्व नहीं रहता, केवल शांति और आनंद की प्राप्ति होती है। अंततः 'मैं' 'सर्वोपरि' में लीन हो जाता है।

'श्रद्धा-सबुरी', बाबा ने यह सीख दी कि इन दो गुणों को आत्मसात कर लेने से हम इस भव सागर को सरलता से पार कर सकते हैं। सबुरी हमें धैर्य और सहनशक्ति सिखाती है। बाबा कहा करते थे, धैर्य सदाचारों की खान है। श्री हेमाडपंत लिखते हैं कि वे भक्त जिन्होंने अहंकार त्याग कर स्वयं को साई-चरणों में अर्पित कर दिया हो, उनकी रक्षा स्वयं बाबा करते हैं। बाबा भक्तों से बीच की 'दीवार' हटाने को कहते थे ताकि दोनों के मिलने का पथ सुगम हो जाए। अहंकार और माया की दीवार नष्ट होते ही, मालिक और दास के बीच का भेद नहीं रहता। दुर्बल 'मैं', जो माया से घिरा हुआ इस संसार में अकेला ही विचर रहा था, उसे आत्मा और परमात्मा के मिलन से मुक्ति मिल जाती है।

बाबा पर विश्वास रखते हुए तथा निरंतर अहंकार को नष्ट करते हुए हमें अपने कर्मों का निर्वहन करना चाहिए जिससे हमें चिरस्थायी शांति एवं अमरत्व की प्राप्ति हो। बाबा तो स्वयं फकीर का जीवन व्यतीत करते थे परन्तु वे सदैव भक्तों को इस संसार के सदाचारों का पाठ पढ़ाते थे। श्री हेमाडपंत ने कई कथाओं का वर्णन किया है जिसके द्वारा बाबा ने भक्तों को क्षमा, दान, संतुष्टि तथा परोपकार का पाठ पढ़ाया। बाबा निंदा करने के विरोधी थे तथा लोगों को एक दूसरे के पीठ-पीछे निंदा के दुष्परिणाम से अवगत कराते थे। वे भक्तों को निंदा से बचने की सीख देते थे तथा अगर कोई निंदा करे तो प्रतिकार न करने को कहते थे। आलोचना सहन कर लेने से हम कई उलझनों में पड़ने से बच सकते हैं। वे सदा संतोष से जीवन व्यतीत करने को कहते तथा लोभ और दूसरे की धन-समृद्धि से ईर्ष्या न करने की सलाह देते थे। लालची व्यक्ति को जीवन में संतोष कभी नहीं हो

सकता क्योंकि लालच तो सुरसा के मुँह की तरह सिर्फ बढ़ता ही जाता है। बाबा का कथन था कि अगर कोई हमसे सहायता मांगे और हम देने में असमर्थ हों तो हमें नम्रता से इंकार कर देना चाहिए। हमें कटु वचनों से तिरस्कार नहीं करना चाहिये। बाबा अपने भक्तों को उपवास करने की अनुमति नहीं देते थे। श्री हेमाडपंत लिखते हैं कि अगर कोई उपवास करता है तो उसे भक्ति के लिये ऊर्जा कहाँ से आएगी? इसलिये हमें अपने खान-पान को नियंत्रित रखना चाहिए ताकि हमारा मन और शरीर दोनों ही स्वस्थ रहें। दयालु फकीर जो स्वयं भोजन बनाकर भक्तों की क्षुधा शांत करते थे, वे भला अपनी भक्ति के लिये लोगों को भूखा क्यों रखते? एक आज्ञाकारी बालक सदा ही अपनी माता पर विश्वास रखता है कि जो कुछ भी उसे माता प्रदान करेगी उससे उसका भला ही होगा। केवल जिद्दी प्रवृत्ति की संतान हीं हठवश उपवास करके तथा अपने को यातना दे कर माता से अपनी बात मनवाने की कोशिश करते हैं।

बाबा जो स्वयं ज्ञान के भंडार थे, उन्होंने ज्ञान की खोज करने वालों की सदा मदद की। ज्ञान की खोज में भक्त कई आध्यात्मिक तथा दार्शनिक पुस्तक लेकर बाबा के पास आते थे। बाबा उन्हें उस पुस्तक से ज्ञान अर्जित करने का सही मार्ग बताते थे। श्री हेमाडपंत ने श्री साई सच्चरित्र के अध्याय 39 में बाबा के द्वारा भगवत् गीता के चौथे अध्याय के 34वें छंद के विश्लेषण का बख़ान किया है। बाबा श्लोक का इतने विस्तार एवं गहनता से विश्लेषण करते हैं कि ऐसा प्रतीत होता है कि वे स्वयं ही संत ज्ञानेश्वर हों। बाबा भक्तों को दर्शनशास्त्र तथा आध्यात्म पढ़ने का प्रोत्साहन दिया करते थे। बाबा की प्रेरणा एवं आज्ञा से भक्तगण ज्ञानेश्वरी, भागवत, भावार्थ रामायण (जो श्री एकनाथ द्वारा रचित है) आदि ग्रंथों का पाठ तथा प्रवचन करते थे।

अध्याय 39 में श्री हेमाडपंत लिखते हैं कि ये उन दिनों की बात है जब मस्जिद में जनसैलाब नहीं उमड़ती थी तब बाबा व्यक्ति विशेष से अध्यात्म की चर्चा किया करते थे। एक बार इसी तरह के सत्संग में श्री नानासाहेब चंदोरकर को बाबा से भगवत् गीता के एक श्लोक का भावार्थ समझने का सौभाग्य प्राप्त

हुआ। श्री साई सच्चरित्र की कहानियों से हम ये निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि बाबा ने अपने अधिकांश जीवन काल में अपनी ख्याति दूर-दराज तक फैलने नहीं दी। उनके शिरडी में प्रवास का अधिकांश हिस्सा बहुत शांतिपूर्वक रहा। वह जीर्ण-शीर्ण मस्जिद में निवास करते, जो कुछ भोजन भिक्षा द्वारा मिलता, उसी से संतुष्ट रहते तथा शिरडी ग्राम के भक्तों से घिरे रहते।

शिरडी में पहली बार बाबा एक सोलह वर्षीय युवक के रूप में, नीम वृक्ष के नीचे ध्यान चिंतन करते हुए, लोगों के समक्ष प्रकट हुए। गाँव वालों को आश्चर्य हुआ कि यह युवक कौन है, कहाँ से आया है? इसके उपरान्त वे कुछ समय के लिये शिरडी से चले गए। शिरडी में उनकी वापसी चांद पाटिल नामक व्यक्ति के परिवार के साथ हुई। चाँद पाटिल की पत्नी के भतीजे की शादी शिरडी की एक लड़की से होनी थी। जब बैलगाड़ी से बाबा उतर रहे थे तो म्हालसापति ने उन्हें एकाएक ही 'आओ साई' करके सम्बोधित किया। और इस प्रकार बाबा साई के नाम से प्रचलित हो गए। परम भाग्यशाली थे श्री म्हालसापति एवं श्री तात्या कोटे पाटिल जिन्हें बाबा के सबसे घनिष्ट भक्त बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वे दोनों बाबा के साथ ही जीर्ण-शीर्ण मस्जिद में निवास करते और देर रात तक बाबा से चर्चाएं करते रहते। तात्या कोटे पाटिल बाबा को मामा कह कर सम्बोधित करते थे। श्री तात्या की माता, श्रीमती बायजाबाई, बाबा को भोजन खिलाने के लिए, उन्हें कई कोस जंगलों में ढूंढने जातीं। बायजाबाई के भाग्य की सराहना करने में शब्द कम पड़ जाते हैं जिन्होंने सम्पूर्ण ब्रह्मांड की मातृशक्ति पर माता का प्रेम न्योछावर किया। श्रीमती राधाकृष्णामाई भी अत्यन्त भाग्यशाली थीं जिन्होंने बाबा की देख-रेख की, उनके खाने-पीने की तथा मस्जिद के साफ-सफाई, रंग-रोगन की जिम्मेदारी निभाई। श्रीमती लक्ष्मी बाई भी बाबा के लिये नित्य रोटी और दूध लातीं। बाबा ने अपने शरीर त्यागने के कुछ ही क्षण पहले श्रीमती लक्ष्मी को नौ सिक्के दान दिये थे जो कि शास्त्रों के अनुसार नौ प्रकार की भक्ति का सूचक है। श्री हेमाडपंत लिखते हैं कि श्री शामा, जो गाँव के स्कूल मास्टर थे, वे बाबा के सबसे प्रिय भक्त थे। अगर किसी को बाबा के समक्ष आने की

अनुमति नहीं मिल पाती तो वे शामा के आग्रह से बाबा तक पहुँच पाते। श्री हेमाडपंत को बाबा की जीवनी लेखन की अनुमति भी शामा के द्वारा ही प्राप्त हुई थी। इस तरह शामा तथा अन्य भक्त- श्री बाला शिम्पी, नानासाहेब निमोणकर भी भक्तों की अनुशंसा बाबा से किया करते थे। बाबा के भक्तो में श्री भागोजी शिंदे, जो की कुष्ठ रोग से ग्रसित थे, का भी विशेष स्थान था। शिरडी ग्राम के भोले-भाले भक्तों ने अपने भगवान साई का अपने ग्राम में स्वागत किया, उनको पूजा, उनकी भक्ति की, अपरिमित प्रेम से कविताएँ और भक्ति संगीत रचे और इन्हीं भक्तों के समक्ष बाबा अपना नश्वर शरीर त्याग कर पुनः अनंत में विलीन हो गए।

बाबा की ख्याति, सन 1918 में उनके देह त्याग के पश्चात, उत्तरोतर बढ़ती जा रही है। ऐसा लगता है कि बाबा ने ख़ास तौर से ऐसे समय में मनुष्य अवतार धारण किया जब वे शिरडी जैसे छोटे ग्राम में, एक दीन फकीर का जीवन शांतिपूर्वक व्यतीत कर पाए और उनके इच्छानुसार, उनके नश्वर शरीर त्यागने के पश्चात हीं, उनकी ख्याति चहुँ-ओर फ़ैल रही है। परन्तु क्या कारण है कि बाबा के समाधि के 100 साल बाद भी उनकी भक्ति, कीर्ति एवं ख्याति दूर दूर तक फैलती जा रही है? इस प्रश्न का उत्तर कोई रहस्य नहीं बल्कि बाबा के सभी भक्तों के ह्रदय में सम्मिलित है। सत्य यह है कि बाबा अभी भी अपने भक्तों की फरियाद सुनते हैं। बाबा भक्तों की हार्दिक प्रार्थना को सुन कर उन्हें संतुष्ट करते हैं। साई वह ईश हैं जो इस धरती पर निवास करते हुए मानव मात्र के कल्याण में लगे रहे तथा भक्तों को दुःखों और दुर्भाग्य से मुक्ति दिलाई। साई वह ईश हैं जिन्होंने शिरडी के लोगों के साथ हँसते, बोलते, चलते, खेलते हुए जीवन व्यतीत किया। साई वह ईश हैं जिन्होंने सूर्य, चन्द्रमा और बादलों की तरह मनुष्यों का धर्म, जाति या लिंग के आधार पर भेद-भाव नहीं किया। उनका प्रेम सभी के लिये सामान्य था। साई की भक्ति में किसी प्रकार का आडंबर, अनुष्ठान या रस्म रिवाज का स्थान नहीं है। बाबा तो प्रेम की साक्षात मूर्ति हैं। बाबा का कोई ध्येय, कोई लक्ष्य नहीं था। उनके लिये भक्तों का आनंद, जो माया से ग्रस्त संसार में दुर्लभ है, ही सर्वोपरि

था। बाबा ने मनुष्य को अनासक्त हो कर, अपने कर्मों को निर्वहन करते हुए एक सार्थक जीवन व्यतीत करने की प्रेरणा दी। विरले ही होते हैं ऐसे संत जिनका मनुष्य-रुपी अवतार भक्तों के कल्याण मात्र के लिये होता है तथा जो हमेशा भक्तों की पुकार सुन लेते हैं। साई बाबा जीवन-मरण से परे हैं, वह सत् चित आनंद की मूर्ति हैं।

साइ बाबा की भक्ति श्री साई सच्चरित्र के पठन-पाठन तथा अनुपालन के बिना अधूरी है। बाबा की जीवनी ज्ञान का अक्षय भंडार है। श्री साई सच्चरित्र पढ़ने से आत्मा की शुद्धि होती है। अपवित्रता छन कर बाहर हो जाती है और पवित्रता उत्पन्न होती है। यह आवश्यक है कि भक्त अपनी निष्ठा में दृढ़ रहें। इस निष्ठायुक्त भक्ति से ही बाबा हमारी प्रार्थनाएं सुनते हैं, हमें आदेश देते हैं तथा सच्चाई के पथ पर अग्रसर होने की प्रेरणा देते हैं। इस बात को सत्यापित करने का सबसे आसान तरीका है श्री साई सच्चरित्र का पठन एवं उसमे दिये उपदेशों का पालन। यह आवश्यक है कि पाठक श्रद्धा व सबुरी में लीन हो जाए।

30 मई 2010 को मेरे माता-पिता तथा भाई प्रथम बार साई धाम पहुँचे । साई धाम के संस्थापक अध्यक्ष, डॉ.मोतीलाल गुप्ता ने श्री साई सच्चरित्र की चार प्रतियाँ, अपनी मोहर और हस्ताक्षर के साथ उन्हें भेंट कीं। मेरे परिवार के लिये यह सबसे बहुमूल्य क्षण था। डॉ. गुप्ता हमारे शिक्षक, हमारे मार्गदर्शक और हमारे गुरू बन गए। सच्चा ज्ञान बिना गुरू के मार्ग दर्शन के संभव नहीं है। हमारे गुरूजी ने हमें ज्ञान की कुँजी थमा दी जिससे हमें ज्ञान के पथ पर चलने की प्रेरणा मिल रही है। श्री साई सच्चरित्र अपनी मनोहर कथाओं द्वारा हमें जीवन की पाठशाला के पाठ पढ़ाती है। इसकी प्रविधि इतनी सरल है कि इसकी साधना किसी के लिये भी सम्भव है।

गुरू जी, जो आज साई बाबा के अत्यंत प्रिय भक्तों में से हैं, शामा या काकासाहेब दीक्षित की तरह हमें साई से जोड़ने की कड़ी बन गए। छोटे या महत्त्वपूर्ण मुद्दों में मार्गदर्शन एवं आशीर्वाद के लिये हम गुरू जी की शरण में चले जाते हैं। उनका आशीर्वाद हमें साई की कृपा के समतुल्य लगता है।

उनकी जीवनी श्री साई सच्चरित्र के उपदेशों को पूर्णतः चरितार्थ करती है। गुरू जी ने अपने सदगुरू के संदेशों को फैलाने में अपने जीवन को ढाल दिया है। गुरु जी द्वारा निर्मित संस्थान सद्गुणों से संचालित है। साई धाम आलौकिक व सकारात्मक ऊर्जा से ओत-प्रोत है। जो भी साई धाम जाता है उससे इस ऊर्जा की अनुभूति होती है।

गुरू जी ने हमें सिखाया है कि सेवा करने वाला तथा सेवा लेने वाला, दोनों ही लाभान्वित होते हैं। सेवा लेने वाले को तो राहत मिलती ही है, सेवा करने वाले की भी आत्मा की शुद्धि होती है। पर सेवा ऐसी हो जो प्रेम भाव से युक्त हो। हम गुरू जी की सेवा में सबके प्रति प्रेम भाव के साक्षी हैं। सेवा में इस बात का अहंकार न हो कि देने वाले का हाथ ऊपर है और लेने वाले का हाथ नीचे। क्योंकि प्रेम भाव तो ऊँच-नीच के भाव से रहित होता है। गुरू जी अपनी सेवा से आसक्ति नहीं रखते तथा उनमें अहंकार का लेश-मात्र नहीं दिखता। वे अपने कर्म को साई बाबा के चरणों में समर्पित कर देते हैं। डॉ. मोतीलाल गुप्ता के परोपकार की यही उच्च विशेषता है।

परोपकार का अर्थ बदल जाएगा अगर उसमें अहंकार आ जाए। यह तो संयोग या भाग्य की बात है कि दानदाता को ईश्वर ने यह अवसर प्रदान किया है। भाग्य का कोई भरोसा नहीं होता। हो सकता है भविष्य में दानदाता को ही याचक बनना पड़े। अतः हमें दान देते समय यह भाव मन में रखना है कि जो मैं दे रहा हूँ, वह मेरा नहीं है। मुझे प्रकृति ने अपने विशाल भंडार का संरक्षक बनाया है और मैं धन्य हूँ कि मुझे यह दान देने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। दान का यही गूढ सार है। किसी की सहायता करना परन्तु उससे वापसी की अपेक्षा नहीं करना, नेकी को परम धर्म मानना, एक दूसरे से प्रेम भाव रखना ही परोपकार है।

डॉ.मोतीलाल गुप्ता की जीवनी तथा साई धाम की यात्रा हमें सिखाती है कि हमें नैतिक शिक्षा को जीवन में कैसे चरितार्थ करना है। सभी पाठकगणों में अपने-अपने स्तर पर परोपकार करने की क्षमता अवश्य होगी। यदि हम

निजी स्तर पर परोपकार नहीं कर पाते हैं तो हम साई धाम जैसे संस्थानों से जुड़ सकते हैं। यह आवश्यक नहीं कि हम आर्थिक योगदान दें। हम अपने हुनर या स्वैच्छिक सेवा से अथवा भावनात्मक जुड़ाव से भी स्वयंसेवी संस्थानों की मदद कर सकते हैं। दयालु फकीर साई बाबा उन मनुष्यों को बल देते हैं जो धर्म की राह पर चलना चाहते हैं। बाबा के चरणों में सम्पूर्ण शरणागति ही इस भवसागर को पार करने में सहायक है। अपने कर्मों को बाबा के चरण-कमल में समर्पित करते ही हम भयमुक्त हो जाते हैं और समस्त संसार साईमय हो जाता है।

मैंने बाबा का एक चित्र देखा जिसमें एक बालक बाबा की गोद में विश्राम मुद्रा में है। मैं अपने आप को उसी बालक के रूप में देखती हूँ। मेरे बाबा, जो प्रेम की मूर्ति हैं, जिनकी उंगली पकड़ कर मैं इस विस्मयकारी संसार में पग धरती हूँ, जिनकी गोद में विश्राम करती हूँ, जो मेरे आनंद का कारण हैं, जिनकी लीलाओं का मैं उत्सव मनाती हूँ - जैसा कि एक सूफी संत ने गाया है-

'ना तेरा जेया होर दिसदा'

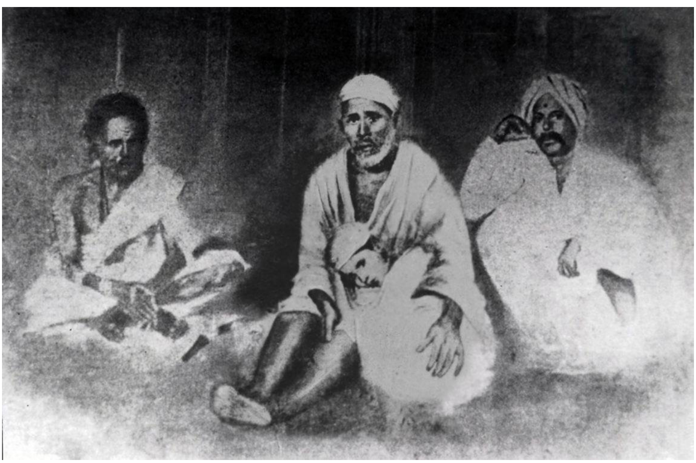

आभास्वीकृति

मैं अपनी हार्दिक कृतज्ञता उन लोगों के प्रति प्रकट करती हूँ जिन लोगों ने इस वृहद परियोजना को पूर्ण करने में मेरी सहायता की तथा मार्गदर्शन दिया। मैं उन सभी लोगों को उनके बहुमूल्य योगदान के लिये धन्यवाद देती हूँ।

- गुप्ता परिवार जिनके आतिथ्य एवं सहयोग के लिये मैं आभारी हूँ।
- प्रोफेसर कुमार रवि प्रिय, आई.आई.टी कानपुर, जिन्होंने वैज्ञानिक तरीके से अनुसंधान की पद्धति सिखायी। प्रोफेसर कुमार अपने छात्रों को विनम्रता का प्रथम पाठ सिखाते हैं।
- प्रोफसर अनोल भट्टाचारजी, यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ फ्लोरिडॉ, अमेरिका, ने प्रथमतः अनुसंधान की राह दिखाई। मैं उनकी अभारी हूँ जिन्होंने उलझनों से निकाल कर मेरा मार्गदर्शन किया।
- श्री विजय राघवन जिन्होंने अपने अनुभव साझा किये तथा श्री बी.वी. नरसिम्हा स्वामी (जो एक परम साई-भक्त थे) के योगदान के बारे में जानकारी दी। उनकी पुस्तक मुझे पढ़ने के लिये दीं।
- श्री एस. के. घई जिन्होंने किताब के प्रकाशन के बारे में जानकारी दी।
- श्री संजीव सरीन, जिन्होंने किताब का सम्पादन किया, उनकी विशेषज्ञता भरी टिप्पणियां तथा मार्गदर्शन के लिये मैं आभारी हूँ।
- श्री अनिल थापर, उद्योगपति तथा समाज सेवी जिन्होंने साईधाम के परोपकरी कार्यों की पुष्टि की।
- श्री सिया शत्रुघ्न कुमार तथा श्री भोला प्रसाद साह जिनसे मैंने जीवनी के विषय में साक्षात्कार लेने की प्रक्रिया का प्रारम्भ किया। मैं उनको उनके

सहयोग के लिये धन्यवाद देती हूँ तथा सिया भैया को उनके आलू के पराठों के लिये विशेष धन्यवाद देती हूँ।

- डॉ.अश्वनी प्रुथी तथा डॉ.सुजाता चड्ढॉ प्रुथी जिन्होंने मुझे प्रेम युक्त आतिथ्य तथा निःशुल्क उत्तम दन्त चिकित्सा प्रदान की।
- श्री ए.के.पिल्लैय जिन्होंने साई धाम के शुरूआती दिनों से अब तक की महत्त्वपूर्ण जानकारी दी तथा अपनी साई-भक्ति के मधुर अनुभव साझा किये।
- श्री विकास मल्होत्रा जिन्होंने हमेशा मेरे फ़ोन का त्वरित जवाब दिया तथा मदद के लिये सदा तत्पर रहे। उन्होंने जीवनी को कई बार पढ़ कर उसे त्रुटि-मुक्त करने में मदद की।
- श्रीमती बीनू शर्मा, प्रिंसिपल, शिरडी साई बाबा स्कूल जिन्होंने अपनी व्यस्त दिनचर्या से समय निकाल कर अपने अनुभव साझा किये।
- श्रीमती आभा मित्तल तथा श्री डी.सी. मित्तल जिनके ड्राइंग रूम में बैठ कर हमने साई धाम के प्रारंभिक दिनों की चर्चाएं की तथा साई-भक्ति की अनेक सुन्दर कहानियों की चर्चा की।
- श्री एस.के. माथुर जिन्होंने अपने अनुभव साझा किया।
- श्रीमती अनीता देवी जिन्होंने हमें साई धाम में स्वादिष्ट भोजन कराया।
- श्री राहुल तथा श्री परमिंदर, शिरडी साई बाबा स्कूल के पूर्व विद्यार्थी जिन्होंने अपने अनुभव साझा किये।
- श्री दिलीप सिंघल जो साई धाम से काफी समय से जुड़े हैं तथा फ़ोन पर मुझे साई भजन सुनाया।
- डॉ.भुवनेश चन्द्र गुप्ता, डॉयरेक्टर, फरीदाबाद डॉयग्नोस्टिक सेंटर जो स्वयं को डॉ.मोतीलाल गुप्ता के अनुज की तरह मानते हैं। उनके

विस्तार तथा सुन्दर शब्दों से सुसज्जित इ-मेल ने साई धाम के सार को बतलाया।

- श्री एस.के. हान्डू जो पिछले 25 वर्षों से साई धाम से जुड़े हैं। उन्होंने 2019 में आयोजित वार्षिक उत्सव पर विस्तार से प्रकाश डाला।
- श्रीमती मोनिका कुमार, श्री पवन गुप्ता, श्रीमती कोमल सिंह जिन्होंने डॉ. गुप्ता के विषय में अपने लेख भेजे।

मैं अपने पिता श्री अभय शेखर प्रसाद, माता श्रीमती नीरजा प्रसाद तथा भ्राता नवेश कुमार सहित उन सबको धन्यवाद देती हूँ जिन्होंने गुरूजी के जीवन-चरित्र की रचना में सहायता पहुँचाई। गुरू जी मेरे समस्त परिवार के लिये अति पूजनीय है। मेरे पति नवरोज़ ने मेरे लेखन में हर पल साथ निभाया। हमें आभास होता है कि हमें साई भगवान ने पूर्ण रूप से आशीर्वाद दिया है।

धन्यवाद ज्ञापन

यह मेरा परम सौभाग्य है कि साई बाबा ने मुझे डॉ.मोतीलाल गुप्ता जी सरीखे संत के जीवन-चरित्र का अंग्रेज़ी से हिंदी में अनुवाद करने की सेवा का अवसर प्रदान कर आशीर्वादित किया है।

मैं गुरु चरणों में अपनी कृतज्ञता अर्पित करती हूँ।

ऊँ साई राम

—डॉ. नीरजा प्रसाद

साईधाम की सफलता की कुछ कहानियाँ

सी.बी.एस.ई. दसवीं बोर्ड 2020 की परीक्षा में 100 प्रतिशत सफल रिजल्ट

2020 के सी.बी.एस.ई. बोर्ड की दसवीं की परीक्षा में शिरडी साई बाबा स्कूल के बच्चों का उत्कृष्ट प्रदर्शन रहा। पूर्व वर्ष की तरह इस बार भी रिजल्ट शत प्रतिशत रहा। कुल 61 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी जिसमें 7 विद्यार्थियों को 80 प्रतिशत से ज्यादा अंक आये। 31 बच्चों ने 60 प्रतिशत से अधिक अंक लाये। स्कूल का टॉपर रहा यश जिसे कुल 90.6 अंक हासिल हुए। गौरव मट्टा को 89.2 प्रतिशत से द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ। नंदनी नामक छात्रा ने 85.2 प्रतिशत के साथ तीसरा स्थान प्राप्त किया। विषयों के अनुसार गौरव मट्टा गणित में 97 प्रतिशत अंक ला कर टॉपर बने। यश 95 प्रतिशत के साथ सोशल साईंस में तथा नंदनी 99 प्रतिशत के साथ हिंदी में और रोहित 95 प्रतिशत के साथ कम्प्यूटर के विषय के टॉपर बने। स्कूल के टॉपर के पिता दैनिक मजदूर हैं तथा नंदनी की माता लोगों के घरों में कामकाज करने वाली एकल महिला हैं। यह ध्यान देने योग्य बात है कि सभी विद्यार्थी ऐसे परिवारों से हैं जहाँ दो वक्त की रोटी भी मुश्किल से मिलती है। ऐसी परिस्थिति में उन परिवारों को अपने बच्चों के लिए अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा उपलब्ध करना तो एक सपना ही है। और यह सपना साकार करा रहा है साई धाम। डॉ. मोतिलाल गुप्ता का नेतृत्व, शिक्षिकाओं का मार्गदर्शन तथा विद्यार्थियों की कड़ी मेहनत ने इन बच्चों को हीरे की तरह तराशा है जो अब तक कहीं विलुप्त थे।

ये हैं साई धाम के सितारे

दीपा के पिता सब्जी विक्रेता हैं तथा माता लोगों के घरों में काम करके अपनी रोज़ी रोटी कमाती हैं। वर्ष 2017 में दीपा ने शिरडी साई बाबा स्कूल की आठवीं की परीक्षा में 90 प्रतिशत अंक ला कर अपने माता पिता का नाम रौशन किया। दीपा 76 प्रतिशत अंक के साथ दसवीं में तथा 70 प्रतिशत अंक के साथ बारहवीं में उत्तीर्ण हुई। डॉ. मोतीलाल गुप्ता की आग्रह पर साई धाम से जुड़े एक परोपकारी स्वयं सेवक, श्री सतीश आहूजा तथा डीएवी सेनटेनेरी कॉलेज, एन.आई.टी, फरीदाबाद के डायरेक्टर ने दीपा के कॉलेज की पढ़ाई में होने वाले खर्च को माफ़ करते हुए उसे अपने कॉलेज से बी.टी.टी.एम. (बैचलर ऑफ ट्रेवेल एवं टूरिज्म) की पढ़ाई करने का मौका दिया। कॉलेज में अच्छे प्रदर्शन की वजह से उसे पूर्ण विश्वास है कि वह प्लेसमेंट में सर्वश्रेष्ठ नौकरी हासिल करने में सफल रहेगी। अपने माता-पिता के लिए एक अच्छा फ्लैट खरीदने का सपना दीपा पूरा कर पाएगी। दीपा ने गरीबी के अंधकार को शिक्षा के दीप से मिटाने की ठान ली है।

सपना के पिता एक ड्राईवर हैं। सपना ने शिरडी साई बाबा स्कूल की आठवीं की परीक्षा में 82 प्रतिशत अंक प्राप्त कर उत्तीर्ण हुई। साई धाम की आग्रह पर डी.सी.मॉडल सीनियर सेकेंडरी स्कूल ने उसे बारहवीं तक की निःशुल्क शिक्षा मुहैया कराई। सपना को बारहवीं की बोर्ड परीक्षा में 80 प्रतिशत अंक मिले। उसका चयन मानव रचना यूनिवर्सिटी के बैचलर ऑफ फिजीयोथैरपी प्रोग्राम में हो गया। डॉ.मोतीलाल गुप्ता के प्रयास से मानव रचना यूनिवर्सिटी ने वार्षिक फीस से 80,000 रूपये माफ कर दिए। साई धाम से जुड़े श्री प्रेमचन्द अमर तथा श्रीमती अनीता अमर ने मानवता को धर्म मानते हुए एक लाख रूपये प्रति वर्ष के कॉलेज खर्च को वहन करने का निर्णय लिया। आज सपना का एक कामयाब फिजीयोथेरपिस्ट बनने का सपना साकार हो रहा है। वह अपने छोटी बहन को डॉक्टर बनाने की इच्छा रखती है।

चारू का परिवार फरीदाबाद की झुग्गियों में रह कर अपना गुज़ारा करता है। 2006 में जब उसे शिरडी साई बाबा स्कूल के बारे में जानकारी मिली तब उसने पढाई करने की इच्छा जाहिर की। उसके पिता ने अपने तीनों बच्चों का दाख़िला शिरडी साई बाबा स्कूल में करवा दिया। बस फिर क्या था, उसके बाद चारु ने पीछे मुड़कर कभी नहीं देखा। उसके रिश्तेदारों ने उसके विवाह के लिए दबाव बनाया परन्तु उसने अपने सपनों को उड़ान दिया और साई धाम के प्रोत्साहन से जी.एन.एम.(जेनेरल नर्सिंग एण्ड मिडवाइफरी) की पढाई बैंगलोर से पूरी की। आज वो फोर्टिस अस्पताल फरीदाबाद में कार्यरत है। चारु की सफलता की चांदनी से साई धाम तथा उसके परिवार का नाम रौशन हुआ है। उसकी सफलता की कहानी उसकी बस्ती में रहने वाली लड़कियों के लिए प्रेरणा बन गयी है।

जय प्रकाश तोमर 12 साल की छोटी उम्र में अनाथ होने के बावजूद भारतीय सेना में अपनी सेवा देने की चाहत रखता था। अपनी दादी माँ के प्रयास से उसने शिरडी साई बाबा स्कूल में दाखिला लिया जहाँ से उसके सपनों को उड़ान मिली। 2012 में स्कूल से पास करने के बाद उसने साई धाम की मदद से नेहरू कॉलेज से बी.कॉम की पढाई पूरी की। 2019 में उसने भारतीय सेना के क्लर्क वर्ग की प्रवेश परीक्षा में सफलता पायी तथा उसे 50000 रूपये की नौकरी मिल गयी। आज वह अनेकों बच्चों के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। यह ऐसा कह लें कि जय उन सभी बच्चों का हीरो है जो देश की सेवा करना चाहते हैं। जय ने विजयी हो कर यह साबित कर दिया है कि गरीबी से लड़ने के लिए शिक्षा एक कारगर हथियार है।

ट्विंकल अपने घर की गरीबी तथा अपनी अस्वस्थता से ग्रसित रहती थी। लकवाग्रस्त होने की वजह से वह अपने भविष्य को लेकर अति निराशाजनक स्थिति में थी। तब उसने साई धाम के ब्यूटी एण्ड वैलनेस सेन्टर से प्रशिक्षण लिया। यहाँ से उसके जीवन में आमूल चूल बदलाव आया। अब उसने फरीदाबाद की महिलाओं को घर पर ही ब्यूटी पार्लर की सुविधाएँ देने का व्यवसाय शुरू किया है। आज उसकी मासिक आय लगभग 9000 रूपये

है। उसके ग्राहक कहते हैं कि वह विवाह हेतु दुल्हन का मेक-अप बड़े सैलूनों से भी बढ़िया कर लेती है। ट्विंकल की प्रतिभा चमक रही है एवं वो अपनी कमाई से अपने परिवार की भी सहायता कर रही है।

हरकेश अपने परिवार का सबसे वरिष्ठ सदस्य है जिसके ऊपर बहुत सारी जिम्मेदारियाँ हैं। अच्छी नौकरी पाने में असफल होने पर वह काफी हतोत्साहित हो गया। वह शर्मीले स्वाभाव का लड़का था जिसके कारण कई नौकरियों के साक्षात्कार में उसके आवेदन को अस्वीकार किया गया। साई धाम के कम्प्यूटर ट्रेनिंग सेंटर से प्रशिक्षण लेने के बाद उसके आत्मविश्वास को बल मिला। अपनी कक्षा के छात्रों से घुलने-मिलने तथा साई धाम के अन्य गतिविधियों में शामिल होने से उसकी लोगों से बातचीत करने की भी कुशलता बढ़ी। उसे विज़न इंडिया प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली नामक कंपनी में 25000 रूपये के मासिक वेतन पर नौकरी मिल गई। आज हरकेश एक आत्मविश्वास से भरा हुआ युवक है जो अपने छोटे भाई बहनों की पढ़ाई का खर्च वहन कर पा रहा है।

अंजलि की माँ लोगों के घरों में काम करके अपने बच्चों का पेट पालती थीं। अपनी परस्थितियों से मजबूर होने के बावजूद उसकी माँ की तो बस यही इच्छा थी की उसकी बेटी अपनी माँ की तरह एक मजदूर न बने बल्कि पढ़ लिख कर एक पेशेवर महिला बने। और साई धाम उस मजबूर माँ के सपने को साकार करने का माध्यम बन गया। शिरडी साई बाबा स्कूल की अव्वल छात्रा बन गई अपनी माँ की प्यारी बेटी अंजलि। आज वह जे.सी.बोस यूनिवर्सिटी (वाई.एम.सी.ए) से गणित विषय के साथ साइंस में ग्रेजुएशन कर रही है। साई धाम धन्यवाद देता है श्री डी.एन.कठूरिया का जिन्होंने उसके कॉलेज के फीस देने की ज़िम्मेदारी उठाई। कनाडा के रहने वाले अनन्य साई-भक्त, श्री रवींद्र थोटा अंजलि की उपलब्धियों से इतने प्रभावित हुए कि उन्होंने उसे स्कूटी तथा लैपटॉप उपहार में दिया ताकि वह तेज़ रफ़्तार से अपने सपनों को साकार कर सके। अंजलि गणित की प्रोफेसर बनना चाहती है। आज उसकी माँ के ह्रदय का आनंद अतुलनीय है।

साई धाम आग्रह करता है उन सभी को जो इन मेधावी छात्र-छात्राओं की प्रतिभा को संवारने में योगदान देना चाहते हैं कि वे समाज में सेवा तथा मानवता की मिसाल पेश करें तथा इन छात्र-छात्राओं की कॉलेज की पढाई का खर्च वहन करने में सहायता करें।

वस्त्र वितरण

आज हमारे देश में करीब 60 से 70 प्रतिशत ऐसे लोग हैं जिन्हें अपना तन ढकने के लिए उपयुक्त वस्त्र नहीं हैं। सुदूर ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले गरीब, वंचित एवं आदिवासी समाज के नागरिक फटे पुराने कपड़ों से अपना गुज़ारा करते हैं। पैरों में न चप्पल, ना हीं छोटे बच्चे तथा शिशुओं के लिए पर्याप्त कपड़े, इस निर्धनता से जूझते हुए लोगों में एक उम्मीद की किरण जगाने की कोशिश की है डॉ. मोतीलाल गुप्ता ने।

2017 से साई धाम शहर के समृद्ध लोगों से ये गुज़ारिश कर रहा है कि वे अपने पहनने योग्य पुराने कपड़े, चादर, कम्बल, जूते, चप्पल, खिलौने इत्यादि साई धाम को दान करें। यहाँ इन कपड़ों की धुलाई, मरम्मत करके उन्हें बोरियों में भर कर ट्रक के द्वारा दूर दराज के ग्रामीण इलाकों में भेजा जाता है। वहां साई धाम से जुड़ी स्वयं सेवी संस्थानों की सहायता से इन वस्त्र इत्यादि को ज़रूरतमंदों में वितरित किया जाता है।

यही नहीं, बल्कि सूती के उन कपड़ों को छांट कर अलग कर लिया जाता है जो पहनने योग्य नहीं हैं तथा उनसे सैनिटरी नैपकिन बनाया जाता है। इन सैनिटरी नैपकिन के पैकटों को भी अन्य वस्तुओं के साथ गरीब महिलाओं के बीच वितरित किया जाता है।

अक्टूबर 2020 तक 20 ट्रक कपड़े तथा अन्य वस्तुओं को हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, झारखण्ड, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र के ग्रामीण इलाकों में भेजा जा चुका है और अब तक 150000 से भी ज़्यादा लोग इस प्रोग्राम से लाभान्वित हो पाए हैं।

साई धाम आप सभी से ये निवेदन करता है कि मानवता की सेवा में साई धाम की सहायता करें तथा घरों की उपयोग में होने लायक पुरानी वस्तुओं को साई धाम को दान करने की कृपा करें। अन्य जानकारी www.saidham.in से प्राप्त की जा सकती है।

कोविड के दौरान राहत कार्य

कोविड 19 की विश्वव्यापी महामारी ने सम्पूर्ण मानव जाति को भयभीत कर दिया है। मार्च 2020 से घोषित लॉक डाउन ने सभी भारतीयों को प्रभावित किया है। परन्तु समाज के गरीब-वंचित वर्ग को भारी नुकसान का सामना करना पड़ रहा है। दैनिक वेतन पर जीने वाले तथा प्रवासी मजदूरों की रोजी-रोटी छिन गयी। फैक्ट्रीयाँ बंद हो गयी, यातायात के साधन रोक दिए गये और गरीब परिवार भुखमरी के कगार पर पहुँच गये। साई धाम ने अपनी मानवता के प्रति सेवा का परिचय देते हुये 28 मार्च से 3000 से भी अधिक प्रवासी मजदूरों तथा उनके परिजनों को ताजा, पौष्टिक भोजन मुहैया कराया। यह कार्यक्रम लोकडाउन समाप्त होने तक चलता रहा।

साई धाम में सिलाई की तकनीकि प्रशिक्षण लेने वाली महिलाऐं तीन तह वाले मास्क तैयार कर रही हैं जिसकी एवज में साई धाम उन्हें उचित मेहनताना दे रहा है। इन प्रशिक्षुक महिलाओं को इस कार्य के द्वारा ऐसे वक्त पर रोज़गार का अवसर मिला है जब उनके परिवारों के अन्य सदस्यों की आजीविका छिन गई है। इन मास्कों को प्रवासी मजदूरों में भोजन के साथ निःशुल्क वितरित किया गया। म्युनिसिपेलिटी कर्मचारियों, सफाई कर्मचारियों, चौकीदारों तथा पुलिस कर्मियों में भी मास्क वितरित किए गए हैं।

महामारी की शुरूआती दिनों में ही आने वाली स्थिति को भांपते हुए डॉ. मोतीलाल गुप्ता ने 2160 इंफ्रारेड थर्मामीटर का इंतज़ाम किया तथा इन्हें निःशुल्क स्कूल के बच्चों के अभिभावकों, पुलिस ऑफिसों तथा म्युनिसिपेलिटी के ऑफिसों में वितरण किया वो भी ऐसे वक्त पर जब बाजार में इंफ्रारेड थर्मामीटर की भारी कमी हो गई थी।

इस महामारी के दौरान साई धाम होमियोपैथिक दवा के 3000 पैकेट प्रतिदिन बना कर वितरण कर रहा है जो इस बीमारी से शरीर को बचाने में

बहुत कारगर है। इन दवाओं का वितरण दूर-दराज के क्षेत्रों में भी किया गया है। यह दवा सभी को निःशुल्क उपलब्ध कराई गई है। खास कर फैक्ट्री में काम करने वाले कामगारों के बीच तथा दैनिक वेतन कमाने वालों को यह दवा उपलब्ध कराई गई है।

शिरडी साई बाबा स्कूल (साई धाम) कटिबद्ध है अपने विद्यार्थियों को वो सभी साधन उपलब्ध कराने में जो समृद्ध विद्यालयों में छात्रों को मिलती है। डॉ.गुप्ता की इच्छा थी कि अन्य विद्यार्थियों की तरह उनके स्कूल के बच्चे भी अपनी पढाई ऑनलाइन जारी रख पाएं। चूँकि ये विद्यार्थी गरीब-वंचित वर्ग के हैं इसलिए विद्यार्थियों को स्मार्ट फ़ोन मुहैया कराए गए हैं और साथ में तीन महीने का प्री-पेड सिम भी दी गई है ताकि उन्हें इन्टरनेट की भी सुविधा मिल सके और वे अपनी पढ़ाई बिना किसी बाधा के ऑनलाइन जारी रख सकें।

PHOTO GALLERY

सजीले युवा डॉ. मोतीलाल, 14 जनवरी, 1954 की ली गई तस्वीर

बनारस में नौका विहार

बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय में सहपाठियों के साथ
(बायें से दूसरी खड़ी पंक्ति में)

लाल बहादुर शास्त्री जी के साथ (शास्त्री जी के पीछे खड़े हुए)

नव दम्पति - सुखमय जीवन की ओर

श्री मोतीलाल गुप्ता एवं श्रीमती कान्ता गुप्ता, कश्मीर में ली गई तस्वीर

अपने बच्चों के साथ (बायें से दाहिनें - मंजरी, संदीप,
श्री एवं श्रीमती गुप्ता, पूनम, ममता)

लंदन में दोस्तों के साथ

होमियोपैथिक डिस्पेंसरी और साई धाम
का प्रारम्भिक समय का कार्यालय

शिरडी साई बाबा का साई धाम में निर्माणाधीन मंदिर

शिरडी साई भक्तों का अक्टूबर 1997 में अंतर्राष्ट्रीय सम्मलेन

बाबा की मूर्ती का अनावरण
श्रीमती मरीन वारेन द्वारा बाबा की पूजा अर्चना

वंचित वर्ग के बच्चों में स्कूल बैग एवं पाठन सामग्री का वितरण

शिरडी साई बाबा स्कूल, फ़रीदाबाद में स्वतंत्रता दिवस समारोह

His Excellency Dr. A. R. Kidwai, Hon'ble Governor of Haryana
Laying Foundation Stone of 'Shirdi Sai Baba School' on 12th December, 2004

शिरडी साई बाबा स्कूल का दिसंबर 2004 में शिलान्यास

स्वस्थ शरीर, स्वस्थ मन

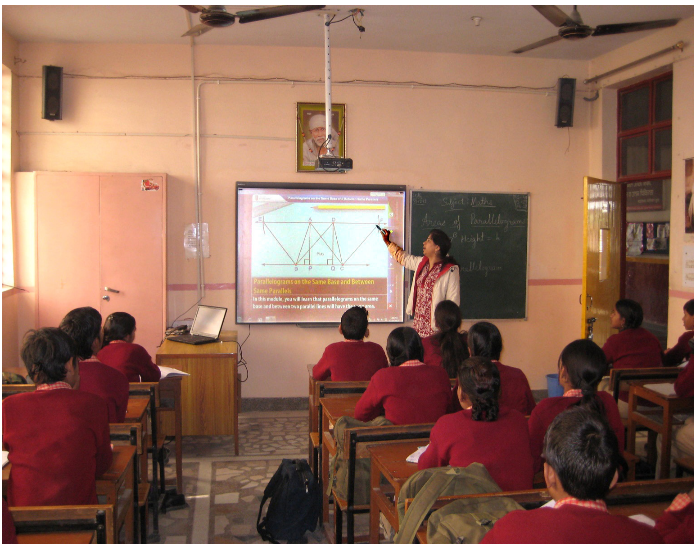

स्मार्ट क्लास

स्कूल का वार्षिकोत्सव समारोह

खेल कूद की सुविधा

बिल्डिंग किड्ज़ द्वारा प्रायोजित किंडर गार्डन कक्षा

साई धाम के तकनीकि प्रशिक्षण केंद्र का
श्रीमती शबाना आज़मी द्वारा अवलोकन

साई धाम का कंप्यूटर ट्रेनिंग सेंटर

सामूहिक विवाह समारोह में वर-वधुओं के साथ

चिकित्सा की सुविधाएं

शिरडी साई बाबा स्कूल, निसवारा, उत्तर प्रदेश

निसवारा गांव के बच्चे - 'मेरा होगा सपना सच्चा,
पढ़ेगा भारत का प्रत्येक बच्चा' - डॉ.मोतीलाल गुप्ता

निसवारा के स्कूल परिसर में वृक्षारोपण

झारखण्ड में वस्त्र वितरण

कोविड लॉक डाउन में प्रवासी मजदूरों में ताजा,
पौष्टिक भोजन के पैकेट का वितरण

कोविड काल में शिरडी साई बाबा स्कूल के बच्चों में
ऑनलाइन क्लास हेतु स्मार्ट फ़ोन वितरण

साई धाम में बनाए हुए मास्क का लोगों में वितरण

वाई.एस.विश्वविद्यालय, फ्लोरिडा द्वारा श्री मोतीलाल गुप्ता को पी.एच.डी की मानद उपाधि, साथ में श्रीमती कान्ता गुप्ता

दो दूरदर्शी व्यक्तित्व